चंद की स्त्री का उसे कहना कि अंग अंग में हरि रूप रस वर्णन कर दिखाओ ॥

दूहा ॥ अंग अंग हरि रूप रस। विविधि विवेक वरेन ॥
मुकुति समप्पन कंत रस। जुग तिनि जोग सरेन ॥ छं० ॥ ७८२ ॥ रू० ॥ ४१२ ॥

चंद का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन मैं वर्णन कर दिखाता हूं ॥

दूहा ॥ कह्यौ भांमि सौं कंत इम। जो पूछै तत मोहि ॥
कान धरौ रसना सरस। ब्रन्नि दिषाऊं तोहि ॥ छं० ॥ ७८३ ॥ रू० ॥ ४१३ ॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराज रासके आदि पर्व नाम प्रथम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥

४१२ पाठान्तर—बिविध। वरवं। मुगति। जुंग। जौग। सरव ॥
४१३ पाठान्तर—भांमिन। सा। जा। पुछइ। पुछै। कांन। दिषांऊं तोहि ॥

उपसंहारिणी टिप्पण ॥

यद्यपि इस महाकाव्य के महाकवि चंद बरदाई ने इस आदि पर्व्व का उपसंहार अपनी
निज काव्य-रचन-शैली के अनुसार ३९५ रूपक से लेकर ४१३ तक में बड़े गूढार्थ के साथ वर्णन
कर दिया है परन्तु यह भी उचित और अत्यावश्यक है कि हम भी अपनी शैली के अनुसार
अपनी टिप्पणों के उपसंहारार्थ कुछ थोड़ा सा अपने पाठकों की सेवा में सविनय निवेदन करैं कि
जिससे सर्व साधारण को हिन्दी भाषा के इस महाकाव्य का कुछ स्वरूप-ज्ञान हो ॥

ग्रन्थ-संज्ञा

इस महाकाव्य का नाम **पृथ्वीराजरासो** है और यह दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात्
पृथ्वीराज और **रासो**। इस संज्ञा का अर्थ यह होता है कि "पृथ्वीराज को रासो" ग्रंथकर्त्ता ने
पृथ्वीराज नामक संज्ञा से, हमारे उन पृथ्वीराजजी चौहान को अपने इस महाकाव्य का नायक
वर्णन किया है, कि जो विक्रम के बारहवें शतक में हमारे स्वदेशी अंतिम राजरा-
जेश्वर अर्थात् बादशाह हुए हैं, कि जिनकी सूरवीरता का अभिमान आज
तक प्रत्येक आर्य को है और जिनके नाम का ओठा रात्रिदिन की बोल चाल में हमारे देश के
सर्व साधारण किया करते हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि वे एक कैसे बड़े कट्टर आर्य
और सूरवीर राजा हुए हैं, कि जिन्होंने सुलतान शहाबुद्दीन गोरी को कई बेर घोर युद्ध कर कर
के पराजित किया था परंतु होनहार परम बलवान होती है कि जिससे अचिंतित घटना भी
झट उपस्थित हो जाती है। देखो ईश्वरही की इच्छा हिन्दुओं की बादशाहत स्थिर रखने की
न थी, कि दैवयोग से पृथ्वीराजजी चौहान जैसे सूरवीर राजा, सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के
हाथ से, अपनी अंतिम लड़ाई में, अंत को प्राप्त हुए। वह भी फिर कैसे-कि वे हिन्दुओं की
बादशाहत के सब ठाठ पाटरूपी सर्वस्व को मानो अपने साथ ही लोकान्तर में लेगये और जगत
को यह निर्देश कर गये कि लोकिक में जो प्रायः यह कहा करते हैं कि किसी के अंत समय
उसके साथ कुछ नहीं जाता है वह एक प्रकार से असत्य है-अब रहा हिन्दी **रासो** शब्द, वह
संस्कृत **रास** अथवा **रासक** से है और संस्कृत भाषा में **रास** के "शब्द, ध्वनि, क्रीडा, शृंखला
विलास, गर्ज्जन नृत्य और कोलाहल आदि" के अर्थ और **रासक** के काव्य अथवा दृश्यकाव्यादि
के अर्थ परम प्रसिद्ध हैं। मालूम होता है कि ग्रंथकार ने संस्कृत **भारत** शब्द के सदृश **रासो**
शब्द को भावार्थ से महाकाव्य के अर्थ में ग्रहण कर प्रयोग किया है। यह **रासो** शब्द आज
कल की ब्रज भाषा में भी अप्रचलित नहीं है किन्तु अन्वेषण करने से वह काव्य के अर्थ के अति
रिक्त अन्य अनेक अर्थों में भी प्रयोग होता हुआ विद्वानों को दृष्टि आवेगा, जैसे-"हमने चौदे के
गदर को एक रासो जोड्यो है-कल बहादर सिंघजी की बैठक में बदर ने गदर को रासो गायो हो
फिर मैं ने भरतपुर के राजा सूरजमल को रासो गायो सो सब देखते ही रह गये-अजी ये कहा
रासो है-मैं तो कल्ल एक रासो में फँस गयो या सूं तुमारे वहां नाय आय सक्यौ-अजी राम
गोपाल बडो दिवारिया है, वाके रासे में फँस के रुपैया मत बिगाड दीजो-हमने आज विन को
रासो निमटाय दोनो हैं-देखो सब रासो के संग रासो है, बुरी मत मानो"-तथा लुगाइयें भी
गाया करती हैं-

गीत ॥ मत काची तोन्ह रखियो घानी
नान्ह करूंगी अंत रासा
गुर राख, पकावा, मत कावा। इत्यादि ॥ १ ॥
जिव लोगन की रास उठेगी तीन्ह के खाक उठावेगा,
हल जोत, नहीं पछतावेगा। इत्यादि ॥ २ ॥

२ यद्यपि इस महाकाव्य का केवल नाम सुनते ही उसका विषय यह प्रतीत होने लगता है कि उसमें पृथ्वीराजजी चौहान के जन्म से लेकर मरण तक के ही सब चरित्र वर्णन किये गये हैं, परंतु उसके गर्भित वृत्तों की परीक्षा करने से जानने में आता है कि महा कवि चंद ने उसमें पृथ्वीराजजी के चरित्रों के साथ ही उनके सब समकालीन सूर, सामंत, आधीन राजा, इष्ट मित्र और सगे संबन्धी और सहायक यावदार्य राजकुलों के भी कुछ न कुछ चरित्र और शौर्य्य वर्णन किये हैं। अतएव यह कदापि नहीं समझा जा सकता कि यह महाकाव्य पृथ्वीराजजी चौहान के नायक होने के कारण से केवल चौहानों की ही बापौती का ग्रंथ है किन्तु वह वास्तव में यावदार्य राजकुलों का सर्वस्व है। देखो, पृथ्वीराजजी से लेकर जिन जिन सूर बीरों के चरित्र उसमें वर्णन किये गये हैं उन सब की विद्यमान संतान वर्तमान काल की हमारी श्रीमती भारत-राजराजेश्वरी विक्टोरिया के सिंहासन के चारों ओर उपस्थित होकर अपनी अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार तन मन और धन के द्वारा परम राजभक्ति को प्रकाश कर रही है और श्रीमती के प्रस्वेद के साथ मानों अपना रक्त तक बहाने को प्रस्तुत खड़ी है। क्या पृथ्वीराजजी के एक बड़े सूर वीर सामंत पज्जूनजी के वंश में श्रीमहाराज साहब जयपुर और उनके राजवंशीय सरदार नहीं हैं? क्या पृथ्वीराजजी के सगे संबन्धी जयचंदजी के वंशज श्रीमहाराज साहब जोधपुर और कृष्णगढ़ और उनके भाई बेटे नहीं हैं? क्या पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और परम सूर वीर सहायक रावल समरसीजी की कुलीन संतान में श्रीमहाराज साहब नेपाल, श्रीमहाराणाजी साहब उदयपुर, श्रीदरबार डूंगरपुर और प्रतापगढ़ अपने अपने राजवंशी उमराव और सरदारों के सहित नहीं हैं? क्या चौहानजी के अनेक वंशज बूंदी, कोटा सिरोही, नीमराणा, भदावर बेदला, कोठारिया, और पारसोली आदि के राजा महाराजा और सरदारों को आज हम अपनी आंखों से नहीं देखते हैं? इसी तरह अन्य सब की विद्यमान संतानों को भी हमारे पाठक स्वयम् विचार देखें और इस थोड़े में ही बहुत करके समझ लें कि इस महाकाव्य का विषय बारहवें शतक के यावदार्य राजकुलों के संवलित चरित्रों से परम विभूषित है॥

विषय

३ इस पृथ्वीराज रासो को जो हम अपने लेखों में महाकाव्य कर के लिखते हैं वह कुछ अन्यथा और आश्चर्यदायक नहीं है किन्तु साहित्यदर्पण में महाकाव्य का जो नीचे लिखा हुआ लक्षण लिखा है उससे वह विशेषांश में मिलता हुआ है—

काव्य

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः। सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः॥
एकवंशभवाः भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा। शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते॥
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः। इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्॥
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्। आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा॥
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सताञ्च गुणकीर्त्तनम्। एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः॥
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह। नानावृत्तमया क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते॥

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् । सन्ध्या सूर्य्येन्दुरजनीप्रदोशध्वान्तवासराः ॥
प्रातर्मध्यान्हमृगयाशैलर्तुवनसागराः । सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ॥
रणप्रयाणोपयम मन्त्रपुत्रोदयादयः । वर्णनीया यथ योगं साङ्गोपाङ्गा अमी इह ॥
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा । नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्ग नाम तु ॥
सा० द० ५५९ ॥

जब कि वह महाकाव्य के लक्षण के अनुसार वास्तविक एक महाकाव्य है तो फिर उस के रचनेवाले का भी साहित्यशास्त्र में एक अच्छा व्युत्पन्न महाकवि होना क्या अनुमान नहीं किया जा सकता है ? जैसे कि इस महाकाव्य का विषय पृथ्वीराजजी चौहान और उनके समकालीन यावदार्य रजकुलों के चरित्रों से संवलित है वैसे ही उसका काव्य भी भिन्न भिन्न प्रकार के छंदों से विभूषित अनेक प्रकार के काव्यों का एक ऐसा संवलित काव्यात्मक है कि उसको हम किसी एक प्रकार के काव्य की संज्ञा प्रदान नहीं कर सकते हैं। उसके काव्य को **श्राव्य काव्य** की संज्ञा देने में हम आशा करते हैं कि किसी विद्वान को भी कुछ शंका न होगी किन्तु सूक्ष्मतर अन्वेषण करने से ज्ञात होगा कि उसको कोई **दृश्य-काव्य** का अच्छा व्युत्पन्न परीक्षक झट शोधकर जान सकता है । क्या हम यह नहीं विचार सकते कि इस महाकाव्य के छंदों को कवि ने रूपकों के क्रम से क्यों गिना है ? इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से यहां तक भी स्पष्ट विदित हो सकता है कि महाकवि चंद ने उसको काव्य की अनेक उत्तमताओं के इन तीन मूलों से भी भले प्रकार विभूषित किया है । प्रथम तो महाकवि ने अपने वचन को शृंगार, रस, अनुप्रास, और अलंकारादिक से परम विचित्र किया है। दूसरे उसने भाव में ओज़ रक्खा है । तीसरे इस महाकाव्य के सब छंद प्राचीन और नवीन प्रकार की गानविद्या के अनुसार गाये भी जा सकते हैं । इसके अतिरिक्त महाकवि ने पृथ्वीराजजी और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलादि के इतिहास भी जहां तक उससे हो सके हैं भले प्रकार से वर्णन किये हैं । हिन्दी भाषा में साहित्यशास्त्र और सब पौराणिक अनुवाद विषयिक ग्रंथ जो अब तक प्राप्त हो सके हैं वे बारहवें शतक के अथवा उसके पहिले के नहीं हैं किन्तु वे सब इधर के समय के रचित हैं अतएव हम को समझना चाहिये कि चंद ने संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों के आधार से ही यह महाकाव्य रचा है और जब कि यह बात ऐसी ही है, तो फिर हमको उसके परम परिश्रम के लिये कितना आभारी होकर उसकी प्रशंसा करनी चाहिये । क्या हमको इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से चंद की उक्ति, साहित्यशास्त्र विषयिक नियम, और पौराणिक कथा आदि में उसका संस्कृत भाषा के अनेक विद्या ग्रन्थों का अनुकरण करना नहीं दृष्टि आता है ? जहां तक हिन्दी भाषा के ऐसे अनेक ग्रंथ कि जो चंद के पीछे के रचित हैं हमारे पथ में आये हैं, उन सबसे यही ज्ञात होता है कि उनके रचनेवाले चंद कवि जैसे संस्कृत भाषा से भले प्रकार परिज्ञात नहीं थे और उन्होंने चंद की शैली का ही निःसंदेह अनुकरण किया है । हमारे कहने का सारांश यह है कि इस महाकाव्य को उसके अति क्लिष्ट और हमारी बुद्धि को चल विचल कर देनेवाला होने के कारण निन्दनीय ठहराना नहीं चाहिये किन्तु साहित्यशास्त्रादि के संस्कृत भावों के अनेक ग्रंथों को हाथ में लेकर और अपने हृदय को चारण और भाटादि के वंश परंपरा के हाड-बैर के दुराग्रह से शुद्ध करके सूक्ष्मतर परीक्षा करनी चाहिये कि उससे हमको निःसंदेह यह ज्ञात हो जायगा कि हमारे स्वदेशी और यूरोपियन बड़े बड़े विद्वान जो इस महाकाव्य की प्रशंसा अब तक करते चले आये हैं वह वास्तव में वैसा ही अमूल्य महाकाव्य है और वह ऐसा है भी—कि मानों चंद अपने समय

तक के हिन्दी भाषा के सर्व प्रकार के काव्यों का एक अमूल्य संग्रह हमारे लिये प्रस्तुत कर के हमारी हिन्दी भाषा को अति धनाढ्यकर गया है । क्या यह बात पक्षपात रहित विद्वानों को अति आश्चर्य और अट्टाट्टहास कराने वाली नहीं है, कि हम इस महाकाव्य को अभी तक बहुत ही अच्छी तरह से पढ़ पढ़ा और समझ समझा तो सकते ही नहीं और न इस महाकाव्य में यूनीवर्सिटी (University) की परीक्षा की शैली के अनुसार परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो सकते हैं किन्तु उसको दोष देकर विध्वन्स करने को तो हम सबसे आगे आखड़े होने को प्रसन्नतापूर्वक तयार हैं ? निदान किसी कवि के कहे अनुसार जो जिसके गुण को नहीं जानता वह उस की निन्दा निरंतर करता है:-"न वेत्ति, यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निन्दां सततं करोति । यथा किराती करिकुंभजाता मुक्ताः परित्यज्य बिभाति, गुंजाः" ॥

जैसे इस महाकाव्य का काव्य अनेक प्रकार के काव्यों का एक संवलित काव्य है वैसेही उसकी भाषा भी उसके ग्रंथकर्त्ता के समय तक की अनेक प्रकार की प्राचीन हिन्दी भाषाओं की एक अति संवलित

भाषा

हिन्दीभाषा है । यदि किसी को इसमें कुछ संदेह हो तो वह इस आदि पर्व्व को ही ध्यान देकर पढ देखे कि उसके किसी छन्द की तो कैसी भाषा है और किसी की कैसी। क्या विद्वानों से यह बात छिपी हुई है कि भाषा और काव्य का नित्य-संबन्ध नहीं है ? जब कि उनमें नित्य-संबन्ध का होना यथार्थ है तो फिर क्या प्रत्येक का अपने अपने अनेक प्रकारों से संवलित होना भी स्वतः सिद्ध नहीं है ? इस महाकाव्य की भाषा के चीज़ को वे विद्वान भले प्रकार से जान सकते हैं कि जो वर्तमान समय में फिलोलोजिष्ट (Philologists) अर्थात् शब्दोत्पत्तिविद्याज्ञ कहलाते हैं। और वैसे तो हमारे पढने में वर्तमान समय के ऐसे ऐसे सहसा सिद्धान्त कर लेने वाले विद्वानों के भी लेख आये हैं कि जिन्हों ने ऐसा अत्यन्ताभाव का वाक्य भी कहा है, कि इस महाकाव्य के महाकवि को अनुस्वार और विसर्ग तक के प्रयोग करने का बोध नहीं था । और विद्वान भलेही ऐसा कहने में सम्मत हों परंतु हमारे मुख से तो इस महाकाव्य के काव्य को देखते हुए ऐसा सुन कर वारंवार यही निकलता है कि-त्राहि गोविन्द ! त्राहि गोविन्द !! ग्रंथकर्त्ता ने इस ग्रंथ को जिस भाषा में लिखा है वह उसने स्वयम् ही इस आदि पर्व्व के रूपक ३९ में स्पष्ट कह दी है और जैसा उसने कहा है वैसी ही भाषा हम इस 'महाकाव्य की पाते भी हैं । फिर आश्चर्य क्या है ? वह यही है-कि न तो हम इस ग्रंथ को आदि से लेकर अंत परियंत पढते हैं, न समझते हैं, न कवि के अभिप्राय को लक्ष में लाते हैं, न यह विचारते हैं कि बड़े बड़े विद्वान कि जिन के वचन पर अनेक मनुष्य विश्वास करते हैं उनके सिर पर कुछ सम्मति देते समय बड़ी भारी जिम्मेदारी अर्थात् अनुयोज्यता का बोझ भी रक्खा हुआ है कि नहीं-किन्तु जो मन में आया वही हम लिख डालते हैं, क्योंकि न तो चंद कवि, न पृथ्वीराजजी चौहान, और न रावल समरसीजी हमसे हमारे ऐसा कहने के लिये अब लड़ने को आ सकते हैं, और न किसी क्षीर-नीर का सा न्याय करने वाले विद्वान का हमको डर है । देखो, हमने अपनी प्रथम टिप्पणी में ही कह दिया है कि इस महाकाव्य की हिन्दी भाषा तीन प्रकार की है । प्रथम षट-भाषा-और-कुरान-की भाषा-की-योनिवाली दूसरे षट-भाषा-और-कुरान-की-भाषा-के-सम, और तीसरे देशी प्रसिद्ध । इसके अतिरिक्त विद्वानों को इस महाकाव्य की भाषा की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से ज्ञात होगा कि चंद कवि ने साहित्यदर्पण में लिखे हुए भाषा के प्रयोग के निम्न लिखित नियमों का भी अपने निज विचार और शैली के संस्कार सहित इस महाकाव्य के रचने में कुछ अनुकरण किया है-

पुरुषाणामनीचानां संस्कृतं स्यात्कृतात्मनाम् । शौरसेनी प्रयोक्तव्या तादृशीनाञ्च योषिताम् ॥
आसामेव तु गाथासु महाराष्ट्रीं प्रयोजयेत् । अत्रोक्ता मागधीभाषा राजान्तःपुरचारिणाम् ॥
चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठीनां चार्द्धमागधी । प्राच्या विदूषकादीनां धूर्तानां स्यादवन्तिका ॥
योधनागरिकादीनां दाक्षिणात्या हि दीव्यताम् । शकाराणां शकादीनां शाकारीं सम्प्रयोजयेत् ॥
बाह्लीकभाषा दिव्यानां द्राविडी द्रविडादिषु । आभीरेषु तथाऽभीरी चाण्डाली पुक्कसादिषु ॥
आभीरी शावरी चापि काष्ठपत्रोपजीविषु । तथैवाङ्गाकारादौ पैशाची स्यात् पिशाचवाक् ॥
चेटीनामप्यनीचानामपि स्यात् शौरसेनिका । बालानां षण्डकानाञ्च नीचग्रहविचारिणाम् ॥
उन्मत्तानामातुराणां सैव स्यात् संस्कृतं क्वचित् । ऐश्वर्य्येण प्रमत्तस्य दारिद्र्योपस्कृतस्य च ॥
भिक्षुबन्धधरादीनां प्राकृतं सम्प्रयोजयेत् । संस्कृतं संप्रयोक्तव्यं लिङ्गिनी षूत्तमासु च ॥
देवीमन्त्रिसुतावेश्या स्वपि कैश्चित्तथोदितम् । यद्देशं नीचपात्रन्तु तद्देशं तस्य भाषितम् ॥
कार्यातश्चोत्तमादीनां कार्य्यो भाषाविपर्ययः । योषित् सखीबालावेश्यां कितवाप्सरसां तथा ॥
वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्य संस्कृतं चान्तरान्तरा ॥　　　　सा० द० ४३२ ॥

इस बात की कुछ परीक्षा हम इस आदि पर्व्व में ही कर सकते हैं । देखिये रूपक ३३, ३९, आदि शुद्ध संस्कृत भाषा में हैं और रूपक १६, २२, ४७, ५७, ५९,. इत्यादि में षटभाषाओं का सादृश्य और साटकों में प्रायः संस्कृतादि भाषाओं का सादृश्य है । इसी प्रकार हमारे पाठक इस भाषा सम्बन्धी सब बातों को इस समय ग्रन्थ में अन्वेषण कर जांच देखें । यदि इस प्रकार की परीक्षा करने पर सब विद्वानों की सम्मति में यही तुलेगा कि चंद कवि वज्र-मूर्ख था तो हम भी उस को बड़ा वज्र-मूर्ख कहने लगेंगे क्योंकि वह हमारा कोई संबन्धी नहीं है और न हम को अपने कहे का कुछ हठ है वरन हमारा सिद्धान्त यही है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग हो। इस महाकाव्य की भाषा में दो एक वर्ष से एक यह भी बड़ी भारी शंका लोगों ने खड़ी की है कि उस में आठ या १० दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द हैं और फारसी शब्द अकबर बादशाह के समय से हिन्दी भाषा में मिले हैं अतएव यह महाकाव्य सं० १६४० से १६७० के बीच में कृत्रिम बना है । हम इस बात से बिलकुलही असम्मत हैं और ऐसा अनुमान करने वाले को हम समझते हैं कि उसने न तो यह पृथ्वीराज रासो कभी आदि से अंत परियंत अच्छी तरह से पढ़ा है और न उसको ऐतिहासिक विद्या का पूरा पूरा बोध है क्योंकि यह अनुमान बिलकुलही अदृढ़ और अपरिपक्व है । वरन अब तक के ऐतिहासिक शोधों के अनुसार हमारी सम्मति में फारसी शब्दों का मेल हमारे भरतखण्ड की बोलचाल की भाषाओं में सातवें शतक तक पाया जा सकता है कि फिर इस बारहवें शतक की हिन्दी भाषा की तो क्याही कथा कहनी है । टुक विचार कर देखिये कि किसी देश की भाषा में अन्य देशीय भाषा के शब्दादि का मेल बहुधा करके प्रथम बोलचाल की भाषा में ही हुआ करता है न कि किसी मृतप्राय भाषा में और वह विदेशियों के किसी देश में आने जाने, बसने बसाने, रहने सहने, मिलने मिलाने वाणिज्य करने कराने, राज्य के बदलने बदलाने, मत के बिगड़ने बिगड़ाने आदि कारणों से ही हुआ करता है । तदनन्तर आप नीचे लिखे कारणों को विचार कर देखिये और निर्णय कीजिये कि चन्द की हिन्दी में जो फारसी शब्दों के प्रयोग संबन्धी दोष दिये जाते हैं वे वास्तव में यथार्थ हैं अथवा नहीं—

१ पृथ्वीराज रासो के किसी भी समय में आठ या दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द नहीं हैं और जब प्रत्येक समय में नहीं हैं तब समय ग्रन्थ में भी न होना स्वतः सिद्ध है ।

यदि किसी को निश्चय करना हो तो इस आदि पर्व्व से ही गिन कर निश्चय करले। हां
ऐसा तो निःसंदेह कह सकते हैं कि उसमें अनेक फारसी शब्द हैं किन्तु बिना गिने ऐसी
असत्य संख्या स्थिर नहीं कर सकते हैं ॥
२ ग्रन्थकर्त्ता ने रूपक ३९ में स्वयम् कहा है कि उसने कुरान की भाषा का भी आश्रय
लिया है ॥
३ ग्रंथकर्त्ता महाकवि चंद पंजाब देश के लाहोर नगर में उत्पन्न हुआ था, जहां कि उस
के जन्म होने के १०० वर्ष पहिले से ही महमूदी सलतनत का होना और उसका पृथ्वीराज
जी के साथ ही साथ नाश होना **तबकात नासरी** से ही सिद्ध है। फिर क्या कोई विद्वान यह
अनुमान कर सकता है कि इस सौ १०० वर्ष के समय में लाहोर नगर की भाषा में कोई एक
भी शब्द मुसलमानी भाषा का नहीं मिल सका था और न चंद कवि एक भी फारसी शब्द
जानता था और न उसके सुनने में कभी कोई एक भी फारसी शब्द आया था किन्तु वह इस
वाक्य "न वदेत यावनी भाषां कंठै प्राण गतैरपि" का ही अनुरूप था? क्या महमूदी सलतनत
के राज्य समय में कोई एक भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था, न कोई मसज़िद बनी थी,
न कोई नगर आदि मुसलमानी नाम से बसे थे?।
४ क्या पृथ्वीराजजी के राज्य की और महमूदी सलतनत की परस्पर सीमा नहीं मिली हुई
थी? क्या इन दोनों राज्यों के दूत एक दूसरे के राज्य में आते जाते और नहीं रहते थे? यदि
परस्पर लिखा पढ़ी का काम पड़ा था तो क्या वह शुद्ध वैदिक संस्कृत भाषा में लिखा पढ़ी
हुई थी और क्या महमूदी सलतनत वाले भी संस्कृतादि मृतःप्राय भाषाओं में ही अपना राज
का काम चलाते थे?
५ क्या हसन निजामी आदि से हम को यह ज्ञात होता है कि पृथ्वीराजजी के राज्य समय
में उनकी सेवा में अथवा उनके राज्य में न तो कोई फारसी जानने वाला था न कोई
सुलतान की ओर से कभी कुछ संदेसा लेकर पृथ्वीराजजी के पास गया, न कोई मुसलमान
सिपाही था, न कोई मुसलमान सौदागर था, न कोई मुसलमान यात्री वहां आया था, न कोई
मुसलमान उनके आधीन देश में रहता था; मानों पृथ्वीराजजी के राज्य समय की हिन्दी
भाषा को मुसलमानी भाषा की किंचित् वायु ही नहीं लगी थी? क्या चित्ररेखा नाम की
सुलतान शहाबुद्दीन गोरी की एक परम प्रिया पासवान को हसन नामक व्यक्ति का उड़ा लाना
तबकातनासरी से कुछ भी सिद्ध नहीं होता और क्या यही सुभगा पृथ्वीराजजी की शरणागत
में रह कर हमारी हिन्दुओं की बादशाहत को समूल नाश को प्राप्त कराने वालों में नहीं हुई है?
६ क्या सुलतान शहाबुद्दीन गोरी ने कई बेर पृथ्वीराजजी और लाहोर की महमूदी
सलतनत पर चढ़ाईयां नहीं की थीं? क्या इन अवसरों में भी जो फारसी शब्द चन्द ने
प्रयोग किये हैं वे चंद और पृथ्वीराजजी की सेना के सुनने और समझने में कभी नहीं आये
थे और न उनमें का कोई एक शब्द भी उनकी भाषा में मिल गया था? क्या जब शहाबुद्दीन
ने लाहोर की महमूदी सलतनत पर चढ़ाईयां कीं तब लाहोर वालों ने पृथ्वीराजजी से
कुछ मंत्रणा नहीं की थी और न उनकी कुछ सहायता ली थी?
७ क्या मसूद ने हांसी पर चढ़ाई नहीं की थी? क्या वह लाहोर के एक वाईसराय
(Viceroy) के साथ बनारस तक नहीं आया था और न उसने उस शिवपुरी को लूटा था क्या
इस समय में भी कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का हमारी हिन्दी भाषा में नहीं मिला था?

८ क्या महमूद गजनवी की १६ वा १७ चढ़ाइयां (सन् ९९६ से १०३० तक) हमारे देश की भाषाओं में कोई एक भी मुसलमानी शब्द नहीं मिला सकी थीं ? क्या हमारे गुजराती बन्धुओं को महमूद गजनवी के निज मुख के "बुतशिकिन्" और "बुतफरोश" शब्द सोमनाथ के नाश के दिन से आज तक नहीं याद रहे हैं ? क्या गुजरात के नागर ब्राह्मणों में से जिन्होंने अपने देश की संरक्षा के लिये पुरुषार्थ किया और मुसलमानी बादशाहों की सेवा करना अंगीकार किया उनका नाम "सिपाही नागर" नहीं पड़ा है ? क्या महमूद के समय में कोई भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था ? क्या मथुरापुरी में उसके लर में अनेक हिन्दू गुलाम दो दो रुपयों पर नहीं बिके थे ? क्या उसकी एक लाख सवार और बीस हज़ार पैदल फौज के साथ हमारे स्वदेशी व्यापारियों की बोलचाल देववाणी में होती थी और कोई एक भी मुसलमानी शब्द उसकी फौज हमारे देश के अनेक नगरों में अपने पीछे अपने स्मारकचिन्ह की भांति नहीं छोड़ गई थी ? क्या महमूदबाद नामक कोई भी नगर महमूद का बसाया हुआ हमारे देश में नहीं है ?

९ क्या **अब्बुलअसी** ने सन् ६३६ ई० के लगभग **बंबई** के समीप के **थाना** पर चढ़ाई नहीं की थी ? क्या **इराक** के परम प्रसिद्ध जालिम गवरनर **हज्जाज** के समय में राजा **दाहिर** से सिंध विजय नहीं किया गया था ? क्या फिर सन् ७१२ ई० में **महम्मद कासिम** ने सिंध पर चढ़ाई करके सिन्ध को नष्ट भ्रष्ट और लूट खसोट नहीं किया था और राजा **दाहिर** को नहीं मारडाला था ? क्या राजा **दाहिर** का लड़का **जयसिंह** इस समय कितनेक और छोटे मोटे सिन्ध के राजा और सरदारों सहित मुसलमान नहीं होगया था और क्या तब से ही, मुसलमानी धर्म्म का आज तक सिन्ध में बराबर चला आना ऐतिहासिक शोध नहीं सिद्ध करते हैं ? क्या सिन्धी मुसलमान पृथ्वीराजजी के पीछे हुए हैं ? क्या इस दशा में कोई एक भी **अरबी** शब्द हमारी देश भाषाओं में उस समय नहीं मिला है ?

१० क्या ऐतिहासिक शोध हमको यह नहीं विदित करते हैं कि पारसी लोग सेसेनियन् वंश की अवनति के समय फारस से भागकर हमारे देश के बंबई नगर के आस पास आकर बसे हैं ? क्या इन लोगों ने अपनी मातृभाषा का कोई एक शब्द भी पृथ्वीराज जी के समय तक हमारी देश भाषा में नहीं मिलाया था ? क्या उनको हमारे देश के लोग पारसी के बदले कोई अन्य वैदिक शब्द से पुकारते थे ?

११ क्या गुजराती भाषा में फारसी शब्दों के मिलने का शोध सं० १३५६ तक शास्त्री व्रजलाल कालिदासजी के रचित गुजराती भाषा के इतिहास नामक ग्रन्थ से पहुंचना नहीं विदित होता है ? जो इसी तरह हमको देशभाषा के प्राचीन ग्रन्थादि बराबर मिलते जांय तो क्या हम सातवीं सद्दी तक कोई एक भी मुसलमानी शब्द अपनी देशभाषाओं में मिला हुआ नहीं शोध सकते हैं ?

१२ क्या पुरातत्त्ववेत्ताओं ने यह शोध लिया है कि हिन्दी भाषा का अमुक समय में प्रागट्य हुआ है ? क्या बारहवें शतक के पहिले और उसके एक दो शतक पीछे के कोई पुस्तक ताम्रपत्र प्रशस्ती पट्टे परवाने आदि हमको ऐसे प्राप्त हो गये हैं कि जिनसे हम यह कह सकें कि बारहवें शतक के पहिले अथवा उसके कुछ पीछे के समय तक भी मुसलमानी भाषा के शब्द हिन्दी में नहीं मिले थे ? क्या अब तक के प्राप्त हुए पुरातत्व संस्कृतादि मृतप्राय भाषाओं में नहीं हैं और उनकी अपेक्षा से हिन्दी भाषा के विषय में कल्पना करना बहुत ही आश्चर्य दायक और अयोग्य नहीं है ?

१३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथों में, जिनको पुरातत्ववेत्ता बारहवें शतक के पहिले के
बने हुए मानते हैं, ऐसे ऐसे शब्द हमको प्राप्त नहीं होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य
यूरोप आदि अन्य खंडों में आज भी विद्यमान हैं? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी
साधु संस्कृत भाषा की है? क्या रावल समरसीजी की आबू की प्रशस्ति के ४५ वें श्लोक में
"तुरुष्क" शब्द नहीं प्रयोग हुआ है? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत सी धातुओं का प्रयोग
द्वीपान्तरों में होना विदित नहीं होता है? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा में बात
करना नहीं लिखा मिलता है?

१४ क्या वर्तमान समय के अच्छी हिन्दी लिखनेवालों में से कोई किसी विद्वत मंडली में
खड़ा होकर यह कह सकता है कि चिठ्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थ तक जो कुछ उसने आज तक
हिन्दी भाषा में लिखा है उन सबकी हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उसके अनेक लेखों में से
ऐसे ऐसे उदाहरण बिलकुल नहीं मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख में तो एक भी फारसी शब्द
नहीं आया होगा और किसी में अनेक फारसी शब्द प्रयोग हुए होंगे? यदि पृथ्वीराज रासो की
भांति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशीय बन्धु को ऐसे लेखों को हाथ में लेकर वाद
विवाद करें तो क्या दोनों पत्रकारों को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नहीं मिल सकेंगे? जब आज
ही हम लोगों की यह दशा है कि कभी कैसी हिन्दी लिखते हैं और कभी कैसी तो फिर
प्राचीन समय के ग्रंथकर्त्ताओं में से जिसने यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को
भी प्रयोग में लेता हूं उसको हम क्योंकर दोष दे सकते हैं? क्या हम अनुमान नहीं कर सकते
कि प्राचीन ग्रंथकारों में से जिसने जैसी हिन्दी चाही उसने वैसी ही लिखी है?

१५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानों में अस्मार्त्त समय से अब तक मुसलमान बादशाह
सिपहसालार, सरदार, सौदागर, मौलवी, मुल्ला और काज़ी आदि के नाम अपनी देशभाषा
हिन्दी और मृतप्राय भाषा संस्कृतादि के होते हुए भी फ़ारसी अक्षरों और उसी भाषा में
चिठ्ठी पत्री और फ़रमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नहीं प्रचलित है? क्या आज के
एक-डंकी अंग्रेजी राज्य शासन समय में भी राजपुताने के अंतरगत राज्यों से श्रीमान् वाइसराय
और गवरनरजनरैल साहब बहादुर के नाम उभय को विदेशी फ़ारसी भाषा और लिपि में
ख़रीते नहीं लिखे जाते हैं? बहुत समय के व्यतीत होजाने पर जब कि वर्तमान समय के वृत्त
पुरातत्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही अलभ्य होंगे जैसे कि आज पृथ्वीराजजी के समय
के हैं तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसे ही तर्कों से कि जैसों से आज हम लोग
रासो में दोष देते हैं इन देशी राज्यों की इन फ़ारसी लिपि और भाषा में गवर्मेंट हिन्द के नाम
लिखे हुए ख़रीतों को भी जाली समझना यथार्थ होगा? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में
देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं है कि जब गवर्मेंट हिन्द के नाम ख़रीता लिखने का काम
पड़ता है तब फ़ारसी भाषा के विद्वानों को घेर घार कर, फ़ारसी कोषों में शब्दों को
ढूंढ ढांढ कर, और एकान्त में बैठ बाठ कर, कई दिनों तक अति परिश्रम कर के वे नहीं लिखे
जाते हैं; उसी तरह जब किसी मंदिर आदि की प्रशस्ति का काम पड़ता है तब वैसेही देशी
और विदेशी पंडितों को चाहे वे राज के नौकर हों अथवा नहीं घेर घार कर संस्कृत
भाषा में प्रशस्तियां नहीं लिखाई जाती हैं और जब किसी राजा की बिरदावली का कोई
कवित्त बनवाने का काम पड़ता है तब षट भाषाओं की भाषा से बिगड़ कर बनी हुई डिंगल
भाषा में काव्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाट साहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता

है तब उसमें Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेज़ी भाषा में नहीं दिया जाता है ? क्या ये पंच भाषएं आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की बादशाहत है ? क्या जो आज हम महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज्यशासन समय के सर्व प्रकार के सब राजकीय लेख एकत्र करके देखें तो वे सब एकही भाषा में हमको लिखे मिलेंगे ? क्योंकि क्या सब राजा साहबों के स्वर्गवास होने पर राज की मोहर, छाप और स्टाम्प और सिक्के आदि में उसी दिन नवीन राजा साहब का नाम पलट करके वैसेही हुक्म जारी हो जाते हैं कि जैसे आज अंग्रेजी राज्य में होते हैं कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार से विद्यमान पुरातत्ववेत्ता उपलब्ध पुरातत्वों को जांचा करते हैं ? क्या मेवाड़ राज्य में महाराणाजी श्री शंभूसिंहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नहीं जारी है ? क्या महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के नाम की छाप वर्त्तमान महाराणाजी साहब के राज्य शासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है ? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखी हुई दस्तावेज़ें और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जांयगे और जिन जिन के पास ये राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अपराधी समझे जाकर फांसी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे ?

सारांश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बड़ाही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मान लें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भरतखंड में हुआ तब ही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवित् है तो यह प्रश्न बड़ाही सरल हो जाता है । हमारे सिद्धान्त को माने बिना इस प्रश्न का निर्णय करना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद कवि के पहिले अथवा उसके समय के भी हिन्दी भाषा के पुस्तकादि मिल जांय और उनमें मुसलमानी भाषाओं के शब्द न भी मिलें तो भी हम सुख से यह अनुमान कर सकते हैं कि उनके रचनेवालों ने उनको जानकर प्रयोग नहीं किया और चंद ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्व्वक उनका प्रयोग किया हैं जैसे कि वर्तमान समय में भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते हैं ॥

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसंग में जैसे मुसलमानी शब्दों के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उन्होंने इन **सत्त । चावद्दिसि । भारत्थ । पारत्थ । सारत्थ ।** और चूक शब्दों को भी राजपुताने की कविता के ही शब्द होना समझकर इस महाकाव्य का मेवाड़ राज्य में जाली बनना भी अनुमान किया है । तथा इस ग्रंथ में बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयोग हुए हैं उनके विषय में भी उन्होंने महाकवि चंद पर आक्षेप करके यह कहा है कि "अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वह संस्कृत कुछ भी नहीं जानता था क्योंकि उसको बिन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था" परन्तु हमारी तुच्छ सम्मति में महामहोपाध्याय कविराज श्री श्यामलदासजी महाशय का यह सब कहना बिलकुल्ल ही असत्य और निर्मूल है । अब जो प्रमाण हमारे इस कहने को समर्थन करने को हम आगे दिखावेंगे उनसे यह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन जिन ग्रंथों से हमने उनको उद्धृत किया हैं वे कविराजजी के पढ़ने में नहीं आये होंगे नहीं तो वे ऐसे अत्यन्ताभाव के अनुमान कदापि नहीं करते—

१ यद्यपि **सत्त** शब्द का आज कल की बोल चाल की ब्रजभाषा में भी प्रयोग होना हमने अपनी लिखित **प्रथम संरक्षा** में इन वाक्यखंडों के उदाहरणों से सिद्ध कर दिखाया है जैसे— जबै वाकूं सत्त चढ़ आयो-तबै वो सत्ती भई-सत हर दत्त गुह दत्त दाता-राम राम सत्त है, दो

चार नित्त हैं—तथापि एक यह दोहा भी हम **कविवचनसुधा** से उद्धृत करके प्रमाण में प्रवेश करते हैं–"सत्त सुबचन कबीर के, चित्त देय सुन लेहु ॥ अरु नानक गुरु के वचन, सत्त मत्त करि गेहु" ॥ तथा खालशाकृत बिनयपत्रिका में–"दात्व मोत्त पाद देख हवे सर्व **सत्त** लेष मो दीन रेख मेख मार भाल मन्द के" यह शब्द ऐसा अप्रसिद्ध नहीं है कि जिसके प्रयोग के विषय में हिन्दी भाषा के विद्वनों को किंचित् भी संदेह हो अतएव हम अधिक उदाहरण नहीं लिखते ॥

२ श्रीमद्वल्लभ संप्रदाय में जो अष्ट–छाप करके प्रसिद्ध हैं उनमें के एक कुंभनदासजी ने "चावद्दिसि हरि रूप रम्यो" अपने एक कीर्त्तन में कहा है ॥

३ इन **भारत्थ, सारत्थ,** और **पारत्थ** शब्दों के प्रयोग के विषय में हमने **प्रथम संरक्षा** में बहुत कुछ कहा ही है परन्तु फिर भी हम एक प्रमाण अष्ट–छापवाले छीत स्वामी के एक कीर्त्तन में से यह बाताते हैं "भारथ्थ में सारथ्य ह्वै हरि जू कहाये सारथी" और पंडित कन्हैयालालजी कृत छंदप्रदीप नामक ग्रंथ से वैसे ही अन्य शब्दों के प्रयोगों के उदाहरण भी विदित करते हैं यथा–(१) करि गहि भार **समथ्थ** । (२) यश पायो नृप **मथ्थ** । (३) **मत्थन** नत करि **लज्जित** दिगज । (४) **सुसज्जिय** भ्रमगति । (५) **उत्थिय** समुद **वट्टिय** लहरि । (६)रहि **तदत्थकि** जियसु अरि(७)लखि **दुव्वत्त** मव नृपति(८)सिंहबली **समरत्थ हत्थिवर मत्थ** विदारन

४ अब शेष **चूक** शब्द के विषय में भी हमारी लिखित संरक्षा में लिखे के सिवाय हमको यह कहना है कि उसके शब्दार्थ तो वहीं हैं कि जो डाक्टर हार्नेली साहब ने हिन्दी शब्दों की धातुओं के संग्रह में वर्णन किये हैं किन्तु यह शब्द जिस विषय के प्रसंग में प्रयोग होता है वैसाही उसका भावार्थ हो जाता है जैसे कि छल के अर्थ में अष्ट–छापवाले परमानन्ददासजी ने उसका प्रयोग किया "**अहो हरि वलि सों चूक करी**" इसी तरह समझ लेना चाहिये कि जब वह छल से मारने के प्रसंग में प्रयोग होता है तब उसका वैसा भावार्थ ग्रहण किया जाता है। राजपुताने के किसी किसी कवि को हमने ऐसा भी कहते हुए सुना है कि यह **चूक** शब्द राजपुताने की भाषा में ही प्रयोग हुआ मिलता है और हिन्दी भाषा के किसी काव्य में किसी भी अर्थ में यह शब्द प्रयोग नहीं हुआ है परन्तु उनका यह कहना हमारे नीचे लिखे प्रमाणों से बिलकुल ही असत्य प्रतीत होता है ॥

वृन्द सतसई ॥

दोहा ॥ पिशुन छल्यो नर सुजन सों, करत विसास न चूक।
जैसे दाध्यौ दूध कौ पीवत छाछहि फूंक ॥
मूरख गुन समझै नहीं, तो न गुनी में चूक।
कहा भयो दिन को विभौ, देखी जो न उलूक ॥

नाथ कवि अर्थात् कवि लोकनाकजी चौबे कृत ॥

कवित्त ॥ सुखद रसाल को रिसाल तह तापै बैठि, ऐंठि बोल बोलै पिक, मधुप दुहू दुहू ॥
कुंज कुंज कारे हैं कुटिल अलि पुंज पुंज, गुंज गुंज फूल रस, चुहकै चुहू चुहू ॥
चूक बिन प्यारी कीन्ह मेरो मन टूक टूक, कूक सुने हूक परै, करत उहू उहू ॥
नाथ दिसि चार अंधियार ही जनात मोहि तातें किल कोकिला, कहत कुहू कुहू ॥

सूरसागर ॥

राग काफी ॥

मैं अपने कुलकानि डरानी । कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहीं जानी ॥
वहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लै गये चुराई । तनतैं जात नहीं मैं जान्यौं लियो श्याम अपनाई ॥
ऐसे ठगत फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध । सूर श्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहों अनुराध ॥

राग विहागरो ॥ कहा करों गुरजन डर मान्यों ।
आये श्याम कौन हित करि कैं मैं अपराधिनि कछु नहिं जान्यों ॥
ठाढे श्याम रहे मेरे आँगन तब तें मन उन हाथ बिकान्यों ।
चूक परी मोकों सबही अंग कहा करौं गई भूलि सयान्यों ॥
वे उनही को नए हरष मन मेरी करनी समुझि अयान्यों ।
सूर श्याम संगम उठि लाग्यो मो पर बार बार रिसान्यों ॥ ३७ ॥
बीच कियो कुल लज्जा आई ।
सुन नागरी बकस यह मोकों सनमुख आये धाई ॥
चूक परी हरि तें मैं जानी मन लै गये चुराई ।
ठाढ़े रहे सकुच तो आगें राखा बदन दुराई ॥
तुम हो बड़े महर की बेटी काहे गई भुलाई ।
सूर श्याम हैं चोर तुम्हारे छाड़ि देहु डरपाई ॥ ९० ॥

कवि लल्लूलाल कृत ॥

दोहा ॥ धरम राज सों चूक करि । दुरजोधन लै लीन्ह ॥
राज पाट अरु बित्त सब । बनोबास दै दीन्ह ॥
करी चूक प्रहलाद पै । हिरन असुर परचंड ॥
हरि सहाय हित अवतरे । असुरन किये बिखंड ॥

रामायण ॥

छमहु चूक अनजानत केरी । चहिये विप्र उर कृपा घनेरी ॥

स्त्रियें गाया करती हैं ॥

मेरा भया चुकान हियाड़ी । कार करत मैं बर बर चूकूं
फुंका जात सई जीया री ॥

कबीर ॥

काशी का मैं वासी कहिये, करम दशा का हीना ।
राम भजन में चूक पड़ी, तब पकर जुलाहा कीना ॥

कहावत ॥

आहार चूके वह गये व्योहार चूके वह गये ।
दरबार चूके वह गये सुसराल चूके वह गये ॥

चूरनवाले ॥

है चूरन खट्टा चूक। जिस से नित्त लगैगी भूक ॥

५ हम अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग के विषय में जो ऊपर कह आये हैं उसके नीचे लिखे उदाहरणों को अवलोकन करने से आशा है कि हमारे पाठकों पूर्ण संतोष हो जायगा—

सूरसागर ॥

राग भैरवी ॥ भजि श्री विठ्ठल चरण सरोजं। नखमणि दीधिति दमित मनोजं ॥
इच्छसि यदि सततं सुख सारं। त्यजसि न किमिति विषय धृतभारं ॥
यदि वांछसि हरि भक्ति सुरत्नं। कुरु चपलं शरणागत यत्नं ॥
प्राप्य सुदुर्ल्लभ नर वर देहं। परिहर सकल निगम संदेहं ॥
मानय हृदय मर्यादित वचनं। तदया सिनो चेदतिशय पचनं ॥
वत्सपदं भावय भव जलधिं। अंत समै भवधिन बवधिं ॥
नाथ तवाह मतीरण रावं। पूरय सततमिमं मयि भावं ॥
तव गुण गण कथिता मृत गाथे। प्रार्थ्यमिदं दिश तव रघुनाथे ॥

रामायण ॥

छंद ॥ दै भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुखदायकं ॥
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥ १०४ ॥
सुर वृंद रंजत द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित बलं ॥
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ॥ १०५ ॥

तोटक छंद ॥ गुण ज्ञान निधान अमान मजं। नित राम नमामि विभुं विरजं ॥
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल वृंद निकंद महाकुशलं ॥ १०६ ॥
बिनु कारण दीन दयालु हितं। छबि धाम नमामि रमा सहितं ॥
भव तारण कारण कार्य परं। मनसं भव दारुण दोष हरं ॥ ९० ॥
शर चाप मनोहर तूणि धरं। जलजारुण लोचन भूप वरं ॥
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमणं। मद मार मृषा ममता शमनं ॥ ९१ ॥

खालसा कृत विनयपत्रिका ॥

भैरवी ॥ रे मन सन्त चरण धरु माथं।
निस बासर जिनके जग नायक वास करत हैं साथं ॥ १ ॥
तिन को छोड़ विश्व में भटके वेश्या को करि नाथं।
भक्ति सहित सेवा तुम करते वह मारत है लाथं ॥ २ ॥
तत्रापी कछु लाज न आवत मलत चरण धरि हाथं ॥
सिंह मदन गोपाल साधु पद गहु अघहर सम पाथं ॥ ३ ॥

गोस्वामी श्री लक्ष्मीनाथजी परमहंस कृत पदावली ॥

नमो नमो गीता हरि वंशं । सुर नर मुनि सज्जन अवतंशं ॥
कोमल पद उपनिष श्रुति अंसं । हरि मुष कथित सन्त हिय हंसं ॥
विमल व्यास भाषित गन संशं । देव दनुज मानव अहि वंशं ॥
भक्ति विराग ज्ञान परगाशं । काम क्रोध मद मोह विनाशं ॥
सकल शास्त्र सम्मत निति शेशं । अर्थ धर्म सुख दायक हंसं ॥
सुचि सागर तीरथ फल देशं । कलिमल तिमिर प्रकास दिनेशं ॥
गुण अनन्त कहि गावत सेशं । चतुरानन गण देव महेशं ॥
सुनत सकल मन होत हुलाशं । लछमीपति अति पाप विनाशं ॥ १ ॥

नरहरदास कृत अवतार चरित्र ॥

भुजंगी । सुगन्धं विगन्धं न अस्तूति गारी । विभेदं न सत्रं न मित्रं विचारी ॥
न महिमा न माया न मद्दं न मोहं । न रंग विरंगं न दाया न द्रोहं ॥
न सीतं न तापं न संग कुसंगं । न भावं न भिव्यान अंगं अनंगं ॥
सुखं भूमि सज्या न डासं न वासं । ग्रहे वांहें आनै ततो पंच ग्रासं ॥
समं विष्षहं भूमि पंथं सहज्जं । वसन्नं दिगं बीत रागं विलज्जं ॥
विमोहं विदेहं न इन्द्री विकारं । अघानैं रहे निति वातं अहारं ।
विलेपं न श्रीषंड आगी विचारं । धरी पुष्प माला गले विष्य धारं ॥
प्रकासी जु निंदा महा मोद पावै । हसे ताल दे आप औरै हसावे ॥
अलेपं अछेपं रहे अप्रकासं । निरापेत निर्बंध नग्नं निरासं ॥
अनाजूत अवधूत माया अतीतं । अमोहं अछोहं अद्रोहं अभीतं ॥
अनामं अकामं अठामं अजेयं । अनाधार आकार महिमा अमेयं ॥
पशू वृत्ति लीनैं भवे पान पानी । विचारं प्रचारं विहारं विमानी ॥

यह महाकाव्य आज तक महाकवि चंद का बारहवीं शताब्दी का रचा हुआ एक बड़ा प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ करके हमारे स्वदेश में प्राचीन काल से चला आता है

अक्रित्रिमता

और उसकी यथार्थता में आज तक क्या तो स्वदेशी और क्या किसी विदेशी विद्वान को कोई वैसी शंका नहीं हुई है कि जैसी हमारे परम प्रिय मित्र महामहोपाध्याय कविराजजी श्री श्यामलदासजी को बैठे बैठाये हो गई है। यद्यपि हम इस महाकाव्य को अभी तक अनुकूल दृष्टि से ही देखते हैं किन्तु उसी के साथ हम उसकी परीक्षा करने में प्रतिकूल दृष्टि देकर उसके गुण-दोषों को भी देखते जाते हैं और जब हमको उसमें कोई दोष देने जैसी बात नहीं मिलती तब उसी स्थान पर हम अपनी टिप्पण में अपना अभिप्राय लिख प्रकाश करते हैं । हमारे पाठकों को यह भले प्रकार समझ रखना चाहिये कि जिस दिन जिस स्थान में जो कुछ हमको क्रित्रिम दीखेगा उसे हम उतनेही बल पूर्व्वक दोष देकर प्रकाश कर देंगे कि जैसे हम गुणों को प्रकाश करते हैं और जो कोई बात हमको उसमें दोष देने जैसी मिलेगी ही नहीं तो फिर हम अशक्त हैं। इस महाकाव्य को क्रित्रिम अनुमान करने में जितने हेतु दिये गये हैं उनमें से प्रत्येक के विषय में हम निम्न लिखित कुछ निवेदन करते हैं-

१ इस महाकाव्य में जो संवत् लिखे हुए हैं वह मुसलमानी तवारीखों में लिखे और संप्रत शोध हुए संवतों से नहीं मिलते और उनमें ९० वा ९१ वर्ष का अन्तर पड़ता है अतएव इस बात का निर्णय करने को हमारी टिप्पण १६८ और ३५५। ५६ वादी पढ़ें कि उनके पढ़ने और पक्षपात रहित मनन करने से हम आशा करते हैं कि वादी की संवत् के अन्तर विषयिक शंका निवारण हो जायगी ॥

२ इस ग्रंथ में मुसलमानी भाषादि के शब्द प्रयोग हुए दृष्टि आते हैं उनके विषय का समाधान हमारी इसी उपसंहारिणी टिप्पण का भाषा संबन्धी चौथा लेख-खंड अवलोकन करने से भले प्रकार हो सकता है ॥

३ अब तक पृथ्वीराजजी के समकालीनों में से केवल रावल समरसीजी को ही आक्षेप करने वाले ने उदाहरण में ग्रहण किया है कि उसके विषय में केवल आबू और चितौड़ की पांच चार प्रशस्तियों से ही संशय-करनेवाले को संशय होता है अर्थात् संशय का आधार उन ही प्रशस्तियों पर है। यदि उन प्रशस्तियों के संवतों को विद्वान लोग भले प्रकार परीक्षा करके यह निश्चय कर लें कि वे रावल समरसीजी के ही समय की हैं और उनके संवत् अमुक प्रकार के हैं और हमको पृथ्वीराजजी समरसीजी और पृथाबाईजी के जो पवाने प्राप्त हुए हैं उनके संवतों को भी उसी प्रकार जांच देखें तो फिर रावल समरसीजी के समकालीन होने में कुछ झगड़ा ही न रहैगा क्योंकि झगड़ा तभी तक रहता है कि जब तक किसी विद्वान को किसी प्रकार का पक्षपात होता है और वह दर्पण लेकर मुख दिखते हुए भी नहीं दूर होता है। जहां तक हमने रावल समरसीजी के विषय में शोध किया है वहां तक हमको इस बात में कुछ संदेह नहीं है कि वे पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और समकालीन थे। आबू और चितौड़ की प्रशस्तियों के संवतों को समझ लेने के लिये एक चोज की बात हमने अपनी टिप्पण ३५५। ५६ में अति संक्षिप्त रूप से कही है। इसके अतिरिक्त हम एक बड़ी अद्भुत बात पर विद्वानों का ध्यान दिलाते हैं कि कविराजजी ने इस महाकाव्य के संवत १६४० से १६७० के भीतर जाली बनने के सिद्ध करने में नीचे लिखे प्रमाण कहे हैं,-

"इस किताब में मेवाड के राजाओं की बहुत सी प्रशंसा रावल समरसिंहजी के नाम से की है और एक स्थान में उनको आशीस देने में ये शब्द लिखे हैं-

(१) कलंकियां राय केदार ॥
(२) पापियां राय प्रयाग ॥
(३) हत्यारां राय बणारसी ॥
(४) मदवान राय राजान री गंग ॥
(५) सुलतान ग्रहण मोरवन ॥
(६) सुलतान मान मलन ॥

इन पदवियों से मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंहजी (सांगा) की ओर संकेत है"-इत्यादि ॥

अब विद्वानों को रासो के उस रूपक को अवलोकन कर के परीक्षा कर समझना चाहिये कि जिसमें से यह वाक्यखंड उद्धृत किये गये हैं, वह रूपक यह है-

छंद पद्धरी ॥ सामंत सब्ब मनुहार कीन। प्रोहित्त राम आसीस दीन ॥
हरि सिद्धि द्दिष्ठु बरदान भट्ट। उच्चर्यौ चंद पैपै सु घट्ट ॥
दुहु पष्य चवर सिर धरिय छत्र। बरदाइ देत आसी तत्र ॥

उठियो सिंघ बरदाइ देषि । बोलंत बिरद बहु बिधि विसेषि ॥
चीतोर राज काइम्म कीन । षुम्मान पाट पग अचल दीन ॥
मेर गिरि सरिस चित्तोर मानि । किरनाल तेज बद्धे षुमान ॥
जैचंद समह जिन जुद्ध कीन । मानों कि उरग जनु मोर पीन ॥
कलंकिया राय केदार राय । कवदेत बिरद मनउमँग चाय ॥
पापी राय प्राग वड समान । कप्पन दरिद्र करतार जान ॥
हित्यार राइ कासी अभंग । मदुआंन राइ गंगा उतंग ॥
सुरतान मलन बंधन समोष । हिंदून राइ टालच दोष ॥
उज्जैन राइ बंधन समथ्थ । आचार राइ गुजष्टरह पथ्थ ॥
भीमंगराइ भंजन सुषेत । जस लयौ धवल राजिंद जैत ॥
रिनथंभ राय सिर दंड कीन । अब्बुआ राइ गढ लेइ दीन ॥
उथ्थाप राइ थापन समथ्थ । सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ ॥
दष्यनी साह भंजन अलग्ग । चंदेरि लिद्ध किय नाम जग्ग ॥ ४१ ॥

हमारे पाठकों को इस रूपक का तात्पर्य निकालने के पहिले यह जान लेना अत्यावश्यक है कि वह रासो के **समरसी दिल्ली सहाय** नामक समय में का है। रासो की किसी पुस्तक में तो यह समय पृथक है और किसी में वह **बड़ी लड़ाई** नामक समय के आदि में ही मिला हुआ है। इस रूपक के अन्तरगत वृत्त का प्रसंग यह है कि रावल समरसीजी अपनी महाराणीजी श्री पृथाबाईजी सहित अपने साले पृथ्वीराजजी की सहायता करने को चितोड़ से दिल्ली पहुंचे और वहां उनका आदर सम्मान वहां के सब राज-पुरुषों ने करना प्रारंभ किया कि उसी प्रसंग में महाकवि चंद बरदाई ने भी वैसे ही रावलजी को आशीस दी कि जैसे वर्तमान काल में प्रत्येक देशी राजस्थानों में चारण और राव आदि स्तुति पाठक दिया करते हैं। रावलजी श्रीसमरसीजी में जो जो मुख्य गुण थे और उन्होंने जो जो बड़े बड़े काम अर्थात् शौर्य्य किये थे उन सब को उनकी प्रशंसा में कवि चंद ने प्रयोग करके यह बिरदावली कही है। अब इसमें यह बात विचारने की है कि कविराजजी ने जो इस रूपक में के-"कलंकिया राय केदार" "जैसे विशेषणों का महाराणाजी श्रीसंग्रामसिंहजी (सांगा) की ओर संकेत होना अनुमान करके रासो के जाली बनने के समय के प्रारंभ का सं० १६४० निश्चय किया है वह इस मूल रूपक के अवलोकन करने से सत्य मालूम होता है कि नहीं। यदि हम कविराजजी के अनुमान का यथार्थ होना भी मान ले परन्तु इस रूपक में-"कलंकिया राय केदार"-आदिक के साथ ही-"जैचंद समह जिन जुद्ध कीन-और"-"सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ" जैसे स्पष्ट विशेषणों के वाक्य खंडों को हम महाराणाजी श्रीसांगाजी में कैसे घटा सकते हैं। क्या यह बात विद्वानों के कहने की है कि-"जैचंद समह जिन जुद्ध कीन"-और-"सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ"-जैसे स्पष्ट विशेषणों को छोड़ देना-और-कलंकिया राय केदार"-आदिक को ग्रहण कर लेना। यदि कविराजजी ने इन-"कलंकिया राय केदार" आदिक को सांगाजी पर घटा कर केवल उनही तुकों को क्षेपक बताया होता तो भी यह एक प्रकार से कुछ ध्यान में बैठने जैसी बात होती। हम यह भी नहीं समझ सकते हैं कि इस रूपक से सं० १६४० कैसे सिद्ध होता है क्योंकि महाराणाजी श्रीसांगाजी का राज्य समय विराजजी के मानने के अनुसार सं० १५६५ से सं० १५८४ तक ही होता है। और संवत् १६४० का वर्ष महाराणाजी श्री बड़े प्रतापसिंहजी के राज्य समय सं० १६३३ से १६५३ तक में आता

है । रासे। की सं० १६३१ । ३२ और १६४५ की लिखित पुस्तकें हमारे पास विद्यमान हैं । तथा अकबर बादशाह ने पृथ्वीराज रासो की कथा अपने दरबारी भाट गंगजी से सं० १६२७ । २८ में सुनी थी कि जिसके वृत्तान्त की एक सं० १६२९ की लिखी हुई **चंद छंद वर्णन की महिमा** नामक पुस्तक हमको प्राप्त हे। चुकी है और उसीके साथ जो समय स० १६४० से १६७० तक का रासे। के जाली बनने का अनुमान किया गया है उस समय में मेवाड़ में एक राणारासो नामक ग्रंथ राव दयाल कवि ने बनाया है कि जिसको भी हमने शोध काढ़ा है । इस राणारासो की पुस्तक सं० १७०५ की लिखी हुई प्रति से हमने अपने पुस्तकाल के लिये एक प्रति करवाई है और हमारी प्रति से बहुत से अन्य भद्रपुरुष प्रतियें करवाते हैं । खैर यह सब बातें तो जाने दीजिये और एक इस छोटी सी बात पर ही ध्यान दीजिए कि रासो की उन सब पुस्तकों के अंत में की जो मेवाड़ राज की एक पुस्तक से प्रति हुई हैं मूल पुस्तक के लिखनेवाले लेखक के लिखे हुए नीचे लिखे छंद प्राप्त होते हैं कि जिनमें यत्किंचित वृत्त लिखा हुआ है। ये छंद हम आशा करते हैं कि उन पुस्तकों में भी अवश्य होंगे कि जो एशियाटिक सोसाईटी बंगाल के पुस्तकालय में हैं—

कवित्त ॥ मिली पंकज गन उदधि । करद कागद कातरनी ॥
कोटि कवी काजलह । कमल कटिकतें करनी ॥
हितिथि संख्या गुनित । कहै कक्का कवियांने ॥
इह स्रम लेषन हार । भेद भेदै सोइ जानै ॥
इन कष्ट ग्रन्थ पूरन करय । जन बभ्या दुष नां लहय ॥
पालिये जतन पुस्तक पवित्र । लिषि लेषक विनती करय ॥ १ ॥
गुन मनियन रस पोइ । चंद कविनय कर दिद्धिय ॥
छंद गुनीतें तुट्टि । मंद कवि भिन भिन किद्धिय ॥
देस देस बिष्षरिय । मेल गुन पार न पावय ॥
उद्दिम करि मेल वत्त । आस बिन अलस आवय ॥
चित्रकूट रान अमरेस नृप । श्रीमुष आयस दयै। ॥
गुन बीन बीन करुना उदधि । लषि रासै। उद्दिम कियै। ॥ १ ॥

दोहा ॥ लघु दीरघ ओछों अधिक । जो कछु अंतर होई ॥
सो कवियन मुष सुद्धतें । कहो आप बुधि सोइ ॥ ३ ॥

इन छंदों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि किसी **कक्का** नामक पुरुष ने मेवाड़राज्य के अाधीश बड़े श्री अमरसिंहजी (चित्रकोट रान अमरेस नृप) के आज्ञानुसार राज के पुस्तकालय के लिये उक्त पुस्तक लिखी थी । इन महाराणाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार सं० १६५३ से १६७६ तक का है । जब कि मेवाड़ राज की पुस्तक का उसकी अन्य प्रतियों से सं० १६५३ से १६७६ के बीच में लिखा जाना अनुमान होता है तो फिर इस समय में जाल बनना भला कोई कैसे मान सकता है । अब रहा संवत १६७७ की भविष्य वार्ता का विदित करने वाला दोहा उसके विषय में हमने अपनी संरक्षा के लेखखंड २७ पृष्ठ ३५ में सविस्तर कह दिया है अतएव यहां कुछ अधिक नहीं वर्णन करते ॥

४ यद्यपि इस महाकाव्य के जाली बनने के अनुमान का प्रश्न तो रीति से किया गया है कि इस ग्रन्थ में लिखे पृथ्वीराजजी के समय के मनुष्यों के नाम और वृत्त उस समय की मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुओं से नहीं मिलते हैं परन्तु जिस प्रकार से उस प्रश्न का निर्णय किया

गया है उससे प्रश्नकर्त्ता की प्रतिज्ञाहानि और हेत्वाभास स्वयम् सिद्ध हैं । हमने इस विषय में अपनी लिखी पृथ्वीराज रासो की संरक्षा की अंग्रेज़ी पुस्तक के पृष्ट १५ और ३७, लेखखंड ११ और २८ और हिन्दी की के पृष्ठ १८ और ३९ और लेखखंड ११ और २८ में बहुत कुछ लिख कर प्रकाश किया है । क्या जितना अंश इस महाकाव्य का मुसलमानी तवारीखों से मिलता हुआ है वह उसके बनानेवाले ने उन तवारीखों को सोलहवीं सद्दी में पढकर यह जाल निर्माण किया है? क्या उस समय की हसन निज़ामी की तवारीख़, तबक़ात नासरी, और अब्बुलफ़िदा, आदि नामक तवारीख़ों में परस्पर कोई ऐसे विरोध नहीं हैं और क्या वे एक दूसरे से सर्व प्रकार से परम सम्मत हैं? कविराजजी ने स्वयम् यह स्वीकार किया है कि तबक़ात नासरी ने मनुष्यों के अशुद्ध नाम लिखे हैं और अब्बुलफ़िदा ने संवत ही नहीं लिखे हैं फिर उनके दोषों से यह महाकाव्य क्योंकर दूषित हो सकता है? क्या उक्त मुसलमानी तवारीख़ों के कर्त्ताओं ने सब वृत्त यथातथ्य लिखकर केवल सत्य ही लिखने और मिथ्या कुछ भी न लिखने का एक झंडा हाथ में लिया है? देखो क्या यह शोक की बात नहीं है कि तबक़ात नासरी का ग्रंथकर्त्ता बिचारा स्वयम् कहता है कि जिस वर्ष में पृथ्वीराजजी की अंतिम लड़ाई हुई थी उसमें तो वह उत्पन्न हुआ था और उसके ३५ वर्ष पीछे वह पहिले ही पहिल हिन्द में आया था, उसने जो कुछ इस विषय में लिखा है वह उसने एक मनुष्य से सुनकर लिखा है, फिर हम नहीं जानते कि कविराजजी मिनहाज-इ-सिराज जैसे एक भले आदमी को क्यों प्रत्यक्ष प्रमाण की साक्षी में घेरते हैं । हम पृथ्वीराजरासो और उस समय की सब मुसलमानी तवारीखों को एक दृष्टि से देखकर यह कहते हैं कि जिस जिस ग्रन्थकर्त्ता ने जो, जितना, और जैसा, देखा और सुना, वह उसने अपनी इच्छा और शैली के अनुसार लिखा है; यदि उनमें से किसी की कोई बात हमको अयथार्थ प्रतीत और सिद्ध हो तो हम उसको अस्वीकार कर सकते हैं, किन्तु हम उनमें से किसी को भी लार्ड हेस्टिङ्गस् के समय में जैसे नन्दकुमार को जाल के अपराध में फांसी की शिक्षा दी गई है वैसी शिक्षा विद्वानों के हाथ से कदापि नहीं दिलाना चाहते । निदान हम फिर भी प्रसन्नता और विचार पूर्व्वक कह सकते हैं कि प्रत्येक ग्रन्थकर्त्ता ने अपने अपने ज्ञान के अनुसार ऐतिहासिक वृत्त लिखे हैं चाहे उसमें कोई बात असत्य भी क्यों न हो परन्तु उस असत्य बात के कारण से आदि से अंत परियंत कोई ग्रन्थ जाली नहीं हो सकता । इस बात के मान लेने में हमको कोई लज्जित होने की भी बात नहीं है कि यह पृथ्वीराज रासो चंद का लिखा हुआ सच्चा है, उसके दो एक समय उसके बड़े बेटे जल्ह के लिखे हुए हैं और उसमें जो कहीं कहीं कुछ क्षेपक अंश पीछे से किसी ने मिलाया होगा वह विद्वानों की परीक्षा करने से स्वयम् तरजावेगा । अब तो कोई बात अडचल की रही ही नहीं है क्योंकि यह आदि पर्व्व तो हमने यथाशक्ति संशोधित करके अपने पाठकों की सेवा में अर्पण कर ही दिया है, कि उसीसे हम इस महाकाव्य की अकृत्रिमता की परीक्षा करना प्रारंभ कर सकते हैं और प्रति मास में हम यह भी सिद्धान्त कर सकते हैं कि यहां तक तो कुछ जाली अंश है अथवा नहीं ।

इस बात के जानने से हमारे पाठकों को बहुत प्रसन्नता होगी कि हमको शोध करने से पृथ्वीराजजी और रावलजी श्रीसमरसीजी और महाराणी श्रीपृथाबाईजी के थोड़े से खास रुक्के और पट्टे परवाने प्राप्त हुए हैं कि जिनमें वही अनन्द विक्रमी संवत् है कि जो पृथ्वीराज रासो में लिखा हुआ मिलता है । इन सब के फोटोग्राफ हमने एशियाटिक सोसाईटी बंगाल को

पृथ्वीराजजी, समरसीजी और पृथाबाईजी के खास रुक्के पट्टे परवाने आदि

भेंट करने तथा उनकी सत्यता की परीक्षा करने के लिये अपने स्वदेशी परम प्रसिद्ध विद्वान राय बहादुर डाक्टर राजा श्रीराजेन्द्रलालजी मित्र एल० एल० डी०, सी० आई० ई० की सेवा में भेजे हैं। उक्त डाक्टर साहब अकस्मात् रोगग्रस्त हो गये कि जिससे यह हमारे बड़े परिश्रम से शोध किये हुए लेख उक्त विद्वत् मंडली में प्रवेश नहीं हो सके हैं किन्तु हम को आशा है कि राजा साहब के नैरोग्य होते ही उक्त लेख सोसाईटी में प्रवेश होकर यह विषय विद्वत् मंडली में छिड़ेगा। यह विषय अभी हमारा सौंपा हुआ एक महान पुरातत्ववेत्ता विद्वान के हाथ में है अतएव हम उन लेखों की प्रतियों तथा अपने निज विचारों को प्रकाश नहीं कर सकते परन्तु इतना तो निःसंदेह कह सकते हैं कि अभी तक हम उनको अक्रित्रिम समझते हैं और ऐसा समझने को सतर्क सिद्ध भी कर सकते हैं। इसके साथ हमको इस कहने में कुछ भी लज्जा नहीं है कि यदि उक्त डाक्टर मित्र, हमारे विद्या-गुरु डाक्टर हार्नली साहब, मिस्टर ग्राउस साहब और मिस्टर ग्रियरसन साहब, जैसे पक्षपात रहित और सहसा सिद्धान्त न करने वाले पुरातत्ववेत्ता विद्वान उनको अप्रमाणिक सिद्धकर ग्रहण करेंगे तो हम भी उनही से सम्मत होंगे क्योंकि हमको किसी बात का वास्तव में दुराग्रह नहीं है वरन इसमें भी कुछ संदेह नहीं है कि जो कोई अन्य मनुष्य बिना किसी योग्य कारण के हमारे स्वदेश और उसकी विद्या पुस्तकों को दोष दे तो हम उस दशा में उनके एक बड़े कट्टर पक्षकार हैं॥

अंत में हमारा सब विद्वानों से यही सविनय निवेदन है कि वे इस महाकाव्य को उसकी भले प्रकार परीक्षा कर के पढ़ें और पढ़ावें और जो कहीं उसमें कुछ हमारा कहना तथा कोई अनुमानादि का करना अयोग्य प्रतीत हो तो हम को क्षमा करें। यही प्रार्थना हम विशेष कर

समाप्ति

के अपने मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी की सेवा में भी करते हैं क्योंकि उनके विचारों और अनुमानों का हमने विशेष करके एक वलिष्ट भाषा में खंडन कर अपने स्वदेशाभिमान और उसकी हिन्दी विद्या की रक्षा की है। इसके साथ यह भी वक्तव्य है कि जैसे हमने इस उपसंहारिणी टिप्पण में इस महाकाव्य के पांच चार विषयों के विषय में अपने विचार प्रकाश किये हैं वैसेही चंद के व्याकरणादि जैसे शेष विषयों के विषय में भी हम यथावकाश लिखेंगे। इत्यलम्॥

अथ दसम* लिख्यते ।

[दूसरा समय ।]

हरि रूप का मंगलाचरण ।

साटक ॥ सो ब्रह्मा सो इन्द्र ईति भजनं, ईपाल ईयं हरं ॥
पिट्ठे निठ्ठ कमठ्ठ साइर उरं, जठराग्नि वारी वरं ॥
सो भानं विधि भान नेच कमलं, बाहौ गिरं ग्रभ्भियं ॥
जंघा अष्ट कुला चलं न ग्रभितं, जै जै हरी रूपयं॥ छं०॥१॥रू०॥१॥

दशावतार का नाम स्मरण ।

चौपाई ॥ मछ्छ कछ्छ वाराह प्रनम्मिय । नारसिंघ वामन फरसम्मिय ॥
सुअ दसरथ्थ हलद्दर नम्मिय । बुद्ध कलंक नमो दह नम्मिय ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २॥

दशावतार की स्तुति ।

विराज ॥ करे मछ्छ रूपं। धरेना अनूपं ॥ बधे संष धूपं । वरे वेद भूपं ॥३॥
* * * * । * * * ॥ * * । नमो मछ्छ रूपं ॥४॥
धरा पिठ्ठ तिठ्ठं ! कनंगे गरिठ्ठं ॥ जले धार दिठ्ठं । नमो तो कमठ्ठं ॥५॥
स्वयं दे वराहं । हयग्रीव गाहं ॥ रदग्रे इलाहं । उपम्माति चाहं॥६॥

---

* इस समय में दशावतार की कथा होने के कारण चंद ने उस का नाम दशम रक्खा है ॥

१ पाठान्तरः-सौ । सो । ईंद्र । भजन । इयाल । हारे । हरिं । प्पिठैं । पिठे । निठ । निह । कमठ । कमह । साईर । जराग्नि । वरं । सो । भांन । नैत्र । कमल । बांहो । गरभितं । ग्रभ्भित । जवा । गभ्भितं । हरि ॥

२ पाठान्तरः-मछ । कछ । प्रनंम्मियं । नारसिघ । फरस्सम्मिय । फूसरंम्मियं । सुत । सूअ । दसरथ । हलधर । नंमियः । रंम्मीयं । बुध । कमल । नमौ । दद । नम्मींयं । रामिय ॥

३ पाठान्तरः-करै । मछ । सिरैनारनुपं । बंधे । भुपं । धरै । वैद । भुपं । नमौ । मछ ॥ ३-४ ॥ पिठ । तिठं । तठ्ठं । तठं । कणंजो । गरिठं । दिठं नमो तै । कमठं ॥ ९ ॥ सुव । दैं । हयं । ग्राहं । रदैग्र । इलादं । उपम्मांति । उपंमाति । सेषगाहं । नमौ । तै । त ६-७ ॥ हरंनष्य ।

* * * । * * * ॥ ससी सेष राहं। नमो ते वराहं ॥७॥
हिरन्नष्य वीरं। प्रह्लाद पीरं॥ उठे षंभ चीरं। महा बीर बीरं॥८॥
* * * । * * * ॥ बढी पंक नीरं। नमो ध्रम्म धीरं ॥९॥
मृगंकस्य ऊरं। नषं तोरि तूरं। बजी दठ्ठ पूरं। थपे जान जूरं॥ १० ॥
दया सिंधु मूरं। कुकंपीस भूरं॥ नटी लछ्छि नूरं। धवी अंषि धूरं॥ ११ ॥
भयं देव दूरं। नियं भत्ति भूरं॥ थुती पानि जूरं। नमो सिंघ ह्वरं॥ १२ ॥
बली राइ अग्गी। छली भूमि मग्गी॥ लुके बंभ तग्गी। मुष वेद जग्गी॥ १३ ॥
निषे गंग लग्गी। सुलोकी सुक्षग्गी॥ तिह्लं लोक बानी। रिजे देव गानी॥ १४ ॥
प्रसन्नौ बलिज्जा। दईभोमि सज्जा॥ चिलोकी तिडग्गी। नमो वाम लग्गी॥ १५॥
पिता बाच मानं। हते ग्रभ्भ थानं॥ सहस्र भुजानं। रुधिद्राधरानं॥ १६ ॥
नछची छितानं। दई विप्र दानं॥ सुरानं प्रमानं। नमो पर्सरामं॥ १७ ॥
हरे राम ग्यानं। सु रामं सुरानं॥ रघूबीर रायं। दया देह कायं॥ १८ ॥
सु वैदेहि दायं। सुमित्रै सषायं॥ विसामित्र सष्यं। षरं दूष नष्यं॥ १९ ॥
सुपर्नी सहायं। तडिक्की निहायं॥ बटीपंच पत्ते। मृगं चाप हत्ते॥ २० ॥
रजं वारि दंती। जमं जाममंती॥ मतं मेघ कंती। * * *॥ २१ ॥
धनं धार भारी। मरीचं प्रहारी॥ सुत्रं सुद्धकारी। हनुम्मान धारी॥ २२ ॥
गऊतम्म नारी। सिला तुंग तारी॥ जरी लंक चाही। पुरी हेम दाही॥ २३ ॥
रिछं बानरायं। भए सो सहायं॥ हनुम्मान तायं। दधी सीस आयं॥ २४ ॥
पषानं तिरायं। सुहिद्रा सहायं॥ हनूमान रही। समुद्देस बही॥ २५ ॥

हिरंनष। हारिणाष्यदाहं। प्रहलाद। पहह्लाद। उठै। मनौ। ध्रंम। उरं। नूरं। जांनि। दया। दधिपुरे। कुकंपिस मूरं। लछि। नुरं। धषी। अंष। धुरं। धुर। दैव। दुरं। भांति। भति। भुरं। थूती। षानि। पांनि। जुरं। नमौ। सि॥ ८-१२ ॥ राप। अग्गै। लछी। छलै। भुमि। मग्गै। मग्री। लुकै। तग्गै। तगी। मुष। मुषे। वैद। वेदं। जग्गै। जगी। नषै। नेष। लग्गौ। लगी। लोंकी। स। भंगौ। भगी। तिहौं। लौक। बांनी। रिझै रिझैं। दैव। ग्यांनी। गांनी। प्रसन्नो। बलीजा। दइ। भुमि। भूमि। सजा। सिज्या। त्रिलौकेतडग्गो। ठगै रूठ ठगौ। तडकी। वांम-नग्रीं ॥ १३-१५ ॥ ता वचमार। ग्रभ। थांनं। सहश्रं। रुधिजा। रुधिज्रा। नाछित्री। दइ। प्रनामं। नमौ परसरामं। पर्शुरामं ॥ १६-१७ ॥ हरै। रांम। राम। सुमित्रे। विश्वामित्र। मष्यं। मषं। हरैदुकरिष्यं। सपत्नी। सुपर्णी। सुर्पनी। ताडिका। बढी। बठी। पत्ती। मृगै। हतै। हते। रज। जंम जाम मतीः। मत। मैघ। भारी। भरी। मरीचं। सय संधिकारी हनुमांन। गउतम्। गउमंत। सिलाक त्रुंग तारी। चाहा। हेन। हैम। रिछं। बांनरायं। बंनरायं। सौ हनुमांन। दरदी।

तजे बीर हथ्थं। सँदेसं सुकथ्थं॥ जहां लंक गढ्ढं। तहां बग्ग बढ्ढं॥२६॥
उहां सीय दिष्षी। हुंती दुष्ष मुष्षी॥ दियं मुद्रितांम। सहिन्नान रामं॥२७॥
दसानन्न आदं। गयं मेघनादं॥ करे कुंभ चूरं। भरे वान भूरं॥२८॥
सती सीय अंभी। कियं काज बंभी॥ त्रिकूटेस नाथं। बभीषन्न हाथं॥२९॥
प्रसून विमानं। चढे वेगियानं॥ अयोध्या सपत्ते। नमो राम मत्ते॥३०॥
बसुद्देव अैनी। बरी कंस भैनी॥ बियं पानि बद्धं। पुरानं प्रसिद्धं॥३१॥
जयं जग्ग धारी। दियं दान भारी॥ रथं आप रूढे। समं कंस मूढे॥३२॥
अकासे सुबानी। अवन्ने गियानी॥ उवं षग्ग झारे। अनुज्जां प्रहारे॥३३॥
बरं पानि बद्धे। सुवाले अबद्धे॥ इयं ग्रब्भ पुत्तं। रुके तथ्थ दत्तं॥३४॥
सतं किस्न दिस्नं। भये राम किस्नं॥ प्रथंमं सुभद्दं। तिथी पष्ष अद्दं॥३५॥
नषत्रं सु रोही। भुजं जन्म सोही॥ चतुर्बाहु चारं। किरीटं सुहारं॥३६॥
सतं पत्र नेनं। क्रने कुंडलेनं॥ नियं मुक्ति नासी। इयं अब्बिनासी॥३७॥
सदा लच्छि दासी। चरंनं निवासी॥ मुखं मंद हासं। चतुर्वेद भासं॥३८॥
भ्रगू लत्त गत्तं। प्रभासी प्रभुत्तं॥ मनी नील सीतं। कटी पट्ट पीतं॥३९॥
स्वयं ब्रह्म देही। नियं नंद गेही॥ विषं पूतनायं। पियं दूध तायं॥४०॥
सकट्टं प्रहारै। ब्रजज्जा विहारै॥ तिनं ब्रत्त तानी। उवं आसमानी॥४१॥
प्रभू ग्रीव लग्गे। तिनं ताम भग्गे॥ रिषी स्राप आपं। नलं कूब तापं॥४२॥
दहं देवदारं। ब्रजंजा कुमारं॥ नवं नीत चोरं। दही मट्ट ढोरं॥४३॥

रदी। समुदेस। वदी। तिनै। हाथ्यं। हथं। सैंदेसं। संदेसं। कथ्यं। कथं। तहा। गढं। तहा वग बढं। उहा। दष्यी। दिषी। हुंती। दुष मुषी। दीयं। सहं। दानरामं। सहंनान। दसानन्न। आदी। मयं। नादी। करै। चुरं। भरै। वानं। भुरं। अभी। किय। बभी। कुंटं। बभीषन। प्रसूत। विमांनं। चडैवैगि। आनं। अज्यौध्या संपत्ते। संपन्ते। नमौ। रांम। मंते॥ १७-३०॥ वसुदेव। अैंनी। वसूदेव। भैंना। बीयं। पांनि। प्रासिद्धे। प्रसद्धे जांगधारी। सूढं। मुढै। अकासै। बानी। अवन्मै। गियांनी। ऊवं षग। झारै। अनुंज। प्रहारैं। पानि। बध। बद्धै। बाले। अवद्दै। अवधे। गभ। पुंत। रुकैं। तथ। दंतं। दत्तं। किसन दिसनं। क्रिटमं। प्रथमं सभद्दं। प्रथमं सभद्दं। परक। पत्र। पष्य। निषित्रां। निषित्रं। रौहा। सोहा। चत्रुत्रहु चारू। किसढा सुं हारू। चनुत्रहि। किरीटा। नेनं। नैनं। क्रंनं। कुनै। कुंडलैन। कुंडलैं मंनं। अयं अयं आविनासी। अयं। अविनासा। लछि। चरंनै। चरंने चतुर। वैद। भृगू। भ्रगू। प्रभुतं। देहा। ग्रेहा। पुतनायं। पीयं। धूत नाये। सकट्ट। सकटं। वृजंजा। वृज्जजा। विहार। तिना। वृत। प्रभु। ग्रीव लगै। तांम। भगैः। भग्रे। रिषि आप आपं। देव दारं। वृजजा। कुंमारं। चोरं। मटढोरं।

कियं गोप सोरं। अनोषं किसोरं॥ ग्रही दान पानी। जसोदा रिसानी ॥४४॥
सिसू उष्ष सद्दे। किहौं बंध बंधे॥ सुयं ब्रह्म लेष्यो। अचिज्जं सपेष्यो ॥४५॥
लघू दीर्घ इंदं। कला की गुविंदं॥ररोषं सहासी। मुकत्ती निवासी ॥४६॥
सुतं जष्ष राजं। कियं ऊर्द्ध काजं। द्रुमं गात बीची। परे व्रष्ष सिंची॥४७॥
युती बंध पानं। प्रसिद्धे पुरानं॥ वरूनं पिवासी। ग्रहे नंद ग्रासी॥४८॥
जिते लोक पालं। व्रजं जाल वालं॥ बधी धेन मारै। प्रलंबं प्रहारै ॥४९॥
मुषे काल वयालं। सिसू वच्छ पालं॥ कली उत्तमंगं। कियं न्नित्तरंगं॥५०॥
व्रजं वारि लोपं। मधू मेघ कोपं॥ परी व्रज्ज धारा। गिरं धारिधारा ॥५१॥
नषे सैल सारं। त्रिभंगी त्रिसारं॥ पुरंदं पुलानं। व्रजे वानि सानं ॥५२॥
निसा अंध घोरं। कियं गोप सोरं॥ धरा नील रैनं। तजयौ देव सैनं ॥५३॥
कचं वक्र वैनी। भ्रमी भूरि सैनी॥ स्रुती कुंडलीनं। दुती काम लीनं ॥५४॥
चषं पुंडरीकं। बपं मेघ लीकं॥ नसं मुक्ति सारै। निसामेक तारै ॥५५॥
धरो सुद्ध हासं। करै देव बासं॥ रदं छद्द मुद्दं। नगं कोक नद्दं॥५६॥
ग्रिवा कंबु रेषं। भुजाकित्त सेषं॥ बयज्जंत मालं। उरै सो विसालं ॥५७॥
लियं बेत सेली। बने जाम केली। जसोदा जगायं। मृगे सिंग वायं ॥५८॥
जिते गोप सथ्थं। दही पत्त हथ्थं॥ बनेजा बिहारी। गऊ बच्छचारी ॥५९॥
अगं कांन मुद्दे। दियं हेरि सद्दे। नियं ग्रेह चारी। हसे गोपभारी ॥६०॥
सतं पच पुत्तं। अचिज्जं सुहित्तं ॥ नियं तप्प लागं। हरे बच्छ भागं ॥६१॥
स्वयं स्याम चित्तं। धरयो ध्यांन हित्तं॥ नियं नंद पुत्तं। मला नं सजुत्तं ॥६२॥

गौप। सौरं। अनौषं। किसौरं गहीदांन पांनी। जसौदा रिसांनी। सिसुर्उष्य। सायं। आंचिज्जस। लघु दीघ। जष्य। उरद्ध उर्द्ध। उर्द्ध। द्रूम। परे वृष्य। सीवीं। सांची। थुंती। प्रसिद्धे विपासी। ग्रीहे। गृहे। जितै लौक माल। वृज। बंधी धैन सारे। प्रलंबे प्रहारे। मुषै। वछ। उतमंग। कियनृत्यरंगं। नृत्यानृत्त। विृज। वृजं। लौपं। मधुमैव कौपं। वृज। धाए। गिर धारि बाए। नषै सौरसालं। शैल। त्रिभगी त्रिसालं। पुरदं। वृजेवा। वृजैवा निसांनं। घौरं। कीयं वृजसौरं। रने। कंचवक्र अैनी। अैनी। भृमी। भमी। भुरि। सैनी। स्लती कुंद्ब लीनं। कांम। पुंडरीकं। चपं मैव लौकं। नासं मुतिसारे। निशा। मैक। तारे। सुद्धि। सुांध। करें। रद छंद मुंद। रदं सद मुदं। नागं कौक नदं। कबु। रैषं। सैषं। शेषं। बयजत। उरे। सौ। वैत। सैली। वनै जांम कैली। जसौदा। गृगैसिगंबायं। जिते। गौप सथं। दहीपन हथं। वनैजा। गौचछ चारी। बछ। अग कांन मुदै। दिऐ। सदै। निय गहै चारी। गेह। हसे। हसै। गौप। पत्र पत्रं। अचिजं सुहितं। तप। हरे। वछ। स्यांम वितं। ध्यांन। हितं। निय। मिलानंस। कीयं। सौंक।

कियं सोक कोपं। कहां वछ्छ गोपं॥ हरे ब्रह्म ग्यानं। पुरष्षं पुरानं॥६३॥
रचे किष्ण सोची। चियं अंब रोची॥ तिनें रंग नेहं। अपं अप्प गेहं॥६४॥
तनं संष चक्रं। चतुर्बाह वक्रं॥ पियं पट्ट बंधे। सहं ग्वाल नंधे॥६५॥
अचिज्जं बिहारी। नले ब्रह्मचारी॥ भ्रमे लोक पालं। बियापै सुकालं॥६६॥
* * * । * * *॥ युती सा मुरारी। सु ब्रंह्मं विचारी†॥
छं०॥ ६७॥ रू०॥ ३॥

भुजंगी॥ न रूपं न रेषं न सेषं न साषा। न चंद्रं न तारा न भानं न भाषा॥
अविद्या न विद्या न सिद्धं न सादी।तुही ए तुही ए तुही एक आदी॥६८॥
न अंभं न रंभं न रुद्रा न पाया। न सेतं न नीलं न पीतं न गाया॥
न काया न मोया न षाया न छाया। तुही देव सद्देव सिद्धे न पाया॥६९॥
तुही सर्व माया दिषायान माया। तुही सर्व माया तुही घाम छाया‡॥
न बंभा न रंभा न रुद्रे न देहं। न मंद्रे न माया न राया न गेहं॥७०॥
न सैलं न गैलं न तापं न छाया। न गाहा न गीतं न श्रोता न ताया॥
न प्रव्वी न पालं म्रजादं न मादं। न तारी न वारी न हारी न नादं॥७१
नवे मेष रेषं न भूरी न भारी। नवे ध्यान मानं न लग्गं न तारी॥
न लोकं न सोकं न मोहं न मादं। तुही ए तुही ए तुही एक आदं॥७२॥
तहां पै न तारं न बारं न बीरं। नयं दठ्ठ मठ्ठं न ध्यानं न धीरं॥
नहं जोति हस्तं न वस्तं सरुष्पं। तहां तू तहां तू तहां तू गुरष्पं॥७३॥
प्रक्तत्तं प्रथंमं चयं तत्त जोई। तहां नभ्भ तेता सरोजं न सोई॥
न माया न काया न हाया न होई। तुही देव सा देव साधा न सोई॥७४॥

कौपं। कहा। वछ। गौपं। हैरे। ग्यांनं। पुरुषं। रचंकिध्य सोची। सोची। अयं त्रंब रोची! त्रयं त्रंब रोची। तिनं रंग नेहं। अप अप्प गैहं। तन। चतुर। बंधै। नधे। अविज्जं। नलै। भ्रमे। लौक। सारारी ब्रह्मं। * पाठ नहीं मिले॥ † सं० १८९९ में है अन्य में नहीं॥

४ पाठान्तरः—रूवं। रेषं। सैषं। शेषं। शाषा। चन्द्र। नरूभान। भाषां। चंद। नरूभान। भाषां। त्रुहीं। अदी। अम्भं। अंभ। रभं। रुद्धा। सैनं। नील। नं। नकाया। बाया। तुहीं। दैव। सदैव। सिद्धै। पीया। † यह तुक सं० १८९९ की में नहीं है अन्य में है। सरव। दिषायान। सरव। तुंही। थांम। थंभा। संभा। घंभां। रूद्रा। रुद्रा। मंदै। नया। गैहं। ग्रेहं। शैलं। मगाहा। श्रोत। नं। प्रवीनं। नंपालं मृजांद। मृजादं। नवारि नवारी हारी। नांदं। नवै। मैष। रैषं। भुरी। नवै। ध्यांन। मांनं। लगे। लौकं। सौक। शोकं। मोदं। पें। नंय। दठ। मठं। ध्यांन। धारं। तही ज्यौति। नहायोति। सरूष। तु। तू। तौ। सुरुषं। पुरुषं। प्रकतं। प्रथमं। त्रथं। तत। जोंइ। तौहि। तहा। नभ। तैता। सरौजं। सौइ। † सं० १७७० और १८४९

तुही अंबुजा अंबुकामिन्नि कामं। तुही तत्त कै तत्त रामं न रामं ॥
तुही दीप सूरं सिरं नभ्भ तेरैं। भुजा इंद्र तूही नभं नाभ फेरैं॥७५॥
सुयं सायरं पेट सा सुष्ष अग्गी। तुही तेज ब्रह्मंड सासीस लग्गी ॥
तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी। तुही तंच मंचं कवी चंद वादी॥७६॥
तुही राग जंचं जगचं बजावै। तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
भगव्वांन जंची सु वज्जंति लोई। सुरं राग बंधै बंध्यौ आप सोई ॥७७॥
प्रलै अंभ अंबं तुही हन्य बोधै*। तहांमोहि अग्या सु सिष्टं समोधै॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४ ॥

साटक ॥ किं सन्मान ससेव देव रजयं, दुष्टान उस्सासयं ॥
किं सुष्षानि दुषानि सेवन फलं, आयास भूमी मयं ॥
किं ईसं न सुरेस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥
किंरंनं छितया छितं सु कमलं, बंदे सदा विष्पयं ॥छं०॥७९॥रू०॥५॥

दूहा ॥ नंदकिसोर किसोर मग। निसि पुन्निम ससि अच्छ ॥
ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय। गोन मिले गुन बच्छ ॥ छं ॥ ८० ॥ रू० ॥ ६॥

॥ ब्रह्मोक्ति ॥

दूहा ॥ ब्रह्म कहै सुर सकल सों। गोकल हरि अवतार ॥
नारद सुर पति स्तुति करन। अप आए तिन वार ॥छं॥८१॥रू०॥७॥
प्रथम कित्ति रवि ससि करी। अहो देव देवेस ॥
तुम गुन बरनत जनम लौं। पार न पायो सेस ॥छं०॥८२॥रू०॥८॥

की में नहीं है। तुहां। अबुजा। मनि। तत। तत। राम। सूर। नभ। तैरं। तेरे। तेरैं। तुही। नभ। नांम। फेरैं। सोसुष। सामुष। अंगी। अष। ब्रहमंड। सुसीस। लगी। वृद्ध। तत्र। मंत्र। वाही। रगयंत्रं। तुही सार पंचै चलावै। भगवान। सुवजेति। लोई। वंधे। बंध्यां। सोहि।
* सं० १७७० की में नहीं है। प्रछै अभ अंब तुही। हन्यं। वाधै शिष्टं। समोवै। समोधे ॥

५ पाठान्तरः—इसकी पहिली तुक सं० १७७० की में "किं प्रलै अभ अबं नहा हन्य बोधै" है। सोन्मांन। सैव। दैवं। दुष्टांन। उछासयं। उसासयं। सुंषानि। दुषांनि। सेवनि। कि। इसं। सुरेस। सेस। शेस। ब्रंह्मान। ब्रह्मयान। ग्यांन। रन। दे सदा विपय। विपयं ॥

६ पाठान्तरः—नदकिसौर। किसौर। मिशि। पुनिम। यूनिम। शशि। अछ। ब्रह्मस्तुति। ब्रह्मा। ब्रह्मां। गौन। गोंन। मिलै। बछ। बछा ॥

७ पाठान्तरः—ब्रह्म। कहे। सौः। गौकल। किरन ॥

८ पाठान्तरः—कित्ती। करिय। अहो दव दैवेस। देवेश। तुमि। लों। पावै। पायो। शेश। सैस ॥

॥ मच्छावतार की कथा ॥

॥ वृद्ध नाराच ॥

प्रथम्म मछ्छ रूपयं, सरूप अंग नूपयं। सु पव्व रिष्षि तातयं, तमात मंत भूपयं। ८३
ठठुक्कि एक घट्टवांन, ता निसान बज्जही। अनेक देव रंजए, सुरंभ ग्यान सज्जही। ८४॥
विवान छित्त रंग कित्त जित्त षंड षंडही। करन्न एक हेत से त ता समंद मंडही। ८५॥
सुरंभ हद्द तब्बिकांन कित्त कथ्थिय चंदयं। बरन्न वान संकरे, जमात मोद कद्दयं। ८६॥
सु चंद स्हूर नेक भंति कित्ति जीह जंपही। कमल्ल केलि बंक मेलि बंधि सिंधु चंपही। ८७
सुदौरि दो दिसांन छोरि तोरि झोरि झंपही। सुरंज तंज जेज जेत तिष्य किष्य रंजही॥
सुरं सु देह विद्वहार कित्त कथ्थिय चंदयं। सु जोगथान जोगयं सपूरयं निकंदयं॥८८॥
सुमालयं न माल देव मालयं सुरज्जयं। दिसान दिस्स उच्चरं सरूप मछ्छयं जयं॥
श्रवंत लोक लोंक पाल फूल माल रंभयं। सुमंन्न देव सीस रज्जि बंचयं जयं जयं॥
छ० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ९ ॥

कवित्त ॥ सायर मद्धि सु ठाम। करन त्रिभुअन तन अंजुल॥
देव सिंगि रषि धरिनि। सिरन चक्री चष झंपल॥
गैन भुजा गज्जंत। रसन दसनं झुकि झांइय॥
एक करन ओढंत। एक पहरंत सवांइय॥

---

९ पाठान्तरः—मछ । सुरुपयं अनूपयं । सुपर्व । सुपरव । रिषि । भुपयं । ठठुकि । घंटवान । घट्टवांन । निसांन । अनैक । दैव । सज । छिछीह । छित । रंकग । कित । जित । करन । सैन । हैंन । सुरभ । हर । हद । तविकान । किति । कत । कथि । चंदयं । सु जौग थान । सकरैज । मौद । कंदयं । सुं चंव । मुर । नैक । भंति । लीह किति । जंपही । भंति जीह कित्ति जंपही । कमल । कैलि । मैलि । सांघ । सुदौरि वैरि दौ निसांन दौरि छौरि झंपही । दिसाने । छोर । छोरि । सुरगजतजजनैज तिषकिष रंजही । सुरंग जतं । जज । तेज । तिष । तिष्य । किष । दैव । विद्ध । किति । काथि । काथै । वंदयं । सुं । जौग । थांन । जौगयं । संपूरयं । नमाजयं न । माल दैव मालयं सुरजयं । दिशान । दिशि । दिसि । उचर । उचरं । सुरूप । मछयं । श्रवनं । लौकं । पाल आय । रजयं । सुमान । दिव । जय जयं ॥

१० पाठान्तरः—ककित्त । मद्धि सु मद्धि । मध्य । ठांम । करे । करै । अजुल । "दैव संगि सठि हय । सिवनं चक्रीवष झंझल" ॥ "देव संगि सटि हथ सिर चक्री चष झंझन्न" ॥ नैन । गेंन । गुरजन । गर्जंत । रसन रसन । झाइयं । झाईय । क्रंन । कन्न । उदयन । उदयं । त । पहरत । सवाइय । * बूंदी वाली में नहीं है । चलं । सत्त । सायर । इद्र । चलत । पग नलन कहि । लेंन ग्रहि ॥

चल चले सपत साइर अधर *। इंद्र नाग मन कवन कहि ॥
गिर धर चलंत पग मलनमल। लेन बेद अवतार गहि॥ छं०॥९२॥रू०॥१०

भुजंगी ॥ धरें गेन सीसं चले बेद रीसं। गदा मुदगरं दंत पारंत चीसं॥
पगं पिठ्ठ नठ्ठं कमठ्ठं डरानं। थके वेद ब्रह्मा कमठ्ठं भजानं॥९३॥
भगे जोग जोगं छुटे थांन थानं। छुटे विश्व लोकं महा लोक जानं॥
फटे कन्न रानं प्रथी लोक जानं। चितं रक्त लोकं भ्रमं लोक मानं॥९४॥
पुले पिच लोकं ब्रहं लोक देवं। * * * * ॥
सिवं कूट थानं हरं थान लोकं। जह्न रस्त लोकं परे सत्य सोकं॥९५॥
परे दिव्य लोकं सुरंगं सु पालं। ब्रहं राषिसं लोक भग्गेस कालं॥
परे निठ्ठ तठ्ठं कमठ्ठं रहानं। चले दैत संषं जुटे वेद रानं॥ ९६॥
ब्रह्मा भजानं न जानं कि जानं। धरंजा फटानं ग्रहं निठ्ठ भानं॥
परे लोक सोक करे देव कुक्कं। डकं डक बज्जी करै ईस डक्कं॥९७॥
ग्रहे ब्रह्म लिद्धं धरै वेद मुष्षं। गजे जोग सट्ठी हुवं दैत दुष्ष॥
करे मच्छ रूपं धरै धार धूपं। छिले सत्तयं सायरं अंध कूपं॥९८॥
परे छोनि छक्कं विछक्कं बरानं। करे कुंभ नद्दं विहद्दं सुनानं॥
तहां संषनं पानि संषासुरानं। नहीं पाव संषं प्रलंबं बरानं॥९९॥

११ पाठान्तरः—धरे। गैंन। चलै। मुद्गर। मुद्गरं। पंग। पिठ। नठं। नंठं। कमठं। झरानं। थकै। ब्रह्मा। कमठं। भगै। जौग जौगं। छुटै। छुटै। विश्वलौकं। महालौक। क्षांनं। जांनं। फटै। कंन्न। प्रिथी। पृथी। जांनै। चित। लौकं। भ्रमं। लौक। मानं। पुलै। लौकं। ब्रह्मलोक। ब्रह्मंलोक। देवं। ** यह तुक किसी पुस्तक में नहीं मिली। कूट। थान। लौकं। जद्रूरस्त। जहुरस्त। नौकं। परै। सत्यको। सौकं। सीकं। लौकं। सुरंग। ब्रह्म। ब्रह्मं। लौक। भगै। षरै। निठ। तठ। तठं। कमठ। कमठं। रंहानं। राहानं। चलै। सषं। जुटै। वैद। ब्रहमां। बृहंमा। जांन। फटांन। गृहं। निठ। निठं। ठ। जानं। शोकं। कौकं। कोकं। डक। वजी। इस। डकं। ग्रहै। लिद्ध। धरै। बंद। मुषं। गजै। जौगि। सठी। हुंअं। हुअं। दुषं। मछ। धरे। रूपं। द्रूपं। छिलै। सतयं। अध। परै। छौनि। थकं। छकं। विछैकं। विछकं। करै। कुभ। नंद। विहदं। सुरानं। पांनि। सुरांनं। नहीं। संष। शौषं। प्रलवं। प्रलंब। धुमर। धुमरं। अंत्रर। अत्र। दझी। मझ। षौडस। कला। सुझी। धरै। गेंन। मैम। पांन। लरै। आउदानं। मनौं। मनैा। आसुर। वासुर। सत। सुत्त। करकंत। मछी। कटि। कटि। मछं। मनौ। मनौं। आउधै। बाजि। जनु वजू वछं। बज्जि। वछं। धपै। पांनि। ॰फटै। छैदं। कढै। पैट। मझं। सुर बैद। वैदं। धरै। चलै। व्रष्य। थांनं। किए। बजं। बज्ज। पुरात। वृष्टि। वृष्ट। दैवं। सुरंब्रह्म। सैवं। † बूंदीवाली में इस तुक के दोनों पाठ उलट पुलट हैं मुंष। बैद। पांनि।

कवित्त ॥ धरि कछ्छप को रूप। भूप दानव संहारे ॥
लइ लछि सागर सुमथि। रिष्य आपान सुधारे ॥
राहु सीस किय षंड। मंडि दानव सब भंजिय ॥
किय देवासुर जुद्ध। ईस वर करि अरि गंजिय ॥
धारी सु धरा हरि पिट्ठ पर। दिए रत्न बंटिय सुरनि ॥
कवि चंद दंद मेटन दुनी।श्री कछ्छप तेरे सरनि॥ छं०॥१४१॥रू०॥२०॥

॥ वाराह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ हिरनाषह प्रिथवी हरी। धर दानव अवतार ॥
इन्द्रादिक नागन सजिय। प्रति अवतार पुकार ॥छं०॥१४२॥रू०॥२१॥

कवित्त ॥ प्रति अवतार पुकार। लीन प्रथवी सर पारिय ॥
जवन जिहां न सु ठाम। धरनि सत साइर गारिय ॥
किन्न रूप वाराह। जोति मन जोति सु कढ्ढिय ॥
बहुल रूप तन दुरद। रिसन वैश्वानर बढ्ढिय ॥
कवि चंद चवत दानव भिरन। धरन धरा रद अग्र बर ॥
सुर राज काज उप्पर करन। कोल रूप जगदीस धर ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू०॥ २२ ॥

कानं। अनुपं। परे। रय अयं। आय। करै कछ। लग्गें। स लौह। सु लोहं। मंनं सगी। कुसस्त्र। कुशस्त्रं। न लगे। न लग्गें। न छैत्र। न छेत्रं। कुशस्त्रं न लग्गें न छेवं न पारं। फिरै। सु राषित। वृदं। कीए। मुनींद। अनैकर। अंन्नेक। मुरे। मरै। मुरे। इसो। अजैज। अजेज अनुपं। हुअ। सुर। कछयं। औय्यौ। पिठ। रषी। जुग दान। भुमी उधारी। उधारी। तैषै कौल। कयो ॥

१४० पाठान्तरः– कबय। को। भुप। दानव। संहरि। लई। लछ्छि। सुमारिषिथी। सुमथ्थि। रिषि। स्त्रायंन। सुधारि। शीश। काय। मींड। दांनव। भजिय। भंज्जाय। दैवासुर। युद्ध। इससर वर करि मकिजिष। ईशवर। धारि। पिठ। परं। दए। वट्टिय। सुरन। दट। मैटन। कछप। तैरै। सरण। सरन ॥

१४१ पाठान्तरः–हयग्रीवहि प्रिथवां हरी। हयग्रीवहिं पृथिवी हरी। प्रथमी। धुर। दांनव। ब्रह्मचार। ब्रह्मच्चार।ब्रह्माचार सुर। इद्रादिक। सुर इन्द्रादि ॥

२२ पाठान्तरः–नील प्रथी सर धारीय। जब्बन। जिहांन। ठांम सायर। गारीय। कींन। किन्न। जौति। मनि। मोनों। जैति मनि प्रगटी। कट्टाटिय। क्कट्टिय। कट्ठिय। बढिय। ववत। धरानि। ऊपर। कौल ॥

कवित्त ॥ बल प्रचंड बल मंड। ज्वाल विकराल काल कल ॥
धर बितंड वाराह। बीर वीरन विदारि पल ॥
हरि हरनछ्छि सु अछ्छि। बछ्छि वर जछ्छि विभावस ॥
विधि विधार वीधार। विदर बिकरार भार असि ॥
उद्धारि धरा रहि अग्र वर। सुर विकास किय चंद बर ॥
जै जया सवद धुनि सुर चवत। जोरि पानि बंदै सु चिर ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ २३ ॥

वृद्धनाराच ॥

परठ्ठि प्रान मैसुरांन भांनि अष्षि भज्जयं। कला गुहीरनीर तीर आय दैत गज्जयं। १४५
पयं पताल सीस सग्ग अश्व मुष्ष दष्षयं। रटंत वेन भुज्ज गेंन रैंन नैंन रष्षयं॥१४६॥
भुजाग्र भाग मेर नाग इंद्र दाग दभ्भझयं। बरन्न धुम्म, धुम्मरं सुरं पुरं सु धुज्जयं १४७
पया पुरं धरा धुरं, नरा नरं नरष्षयं। इसौ अवाह अश्व दाह एक राह दष्षयं॥१४८॥
जुटे जुरं भरे भरं, सुरे सुरं सु वाहयं। चटे चटं नटे नटं लटे लटं सु साहयं॥१४९॥
करंत कूक मान मूक दैत दुष्ष मानवं। पगांनि पानि साहि कांनि लैरु चीरि दानवं॥
॥ १५० ॥
करी सु कित्ति दैत देव नीति जीति रष्षयं। हयं सु ग्रीव किद्धरी बकट्टि जीव नष्षयं १५१
सुरा निसार लिद्ध भार दैत्य मारि धारनं। अये वराह अश्व दाह दैत्य दाह दारुनं॥
छं०॥ १५२ ॥रू०॥ २४॥

---

२३ पाठान्तरः—मंडि वितुंग। वितुंड। हरनाछि। अछि चाछि। वाछि। जछि। जग्गि। वद्दि विधार विद्वार। विधि विधार विद्वार। विकराल। उद्धरि। धारा। रह। शवद। सुरि। जौरि। पांनि ॥

२४ पाठान्तरः—पराठि प्रंन मैथ रान। पराठि प्रांन मेथ रांन। भांन। अपि। अंपि। भजयं। नार। आइ देत। गज्जय। गजयं। प्रिथी षताल। पृथी पताल। सूग। मुष। दषयं। रटंनैतवेनभुजनैं:। वैन। भुजनेन। रेंन नेंन। नैन। रषयं। मैर। इद्र। दागझ्झयं। दझयं। वरन्नं। वरन। धुंम। धुम। धुंम्म। धूमर। सुर। स। धुजयं। पयांपुर। रषयं। इसो। दषयं। जुटै। जुटे। सुरैं सुर। सूरं। स। बाहयं। चटै चट। नटै नटं। लटै। अक। कुक्क। मांन। मुक्क। मुक। दैत्य। दुष। साहिकांन। चीरे। वीरि। किति। दैव। नीति रषयं। केद्धरी बकट्टिट। नषयं। नषयं। सुरांन सार। सुरां नसार। धारिनं। अैराह। धाह दारुनं ॥

कवित्त ॥ करि विरूप वाराह। घरनि षुर अविगत षिखिय ॥
जनु कि मेघ उतकंठ। कला ससि षोडस झखिय।
असिय मुष्ष दंतलिय। तरुन तिष्षिय आधारिय।
मेर चंद मनु बीज। चंद्र मनि परह सुधारिय॥
आरोपिप्रथिय अंबर पुरह। सत साइर संसै परिय॥
कहि चंद दंद करि दैत सौं। धरनि धार अद्धर धरिय॥
छं० ॥ १५३ ॥ रू० २५ ॥

भुजंगी ॥ बपू बीर बीरं ध्रतं ध्रत्त सारं। दिठं दुष्ट दाने कलं कोल कारं॥
धरं तुंड तुंगं विसालंत नेनं। छिनं छीन लोकं जुरे दूत सेनं॥१५४॥
रुधिं फट्टि वज्रंग वज्जे वितूरं। गनं आंन कंतं बजं पंच पूरं॥
अवं सोर भारं भिरे भूर भारी। तिनं मेक मानी अफाली असारी॥१५५॥
घटे घोष छोनी बलं छीन नूरं। धरे सुद्ध उद्धं दिवं संम जूरं॥
धरे दंत धारा वरं सेष ओपं। मयं कंक लंकं कियं कंठ लोपं॥१५६॥
जयं जोगधारी महापान पानं। हयंग्रीव नंषे तिनं तोरि तानं॥
करे तुंड तुंडं वितारंत तारं। तियं लोक सोकं विलोकन्न पारं॥१५७॥
सुरे सूर कंतं जयं जो करालं। समं गुछ्छ अछ्छं करं जूल जालं॥
चवै चंद चंडी नमो वेद चारं। नमो देव कोलं वरं रूप सारं॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ २६ ॥

२५ पाठान्तरः—कर। करी। अविगति। पलियं। षिलिंय। जजु कि। जनु कें। षोडस। झलिय। ईसी। इसी। मुष। दंतलीयं। दितलीय। तरुनि। तरून। तिषिय। तिषीय। आधारीय। मैर। मनौ। मनौं। सुधारीय। आरोप। अोप। पृथी। प्रिथी। सायर। कवि चंद दंद करि दैत सौं। कवि चंद दंद करै दैत सौ। कहि चंद दंद कहि दैत सौं। धरानि थार॥

२६ पाठान्तरः—वयं। वपं। धृत। धृत। दिवं। दानै। कौल। तुग तुडं। तुंगं तुंडं। नैनं। छिन। लौकं। दूत। सैनं। दरुधि। रुद्धि। वज्ज। बजै। त्रिनुरं। आनं। पुरं। अवं। सौर। भिरै। भुर। मैकं। मांनी। घटे। घौष। छौनी। छलं। ललं। बीत। नुरं। धरै। जुद्ध उद्धं। जुद्धं उद्धं। दिव। समजुरं। समजूरं। धरै। वर। सैष। औपं। कीयं। लौपं। जौगधारी। पानं। पानं। हयग्रीव। नंषे। तौरि। करै। त्रिलौकंत। सुरै। कैतिं। जौं। गुछ। अछं। जुल। निमौ-दैवारं। देव चारं। नमौ। कौल॥

कवित्त ॥ कोल रूप जगदीस । हत्यौ हयग्रीव सु दानव ॥
जय जय सबद चवंत । सुमन वरषिय सुर मानव ॥
पढ़ारे हरि लोक । सोक मेष्यौ सब्बन सुर ॥
कोइक काल अंतर । हुऔ हिरनंकस आसुर ॥
तप ईस उग्र परसन्न हुअ ! ब्रह्म सिष्ट नह तौ मरन ॥
कवि चंद कष्ट मेटन कलू। कोल रूप तेरे सरन ॥छं०१५६॥रू०॥२७॥

॥ नृसिंह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ सुबर ईस बरदान दिय। किय सुरपति अनुकाज ॥
अवनि असुर अदभुत तप्यौ। चप्यौ तीनपुर राज॥छं० १६० रू०॥२८॥
जाइ पुकारे सब्ब सुर। जहाँ आप जगदीस ॥
दानव तप चै लोक लिय। वर अप्यौ तिन ईस ॥छं०॥१६१॥ रू०॥ २९॥
ब्रह्म सिष्ट सौं नां मरै। सस्त्र अस्त्र नहि जाम ॥
तब हरि नरहर रूप किय। असुर विदारन काम ॥छं०॥१६२॥रू०॥३०॥
षरक षंड षंडे अखिल। तिल तिल षल भै भीर ॥
बिहरि थंभ सुअंभ वर। उदर डारि डर भीर ॥ छं० ॥ १६३ ॥रू०॥३१॥
विराज ॥ जयं सिंघ रूपं ।भयं भीत भूपं॥बजे षग्ग षंभं।स्वरूपं स्वयंभं ॥१६४॥
द्रिगं तेज तामं।हवी जान जामं॥मुछं सेत सारं । जयं देव धारं॥१६५॥
हयं रूप दानं। म्रगंकस्य भानं ॥ स्वंरूप पूरं।लवी लोक सूरं॥ १६६॥
तिषी तष्षि चूरं। कनंकीक नूरं ॥ दिढं दिठ्ठ मूरं। बजी तार तूरं ॥१६७॥

---

२७ पाठान्तरः—कौल । हन्यौ । जै जै संवद चवंत । बरषै । बरषें । पाधारै । पधारे । शेक । सौक । मैष्यौ । सबन कौइक । केईक । कल । अंतरै । अंतरे । हूओ । भयौ । हिरनंकुस । इस । ईश । प्रसन । प्रसन्न । तह । तौ । मेट्टन । कलु । श्रीकौल रूप्प तैरै सरनं । शरन ॥

२८–३१ पाठान्तरः—सुवर । ईश । वरवान । बरदांन । करि । सुर पलि । अदभत्त । चंप्पौ ॥ २८ ॥ जाय । पुकौर । सवनि । सत्र । निबर । जहां । रानव तप भै लौक लिय । दांनव । अष्यौ । इस । ईश ॥ २९ ॥ ब्रंह्म । शिष्टि । सों । सुं । षह जाम । शस्त्र । नह जांम । नहर । करि । मैछ विदारण काम । मोंछ । कांम ॥ ३० ॥ षंडन । आषलं । बिदरं । बिरद । षंभ । अब । अंब । भर । वर । उदरि । झार झर झीर । उदर डारि डर डीर ॥ ३१ ॥

३२ पाठान्तरः—सिघ । भुपं । वजै । षंभ । स्वरूप स्वयंसं । तैज । जांनि । जांमं । सैत । चारं । दैव । मुगकस्य । पुरं । लौक । शूरं । सूरं । तिषी । तिष्य । चुरं । नुरं । दिठं दिठ नुरं । हिय

धजा धूमरं अंमरं अंब दभ्भी। तिनं मभ्भ षोडस्कला अप्प सुभ्भी॥१०० ॥
धरे गेन पानं लरे आवधानं । मनों आसुरं वासुरं सत्त पानं ॥
करकंत मच्छी कटिं कट्टि मच्छं । मनों आवधं बज्जि जौं वज्र वछ्छं ॥ १०१॥
धपे पानि लड्डं फटे पारि छेदं । कढे पेट मभ्भं सुरं वेद वेदं ॥
धरे अप्प पानं चले ब्रह्म थानं । किये जैत बज्जं पुरानं सुरानं ॥ १०२ ॥
करी विष्टि फूलं सुरंसिद्ध देवं । सुअं ब्रह्म जप्यं कियं अप्प सेवं ॥
मुषं वेद पिड्डं न लै पानि ब्रह्मं । जलै षोलि पानं भजै अंति अंमं ॥१०३॥
† दियं चारनं भट्ट बेदं सु पानी । रहे ब्रह्म ग्यानं हरी सिद्धि रानी ॥
अपं इद्र आपं भगं कोरि कोरं । कियं मछ्छ रूपं छुटे बेद रोरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ११ ॥

॥ कच्छावतार की कथा ॥

दूहा ॥ मंडि गजिन बहु बल उअर । तल कल बल जल जाल ॥
मंदिराचल बल विपुल्ल पुल्ल। थल्ल थरहर हल पाल॥ छ० ॥१०५ ॥ रू० ॥ १२॥

दंडमाली ॥ धरि कच्छ रूप सरूपयं । कुस कूप मंडित भूपयं ॥
धरि मंद प्रब्बत पुट्ठयं । जल जात चाल गरिट्ठयं ॥ १०६ ॥

† हमारे पाठकों को यह स्मरण में रखना योग्य है कि चंद के इस वाक्य "दियं चारनं भट्ट वेदं सु पानी" से वास्तव में चाहे यह ऐसा ही हुआ हो अथवा न हो किंतु ज्ञात होता है कि इन दोनों जाति के मनुष्यों में जो वर्तमान समय में अनबन दृष्टि आती है वह चंद के समय में विद्यमान न थी किन्तु कुछ थोड़े ही काल से उस का जन्म हुआ है। यदि हम यह भी मान लें कि चंद के समय में इन दोनो जातियो में परस्पर विरोध था; तथापि चंद कवि प्रशंसा करने के योग्य है, क्योंकि उसने चारनों का नाम अपने इस ग्रंथ में कहीं नहीं छिपाया है बरुक पाहिले उनका नाम उसने प्रयोग करके फिर अपनी जाति का नाम प्रयोग किया है। तथा इन दोनों जाति के मनुष्यों की उत्पत्ति के शोधकों को यह वाक्य बारहवें शतक तक का प्रमाणरूप भी उपलब्ध समझना चाहिये। इस महाकाव्य में आगे अनेक स्थानों में ऐसे प्रयोग आवेंगे। इन दोनों जातियों की उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार के शंका समाधान हैं। परन्तु इन लोगों की उत्पत्ति का कुछ विषय हमारे पास एकत्र किया हुआ है वह अवकाश मिलने पर यदि कहीं आवश्यकता हुई तो हम किसी टिप्पणी में लिख विदित करेंगे ॥

ब्रह्म। जल। जलं। षौलि। षोलिं। पांन। न्नाति। भ्रमं। वैदं। पांनी। हरे ब्रह्मम ग्यान हरि सिद्धि रानी। हंरे। रांनी। अयं। इद्र। भगो। भगे। कौर। सौर। कोर। कोडिरं। किय मन रूप छुटै वैद जौर। मछ। छेटे ॥

१२ पाठान्तरः--गजि गन। उर ! मंदिरा। बब ॥

१३ पाठान्तरः--छंद दंडमाली। कछ। त्रुस। कुंप। जुयंय। जूपयं। प्रबत। पुठयं। गरिडयं गरिठयं। गरिष्टयं। वांम। दिन। आदिन। वस। प्रचंडय। श्रुति। सुति। आहिगुन। गुनगान

दिव वाम मान न छंडयं। दित अदित बंस प्रचंडयं॥
स्तुति चवत सुर नर गुन गनं। * * * * ॥ १०७॥
लिय रतन चवदसु वीनीयं। बँटि बंटि निज कर दीनयं॥
बर बिदरि बिहरि बोरयं। सुर असुर मिलि जरूफोरयं॥ १०८॥
जै चवत चंद कविंदयं। कलि कूरमं बर इंदयं॥ छं०॥१०९॥रू०॥१३॥

दूहा॥ कहि सनकादिक इन्द्र सम। किम लिय पाथर तन्न॥
कहै इन्द्र सनकादिक सौं। सुनौ कहौं करि भन्न॥छं०११०॥रू०॥१४॥
दैत राज धर प्रबल हुआ। अमर परे सब मंद॥
गए पुकारन सकल मिलि। जहां लछ्छि गोविंद॥छं०॥१११॥रू०॥१५
कही ईस इन्द्रादि सौं। सजौ सेन चतुरंग॥
तुम सहाय असहाय अरि। करौ दैत सब भंग॥ छं०॥११२॥रू०॥१६॥

लघु नाराज॥

कियंति नद भद्दयं।लियंति रथ्थ बद्दयं॥ चले सु देव इंदयं।करे सु सेन द्वंदयं॥
अनेक धानुषं धरं। अनेक चक्र संवरं॥ चले अवद्ध षेदयं। परे भरेति वेदयं॥
धजा पताष धूमली। समूह सेज*संमली॥ दईत दूत दौरयं। करे सनाह जोरयं॥
चले सु दैत चंचलं।मनों अषाढ धूमलं॥मिले जु रिष्षिमानयं।जु देवता दधानय

* यह तुक घटती है। लिय। चउद। सु वीनयं। बंटि। बिदुर विदुर। विदुर। चिहुरि वारय। असुर। सैामयं। वव्रत। कविदय। कवींदयं। त्रस्मं। कुउंमं। चर॥

१४—१६ पाठान्तरः—पाथौ थिर। पार्थेथिर। सनकादि। सां। कहू। कहौं। भिन्न भिन्न॥ १४॥ देतराज। हअ। परै। लछि। गोबिंद॥ १५॥ ईश। ईद्रादि। सौ। सजो। सहाय। दैत्य॥ १६॥

१७ पाठान्तरः—नद। भदयं। लियंरति। रथ। वदयं। चलै। इद्र। दैवयं। करै। सैन। एवयं। अनैक। संचरं॥। चलै सु वंद्ध षैदयं। षरै भरैति वैधयं। वेध्रयं। पताक। धुमली। सस्त्रह फौज संभली। समूह फौज संमली। करै। जोरियं। चलै। चंवलं। मनैा। धुमलं। मिलै। सु गिषि। रिष। ज्यौं। ज्यौ। दैवता। त्रिलौक। नैवता। लछमी। लछिमि। * यह बुंदीवाली पुस्तक में नहीं है। कैसवं। केशवं। भालयं। यौ। यौं। यों। दइत्त। यो। यैा। दैव। झुरयं। मिलै। कछावनिर। किइयं। कछंमि। लछमी। जित। गिरि। धरै। गिठ। नैत। मथयं। दइत। मुष। दषयं पुछ। दैव। रषयं। त्रिरौलि। घुमहा। घूंमही। प्रथम। लछिमी। लछमी। लक्षमी। षष्यमी। लक्षमी। स्त्रपारिजात। सौमं। उगि। ऊगि। सु कला। सुं धैन। गज। उजला। सु रंग मौधनी परा। सु रंग मेघनी परी। अस्व। धनुष। समैत। पषयं। दस। दर। दैव। दझयं। फैन। मझयं कितैक सैन कुकही। मुए सु। मांन। मुकही। लषंत रन ईदयं। लयं। अमृत। अप।

दियंसराप देवता।चिलोक मध्य तेवता॥ अवंत लछ्छिमी गई।नराधि देवन्निम्मई[†]॥
न केसवं न दानवं।न नागयं न भानवं॥ यु देवता विचारयं।नही सनाह भारयं॥
दईत भग्गि दूरयं।यु देव दूत भूरयं॥मिले चिलोक संमिली।बिना पराग विह्वली॥
कछावतार किद्दयं।लछ्म्मि जीत लिद्दयं॥मदाचलं महा गिरं।धरे सुपिट्ठउप्परं॥
सु नाग नेत किद्दयं महा समंद मंथयं॥दईत मुष्य दष्ययं।सु पुच्छ देव रष्ययं॥
विरोलि दद्धिज्यों महो।घटातटाकघूंमहो॥लियं प्रथंम लछ्छमी।सुकौस्तुभं चवछ्छमी
सु पारिजात पानयं।सुराधनंत मानयं॥जु सोम उग्गि सुक्कला।सु धेन गज्ज उज्जला॥
सुरंभ मोहिनी परी।सुसप्त अश्व सुद्धरी॥धनुष्य ईस संघयं। विषं समेत पष्ययं॥
सुच्यारि दिस्स पंचहो।दिए सुदेव संचहो॥दईत बंस दब्भभ्रयं।सुनाग फेन मभ्भ्रयं
कितेक सेन कुक्कहो।मुएति मान मुक्कहो॥लियं सुरत्न इंदयं।दईत किद्ध दंदयं॥
अमृत्त अप्प अच्चरं।कियं सु देवकच्चरं॥अनाथ नाथ अप्पियं।दईत देव चप्पियं॥
पवंत दीय पष्षिलो।दईत देव रुष्पलो॥अमृत्त देव पिद्दयं।सुरा सु दैत सिद्दयं॥
जु सोमनाथ सों कहो।रवी सुरा सु देत हो॥हरी सु चक्र सद्दयं।जु दंत बसबद्दयं॥
छं० ॥ ११३-१२९ ॥ रू० ॥ १७॥

कवित्त ॥ दानव तब गय दौरि। करे इक बंध कटकं॥
हुअ देवासुर जुद्ध। चढे देवता चटकं॥
परे रथ्थ पष्परं। आइ लग्गे सम धारं॥
रथ सौं रथ भंजियहि। कूक लग्गी पुकारं॥
जोगनी जोग माया जगी। नारद तुंवर निहस्सिया॥
दस एक रुद्र दारिद्र गत।दानव तामर हस्सिया॥छं०॥१३०॥रू०॥१८॥

अचरं। अचर। कचरं। कच्चरं। आथ। अप्यं। दांनव। दानव। चषय। चप्पयं। पावंत। पावंत दीय पषली। दानव। रुपली। अमृत। दैव। सुरा ज। सुरा जु। ज्यु। सौरुनाथ। रची सुरा स दौर ही। संधियं। सदयं॥

† इस महाकाव्य में मुसलमानी भाषा के शब्द प्रयोग हुए देख कर शंका करनेवालों को जानना और विचारना चाहिये कि किसी पुस्तक में फौज और किसी में सेन पाठ मिलते हैं। क्या यह दोनों पाठ चंद ने प्रयोग किये हैं ?॥

१८ पाठान्तरः—गय तब। कौर• कटंक। दैवासुर। चढै वता चटक। चढै। चटकं। षरै। रथ। पषरे। पषरे। लग्गै। सम धार। सुं। सों। लगी। पुकर। पुकारं। जुगिनी। जौग। तुंबर। विहसिया। दरिद्र। तांमर। हसिया॥

भुजंगी ॥ इतें चक्रधारी कियो चक्ररूपं ।उतं कुंभनी कुंभ सा दैत्य भूपं॥
उतें दानवं बोलौ बोले करारे ।इतें देवता गज्जयं सार झारे॥१३१॥
रिषं हथ्थ सादिष्ट दीनी असीसं ।तिनं वज्रमै कोप दानव्व दीसं॥
कुकी जोगमाया बकी थान थानं।रटैं नारदं तुंबरं ब्रह्मगानं॥१३२॥
कियौ कुंभ कोपं चली संग माया।इतें इन्द्र ब्रह्मादि सब देव धाया॥
षरे देव देवाधि चारथ्थ चूरे।धजा की पताषं लगी धूरि धूरे॥१३३॥
छुट्यौ पट्ट पीतंबंर कट्टि छुट्टी ।मनों स्यांम आकास तें बीज तुट्टी॥
हुए सिथ्थलं देव दानव्व धाए।करें रूप अन्नेक अन्नेक काए॥१३४॥
तबें भूत वेताल नच्चैति घाए। धरे षग्ग त्रीशूल अन्नेक धाए॥
ततथ्थे ततथ्थे नचे तार विद्धी।कतथ्थे कतथ्थे कहे देव किद्धी॥१३५॥
परथ्थे परथ्थे कियं आर पारं। मनथ्थे मनथ्थे कियं देव मारं॥
असित्ते असित्ते हुए एक सेनं । ग्रसत्ते ग्रसत्ते महादेवमेनं॥१३६॥
अलुझ्झे अलुझ्झे करी अंतझुझ्झे।हुए देवता दानवं अंग दझ्झे॥
फिरे रथ्थ सा देव कीनं अनूपं।षरे रथ्थ अप्पं करे कछ्छ रूपं॥१३७॥
न लग्गै न लोहं न संगौ न सारं।न अस्त्रं न लेपं न छेपं न पारं॥
फिरे चक्रधारी सु राषीस वृंदं । किए एकठे एक एकं मुनिंदं॥१३८॥
हुए चक्र अन्नेक अन्नेक भारी । मरे राषिसं वृंद दैत्यान मारी॥
इसो एक अज्जेज जुद्धं अनूपं। हुअं देव देवा सुरं कंक रूपं॥१३९॥
इमं कछ्छपं रूप ओप्यौ अपारं । धरा पिठ्ठ रष्षी सरापं सुधारं॥
जुगं अंत दानव्व भूमी उपारी । तबै कोल रूपं कियौ श्री मुरारी॥
छं०॥ १४० ॥ रू० ॥१९॥

१९ पाठान्तरः—इतै। कियौ। उतै। कुंभनि कुंभ। सा दैत। भुपं। उतै। बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। बौले। वोलैं। करारे। इतै। दैवता। सजिय। झारौ। रिष। हथ। तिमं। मैं। कौप। दानव। जौगमाया। थांभ। थांनं। रटें। रहे नारनं। तुबरं। ब्रह्मग्यानं। कीयौ। कौपं। इतै। इद्र। सादेव। षरें। चारथ। षुरें। धुरि धुरै। छुट्यौ। यद्र। पीतंवर। कटि। छुटी। मनौ। श्यांम। तैं। हुअै। सथलं। सतलं। दैव दांनव। करै। अनेक। आये। काये। तबै। भुत। वैताल। नचैत्रि धाइ। नच्चैत्रि थाई। षरै। षग। त्रिसूल। अनेक। अंनेकं। अधाई। धाई। ततथै। ततथे। नचै। नचें। तारि। विद्धा। कतथै। कतथे। कहै। दैव। किधी। परथै। परथे। मनथै। मनथे। दैव। असितै असिते। हूए केक सैनं। हुए केक सेन। यासिते। यसित। मनं। अलुझै। अलुझे। झुझे। झुझे। हुअै। दैवता। दांनवं। दझे। दझै। फिरै रथ। दैव।

जयं देव दूरं। सिरं संम जूरं॥ दिषे विष्पनन्दी। भयं भी अनंदी ॥१६८॥
द्रिगं दिट्ठ चक्की। रही मौन पक्की॥ मनं जोग जक्की। थलं थूर थक्की॥१६९॥
प्रह्लाद तक्की। करं हूरि बंकी॥ दिवं काम अंकी। सुषं लोक जंकी॥१७०॥
बढी बेद बानी। कवित्ता वषानी॥ कथं गछ्छ कछ्छी। चवं लोक वछ्छी॥१७१॥
जयं देव रछ्छी। बटं बीर मछ्छी। उरं मझ्झ पछ्छी। तिनं तांम अछ्छी॥१७२॥
सुषं सुष्य सानी। हरी रूप रानी। बजी दिव्य भेरी। स्त्रियं सिंघ केरी ॥१७३॥
कवी चंद चंदं। जयं जै अनंदं ॥ * * । * *
॥ छं० ॥ १७४ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

कवित्त ॥ बीर हक्क बर बज्जि। थंभ फट्ट्यौ धर फट्टिय ॥
निडर जोति निब्बरिय। लयौ म्रगकस्य दबट्टिय ॥
धरनि धूरि धुंधरिय। तीन भुवनं परि भग्गिय ॥
भयौ सद्द हंकार। जोग माया ते जग्गिय ॥
प्रहलाद थप्पि उथ्थपि अरिन। तीन लोक सुर असुर डरि।
षिल अषिल षेल षेलन षलन। कहर रूप नरसिंह धरि ॥
छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

लघुनाराच ॥

लियंत रूप नारसं। बदंत बेद चारसं॥ अरुन्न तेज उग्गयं। भरक्कि देव भग्गयं॥१७६॥
उचाय धायउंडले हिरन्नकस्य षंडले॥ छुटंत कट्ठि ढुंमरं। उठंत मुछ्छ धुंमरं॥१७७॥
ललं तंलट्ट लै लटा। झटा पटाकछूछटा॥ षटाक षट्ट षक्करी। कटाकबज्जिगल्हरी॥१७८॥

दिट्ठ सूरं। त्रुरे। दैव। सिर। सम। जूरा। दिषै। व्रिष। वृष्य। भयं भीय नदी। भयं अनंदी।
दिवांह छवकी। रदी मौन यकी। दिव। दट्ठ। चकी। मौंन। पकी। मन। जौग। जांग।
नकी। थुर। थुन। थकी। प्रहिलाद तकी। प्रहलाद तकी। करं। हूर। कांम। लौक। बैद।
वषांना। कैव गछ कछी। लौक। चछी। जय देव रछी। खटं वीर मछी। मंझ। मझ। पछी।
अछी। सुखी सुख सानी। रांनी। भैरी। श्रीयं। सिंघ कैरी। कवि। अनदः॥

३३ पाठान्तरः—वीर। हक। वरंज्जि। निझर ज्योति निभ्ररयं। ज्योति। नित्वरी। लीयौं
लीयौ। दबट्टिय। धुरि। भवनं। भंगिय। सबद। हुकार। जौग। तें। थापि। थापि। उथपि
लौक। लिषि अषिल षैल षैलन षुलन। षिल अषिल षेल नषचन कहरु॥

३४ पाठान्तरः—लीयत। वदत। वैदु। वारसं अरुनं। तेज। उगयं। भराक्कि। दैव। भगयं।
उंडलै। हिरंन्यकस्य। हिरन्नकस्य। षंडलै। वुटंतं। कटि। कढ्ढि। त्रुम्मरं। ठूंमरं। उछंत। मुछ।
धूमरं। धुंमरं। धुमरं। ललितं। ललित। लट। लै। छु। षदाकि षद षिलरी। षटाकि। षट।

दटाकबज्जिदोटयं।कलाअनेककोटयं।नषं बिदारिनष्ययं। भराकिभंजिभष्ययं १७९
उरक्त माल अंतयं।भगे भगत्त भंतयं। नराधिपन्न देवता। न नागयं न सेवता
छं० ॥ १८० ॥रू० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ मुनिवर नरहर कथ्थ सुनि। भए सकल मन पंग ॥
कौंन समै नरहर असुर। जुटे जुद्ध जोधंग॥छं० ॥१८१॥ रू०॥३५॥

वेली भुजंग* ॥

* * चरन्नं सरन्नं सु मिचं। प्रभा सूर सेवं सु पावं पविचं ॥
तिहूं लोक कौ सोक मेटन्न काजं। धरयौ रूप अत्युग्र अद्भुत्त राजं॥ १८२॥
तिनं तेज तं चास (अति)* आसूर जारे। सुतौ अर्भ भे गर्भ प्रद्दीय डारे॥
महामुद्दितं (अति)* तेज तिं रक्त नैनं। प्रलै काल(रवि)* कोटी प्रगट्टंत गैनं॥१८३
करं कंपितं चंपितं सेस सीसं। गलं गर्जितं तर्ज्जितं ब्रह्म ईसं ॥
डिगे षंभ ब्रह्मंड दिग्पाल हल्ली। धरा चन्न भारंतु लाजे मतुल्ली॥ १८४॥
इसौ देष रूपं असूरेस धायौ। ग्रहे षग्गता बीरसों षेत आयौ॥
उद्यौ सज्जि आवद्ध सन्मुष्ष वत्तें। मनों मत्त द्वै जुद्ध तथ्थैं निवत्ते॥१८५॥
गह्यौ धाइ दानं भुजं बीच गाढौ। न जुट्ट्यौ विछुट्ट्यौ भयौ दूरि ठाढौ॥
दिषै इंद ब्रह्मा भयौ चास हीयं। गयौ हाथ तैं तथ्थ आचिज्ज कीयं॥१८६॥

षटा॥कि। वाजि किलरी। कल्लरी। दडाक। दटा॥कि। बाजि। दौटयं। अनैक। कौटयं। नष। नष्ययं। भजि। भष्ययं। अरक्त। आरक्त। आलयं। भगै। भगंत्त। भूतयं। नराधिपेंत। दैवता। सैवता। मनागयं न सेवता ॥

३५ पाठान्तरः—सुनि। नरहर। कथन। भयं। मुंनि। कोंन। कौन। समे। जुदे। जौधयं ॥

३६ पाठान्तरः—चरन। वरन। सरनं। सुंमित्रं। प्रना। सैव। पावन। लौक। सौक। शोंक। मेटंन। मेटन। प्रति उंग्र। अदभुत। अदभुत्त। अदूभूत। राज। विराजं। तिन्। तैज। तन * अधिक पाठ है। असुर। असूर। जार। सुतो। अरभ। भय। भयं। गरभ। अति दीप झारे। अति दिए डार। मुदित। * अधिक पाठ है। तैज। तिन। नेंनं। प्रले। * अधिक पाठ है। कोट। कोटि। कौट। प्रगटेत। प्रगटंत। प्रगटत। गंगैनं। कर। कंपितं। कंपित। चापितं। सैस। सीस। गय। गय। गरजिंतं। तरजित। ब्रह्म। ईसं। डिगैं। षंड। ब्रहमंड। बृहमंड। दिगपाल। हली। चरन। लाजै। मतुली। देषतें। दैष सरू रूप। रूप। असुरेस। असुरैस। गृहे। ग्रहे। बीर। सौ। षैतं। सजि। आउद्ध। सनमुष। प्रवृत्ते। वरतं। मनो। मनौं। भत। द्रय। दुंय। तथै। तथैं। तथे। निवृतै। गृहभो। ग्रहभो। धाय। दांनव। दानव। भुज। बीच। बांचि। न जुप्रा। दूर। दिषे। ब्रह्मा। भयौ। त्रांस। हथ। तै। तें। तथ। आवरिज। आचि-

भयौ जुद्ध तिं बेर तासों अपारं। कहा बनियै सेष पावै न पारं ॥
दबट्यौ झबट्यौ उछाऱ्यौ पछाऱ्यौ। हुतीयुद्ध की आस तातें न माऱ्यौ॥१८७॥
तबै कोपिकै दुष्ट उछ्छंग लीनौ। हिदै फारि तत्काल सो डारि दीनौ॥
गरज्यौ गुंजाऱ्यौ अरी चंपि अैसें। कहा ब्रन्निकौं रूप तिं बेर तैसें॥१८८॥
रही दंत बिच्चंत सोंहंत सारं। मनों मेरु गिर्शृंग तैं गंग धारं॥
सुभै सीस पै मुछ्छ कौ झौंर अैसें। महाराज सीसं ढुरै चौंर जैसें॥१८९॥
जुलित् पावकं तेज लोचंन भारी। सकैं दिष्ट को देव दानं सहारी॥
तप्यौ हेम ज्यौं देह की क्रांति सोहै। सुजोती रवी कोटि दिव्यंत मोहै॥१९०॥
तिनं तेज ज्वाला जरे दुष्ट तेतं। रहे संत सरनं लहै पुष्ट हेतं॥
हुतौ दुष्ट दानं अमानं सु हत्यौ। सुतौ मृत्यु तत्काल सुर्पुर् पहुत्यौ॥१९१॥
भई जैत जै सद्द सुर सर्व हर्षे। सिरं देव नसिंघ पै पुप्फु बर्षे॥
अये देव अस्तूति के काज सोई। महा रूप कौ भेद पावै न कोई॥१९२॥
सबै सोचि आलौ चिहारे निहारे। जिनं दिष्ट पल्लक कोई सहारे॥
फुरै बाच काहू न भै भीत सथ्थैं। कह्यौ जाइ कैं श्रीय देवं सुतथ्थैं॥१९३॥
तबै लच्छमी आप सोचे विचाऱ्यौ। इसौ रूप गोविन्द कब्बहू न धाऱ्यौ॥
इतो तेज जाजुल्य कब्बहू न देष्यौ। प्रलै पावकं जोति तायें विसेष्यौ॥१९४॥
धरे रूप जेते तिते सर्व जानों। लगै वार कहते न तायें बषांनों॥

रज। अचिरज्ज। युद्ध। तन। तिन। बैर। तासो। कहां। बरणांयै। बरनीयै। बनियै। सैस। सेस। दपट्यौ। झपट्यौ। हुंता। हता। युद्ध। तार्थै। तातैं। तबें। कौपिक। कोपिकैं उछंग। रिदै। तत्तकाल। सौ। दीनैं। गरज्यौं। मरज्यौं। गुजारयौ। गुंजारयौ। वपि। अैसैं। अैसे। वरनि। वरंनि। कहुं। कहूं। तिन। बैरि। बैर। तैसें। तैसे। दंति। दंत। बिच। विचि। बिचि। अंत। सौभंन। सोंहंत। सोभंत मनौ। मैर। मेर। गिरि। मिर। श्रंग। ते। तैं। तै। पर। पुछ। मुछ को। डोंर। अैसे। सीस। ढुरे। ढुरि। चौर। चौंर। जौसे। जैसे। जुलित। ज्वलित। पावक। तैज। लौचन। लोचन। सकै। दिष्टि। कौ। दैव। दांनव। संहारी। हेम। ज्यौ। दैह। क्रांति। महा जोति रवि। जोति। क्योटि। मोंहै। जो है। तैज। जरे। रहैं। संस। सरन। लहे। हैतं। हुंतौ। दानव। अमांनं। हत्यौ। सुता। मृत्य। तकाल। तत्तकाल। सुर। पुर। पुहत्यौ। पहुतौ। सद। सर्ब्व। सरन। हरषै। सिर। दैव। नरसिंघ। रनसिंह। पर। फल पुफ। पुष्प। बरषे। बरेष। अए। आय। आए। दैव। अर्स्तुति। कै। सौई। को। भैद। पांव। कौई सवैं। सौचि। आलो। विहारै। निहारै। जिन। पल एक। कोइन। कौइ। संहारै। संहारे। काहू। भय। सथे। सथ्थैं। सथै। जाय कर। करि। देवे। दैव। तथ्थे। त्तथै। लछिमी। सौचै ईसौ। रूप। गोविद। कबहून। कवहुन। ईसौ। तैज। कबहून। देष्यो। दिष्यो। जोति।

अबै आइ प्रह्लाद जो होइ ठाढौ। जिनं हेत कीनौं इसौ रूप गाढौ॥१९५॥
इहै बत्त ब्रंह्मादि के चित्त आई। सुतौ जाइ प्रह्लाद कौं कै सुनाई॥
छं०॥१९६॥ रू०॥३६॥

दूहा॥ सुनत बचन प्रहलाद गय। श्री नरसिँह के पास॥
स्तुति जुति सौं ठाढौ रह्यौ। फुर्‍यौ नहीं कछु सास॥छं०॥१९७॥रू०॥३७॥
सीस नाइ कर जोरि तब। रह्यौ सनंमुख चाहि॥
क्रिपा दृष्टि देख्यौ हरी। भगत वछल प्रभु आहि॥छं०॥१९८॥रू०॥३८॥

वेली भुजंग॥

क्रिपा दिष्ठ दिष्यौ सु ठड्डौ निनारौ। सु तौ प्रान कै प्रान तें अत्ति प्यारौ॥
लयौ लाइ छाती धर्‍यौ जंघ कोसं। दियौ हथ्थ मथ्थं कियौ दूरि दोसं॥१९९॥
चुम्यौ मुष्ष नैनं प्रहल्लाद केरौ। जरा म्रत्यु भै दूर दोसं न नेरौ॥
भई बुधि न्रिंमल्ल महा सुद्ध बानी। तबै अस्तुतं क्रन्नप्रल्हाद ठानी॥२००॥

ताथै। विशेष्यो। विसिष्यौ। घेरे। जेते। तिते तेंते। सरब। सर्व्व। आनौ। आंनौं। लगें। बार। कहतै। कहतें। ताथै। वषानु। वषानौं। अबें। आस। आई। आय। प्रहलाद। जौ। हाँई। ठढौ। ठंढौ। तिन। हेन। कीनो। गढौ। इहि। इहें। बत। चित। कै। सुढौ। जाय। प्रहलाद। कौ। कुं। काहें। ककाहि। कह॥ * ※ इस रूपक की पहिली पंक्ति के खाली स्थान मे हमारे पास की सब पुस्तको में—"वंदे वरुन हारे"—यह अशुद्ध पाठ है। इस को शोधने को कोई प्रामाणिक आधार हम को अभी नहीं मिला और यही दशा अंत की पंक्ति, की भी है अतएव वह खाली प्रकाश कर दियी गई हैं कि विद्वान लोग विचार कर पाठ को निश्चय करें। हमारी सम्मति में तो इन का पाठ हमारे पास की पुस्तकों से भी पुरानी पुस्तकों के मिलने पर ठीक २ शुधना संभवित है। इस की अंत की तुक भर का पाठ बूंदीवाली पुस्तक में—" सुनत प्रहलाद इह बात चल्यो। रहै पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलै";—सं० १७७० वाली में—"सुनिन हत्ति प्रहलाद इह बात चल्यौ॥ देह पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलौ";—सं० १८५९ वाली में—"सुनत हेत प्रहल्हाद इहै बात चल्ल्यौ॥ रहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकल्ल्यौ";—और सं० १६४९ वाली में इस का पाठ संवत् १७७० के सदृश ही है॥

३७–३८ पाठान्तरः—दौहा। सुनत।। प्रदलद मौ। श्रीन्नसिंघ। श्रीनृसिंह। कै। युत। सौं। ठढौ। ठाढा। फुरचौ कुरयौ॥ शीश। नांई जौरि। सनमुख। चाहिं। क्रियादृष्ट। क्रियादृष्ट। कियाद्रीष्टि। दिष्यौ। सही॥

३९ पाठान्तरः—छंद भुजंगी प्रयात्। द्राष्टि। दृष्टि। ढढो। ठढौ। ठड्डो। प्रांन। कै। प्रान तै अति। पियारो। लाय। कौसं। थमथं। सथं। नन्थ। कीयौ। दौसे। चुम्पा। चुम्पो। सुष। नेंनं। नैंनं। प्रहलाद। कैरो। मृत्य। दूरि। दौस। हौस। नैरौ। बूंदीवाली। में—भय भइ बुधि। निमल उत्रु ही अ। आय बौल महा सुद्ध बानी—निर्मल। बांनी। तबें। अस्तुंत। अस्तुति।

अहो देव देवेस देवाधि देवं । तुही अलष अप्पार पावै न भेवं ॥
अभेदं अछेवं तुही सर्व वेदं । तुही सर्व विद्या विनोदं सुभेदं ॥ २०१ ॥
तुही ग्यान विग्यान सोग्यान कर्त्ता । तुही बुद्धि कर्त्ता तुही बुद्धि हर्त्ता ॥
तुही धरनि आकास है पौन पानी । तुहीं सर्व में एक अनेक बानी॥२०२॥
तुही जोति संसार सारं सरूपं । तुही अघकालं अकालं अरूपं ॥
तुही कोटि सूरज्ज में तेज साजै । तुही चंद्रमा कोटि सीतं विराजै ॥२०३॥
तुही कोटि ब्रह्मा महादेव जेते । तुही कोटि कंदर्प लावण्य तेते ॥
तुही हेत संतोष आनंद कारी । तुही सोक संताप सर्वं प्रहारी ॥ २०४ ॥
तुही जोग जोगेस जोगी सु भोगी । तुही भेद अभ्भेद संदेस सोगी ॥
तुही मानवं देव दानं सिधानं । तुही कोटि ब्रह्मादि अंतस्समानं ॥ २०५ ॥
जिती थावरं जंगमं षांन चार्‍यौ । तिनौ आप ही आप तें भेद धार्‍यौ ॥
करे जे गुसांई अगें रूप तेते । कहै ब्रन्नि को देव रिष् नाग जेते ॥२०६॥
कियौ मच्छ औतार पैलै अनूपं । गयौ वेद लै दैत्य सागर् अलूपं ॥
हते स्वामि संषासुरं बेद लीने । सुतौ आनि तत्काल ब्रह्मादि दीने॥२०७॥
महापिष्ठ के धार धारी धरत्ती । करी न्रंमलं कस्यपं रूप कत्ती ॥
बली बामनं पावनं कित्ति राजै । पगं नष्य अग्रं सु गंगा विराजै ॥२०८॥
सबं षंडि षिची सुतौ विप्र तामं । महापुण्य सम्क्र सकै फर्सरामं ॥
श्रियं राम रघ्वीर लीनौ वतारं । कियौ रावनं कुंभ कर्नं सहारं ॥ २०९ ॥

अस्तुतिं करन । प्रहलाद । ठांनी । अहौ । दैव । दैवस । दैवाधि दैवं । तुहीं । अलष । अपार । पावे । भैवं । अछेद । अभैदं । सरव । वैदं । तुहीं । सरव । वीद्या । विनोदं । सु भैदं । तुंहीं । ग्यांन । विग्यांन । सौग्यांन । करता । तुहीं । करता । तुहीं । बुधि । हरता । तुंहीं । हें । पोंन । पांनी । तुहीं । सरव । मे । ए । अनेक । बांनी । तुंहीं । जौति । ज्योति । तौही तुहीं । अघ-कालं । तुहीं । तौही कौटि । सुरज । सूरज । मे तेज । तौहीं । तुंहीं । कौटि । सीतल । तुंही । तौंहि । कौटि । ब्रह्मा । महादेव । जैते । तुहीं । तौहीं । कौटि । कंदरप । लावन्य । तैते । तौही । शंतोष । तौही । तुहीं । सौक । शोक । सरवे । तौ ही । जौग । जौगेसं । भौगीसं । जौगी । तुहीं । तौही । भैद । अभैद । संदैस । रोगी । तौहीं । तुंहीं । दैव । दानव । तौही । तुंही । कौट्टि । ब्रह्मादी । अंतर । समानं । जिजी । षांनि । च्यारौ । च्यारौं । तिती । आपतै आप हौं । भैद । धार्‍यौं । करै । जै । अगै । तै तै । कहैं । वराने । कौ । रिषि । रिषं । जै तै । कीयौ । मछ । अवतार । पहिलै । अनुंपं । जे । दैत्यं । सागर । अलुंपं । हनैं । स्वामि । शंषासुरं । बैद । लीनै । सुतै । सुता । ततकाल । दींनै । महापिष्ट । कै । भार । धरनी । धरंती । नृमली । रूपकंती । रूपकती । बंल्यं । बलिं । बामनं । किति । नष । सुरंग । सुरंगं । संबें । षंड । षिमी । महांपुन्य । सम । करि । सकै । पर्शरामं । फरसरामं । श्रीय । श्रीयं राम रघुबीर । अवतारं । कियौं । कियौ ।

वसुद्देव ग्रेहं गह्यो क्रष्ण वासं। हतेदुष्ट सर्वं कियौ कंस नासं॥
करे जग्य लीयं धरा ध्रंम सुद्धं। प्रगव्यौ कली काल अवतार बुद्धं॥२१०॥
जुगं अंत सो सत्ति ह्वै हैं कलंकी। इहै बात सांची सदा देव अंकी॥
जिते सैल सुर्हेति सुर्पत्ति कीने। तिते सेस गन्नेस जाक्षैं न चीने॥२११॥
सबै दुष्ट भंजे सु सेवक् उगारे। करे काम निज धाम नरहर पधारै॥
छं०॥ २१२॥ रू०॥ ३९॥

कवित्त॥ पधारे निज धाम। काम सुर सेव किए सब॥
जुग जुग सब जन हेत। लिए अवतार तबहि तब॥
निकसे षंभ विदारि। हने हिरनंकुस दानव॥
प्रहल्लाद् उद्धार। कियौ पूरन पद जाह्नव॥
श्री न्टसिँघदेव समरंत जन। कलि कलंक दुष्यन हरन॥
बलिरूप्र सरूप अनूप किय। श्रीन्टसिंघ तेरे सरन॥छं०॥२१३॥रू०॥४०॥

वामनावतार की कथा॥

दूहा॥ बहुत काल हरि सुष कियौ। सब देवादिक रिष्य॥
पाछै बलि प्रगव्यौ बलौ। किये सत्त जिन मष्य॥ छं०॥ २१४॥ रू०॥४१।
तब इंद्रासन डग मग्यौ। जेम तुलाकी डंड॥
सुर सुरपति आकंपि भय। जांहि कहां हम छंड॥छं०॥२१५॥रू०॥४२॥
जाइ जगाए श्रीपती। बलि आसुर अनपार॥
तब सु पधारे नरहरी। धरि वामन अवतार॥ छं०॥२१६॥ रू०॥ ४३॥

गवन। कुभंकरण। सहार। संहारं। वसुंदेव। वसुदेव। गेह। गेहं। गृह्यौ। ग्रह्यौ। कृष्णावासं। हतै। सरव। कीयौ। कंश। करै। ध्रूम। बुद्धि। बुधं। जुग। सौ। साति। वे हैं। व्है हे। यहै। यहैं। साची। दैव। जिर्ते। जिते। शैलसुर। सुलसुर। है त। हे त। सुरपति। कीनै। तिनै। सेसं। गंनेस। जाअे। चिन्है। चीन्हे। दुष्टं। भंजे। सैवक। उधारै। करै कांम। धांम। पधारै॥

४० पाठान्तरः—पधारे। पधारै। धांम कांम। सैव। कीए। युग। युग। हैत। लीए। बाहि तब। निकसै। हनै। हिरणंकिस। प्रहलादै। प्रहलादैं। उधारि। कीयौ। बूंदीवाली। में-नरंहसूदेव—सं० १७७० में—नरहसु देख—दुषन। रुप। सरू। अनुप। श्रीनृसिंघ। तैर। शरन॥

४१—४३ पाठान्तरः—बहत। सुषि। कीयौ। सम। ऋषि। रिषि। पाछे। पाछैं। बली बल। बुंदीवाली में—वरि कीए सित जित जिमन मख—कीए। सित। मष॥ ४१॥ इद्रासन। जैन। आकंप। जाहि। छांडि॥ ४२॥ जाय। पधारै। नरहीरी॥ ४३॥

कवित्त ॥ सवा लाष वर विप्र । दियौ इक इक प्रति दानं ॥
दुरद अयुत रथ अयुत । एक हज्जार के कानं ॥
दासि दास दुय सहस । चरचि आभूषण अंबर ॥
साठि सहस मन कनक । अवर बहु भंति अडंबर ॥
ऐसै कि जग्य पूरन्न करि । निंनानू बलि राय जब ॥
वामन सरूप धरि चंद कहि। अप पधारि गोविंद तब॥छं०॥२१७॥रू०॥४४॥

दूहा ॥ वलि लग्गौ जुध इन्द्र सम । सुर आसुर मन षेध ॥
साहस संकर विष्णु बर । षेद समव्वर वेध ॥ छं० ॥ २१८ ॥ रू० ॥ ४५॥

गीता मालची † ॥

लग्गे ति षेधंवानवेधं, इंद्र वज्जं सज्जयं। छुट्टंत तारं नंषि भारं, काम कामं कज्जयं॥
धमकंत धारंवार पारं, मार मारं मुष्षए।संधेति बानं कर कमानं, कान तानं नष्षए
. ॥२१९॥

विकसंतव्योमं सट्ठिगोमं, भिरेभोमं धुज्जए।देवकीनंदं अरि निकंदं, चल्ले गंजन रज्जए॥
बलिराइ बढ्ढिय देव दढ्ढिय, इंद्र कढ्ढिय आसुरे। मिलि तथ्थ सथ्थं लथ्थ बथ्थं पारि रथ्थं पासुरे॥२२०॥
देवता मारे घन संघारे, हारभारे बलि जुरं।डक्कंत डक्कं पारिधक्कं, हारिथक्कं चौपुरं॥
छुट्टंत पट्टं बान छुट्टं, तौनषुट्टं चच्चलं, ।बलिरायजग्गं मानभग्गं, भिरेभग्गं अच्चलं॥
॥२२१॥

---

४४ पाठान्तरः—दानं । दोय । वांमन । धारिं ॥

* यह रूपक हमारे पास की पुस्तकों में से सं० १६४७ और सं० १७७० और बूंदीवाली में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी हुई में है ॥

४५ पाठान्तरः—लगौ । जुद्ध । ओसूर । मनि । पैध । विष्ण । वैध । समर । बैध । समवर ॥

† इस रूपक के छंद के निर्णय को सहज में यों समझ लैना चाहिये कि जिस को इन दिनों हरिगीत छंद कहते हैं, वह यह है। उसके नामान्तर इस महाकाव्य के पाठान्तरों से विदित ही हैं तथापि The Revd.Joseph Van.S.Taylor B.A.साहब ने इस को गीय नाम से लिखा है। इस के चार चरण होते हैं , उनमें से प्रत्येक चरण में दो यति १६ + १२ और २८ मात्रा होती हैं, जिन में९+७+१२ पर विश्राम और ८ ताल होते हैं ॥ .

४६ पाठान्तरः—गीता । मालती धुर्य्यः । छंद गीतामालती । छंद माधुर्य्यः । छंद गीत माल्ती । लगेत । लगैत्त । बैदं । बेंध । बांन । वांन । वैधं । इद्रवज्ज । सझयं । छुटंत । तार । भार । कांम । काम । धार । वारं । पार । मुषए । सधे । वांनं । नषरा । विहसंत । व्योम । सठि । गौम । भिरै । भौमं । दैवकीनंद । चलै । रजए । बलिराय । बढिय । कढिय । दैव । दाढिय । आसुरै । मिलितथ सथं लथवथं पारि रषं पासुरै । दैवता । मारे । सघारै । भारै । युंरं । जुर । डकहकंतडकं पारि धकंहारि थक तैपरं । ध्थक्कं । छुदनै पट्टं तौनषुटं बांन छुट्टं ववलं । छटंत पट्टं तीन षुट्टं बांन छुट्टं चलं । बलिराय जंम मांन भंग भिरैमरां अचलं । बलिराय जग्गं भिरे मग्गं अंचलं । चौसाठि । जौगं ।

चौसट्ठि जोगं करे भोगं, देव सोगं दष्षए। रुड्डंत भुंडं मुंडि सुंडं हार रुंडं रष्षए ॥
लग्गंत वानं भानछानं, इंद्र ढानं चाहए। भूमी भजानं गरि गुमानं, राहभानं दाहए।
॥२२२॥
बलिराइ अग्गै भूमि मग्गै, भूमिषग्गै पारनं। वरदान रद्दे वेद पद्दे, कालकद्द कारनं॥
वामनं रूपं धारि धूपं, अैस नूपं इलमभ्भं। हुंकार सद्दं कियं नद्दं, बेद बद्दं संमभ्भं॥
॥२२३॥
धोमंतलग्गं चे वदग्गं कियंजग्गं कारनं। दिसिदिसिनदौरं कियं सोरं पौरिपौरं धारनं॥
नषसिष्षभोरं कथ्थियोरं, कालकोरं कलकरी। आहुट्ठपेंडं भोमषंडं छोरिछंडं डरबरी।
॥ २२४ ॥
बलिदौरि आयोइंद्रभायौ, बेदगायोबच्छयं। मुहमंगिदानं तियपुरानं, मंडिभानंलच्छयं॥
बाजिचवायंदेवगायं, बलिसुरायं दिड्ढयं। आहुट्ठपग्गं दीनमग्गं, भीरभग्गं सिड्ढयं॥
॥२२५॥
नाषंत बानं गंग तानं, राह भांनं रुक्कयं। चालंत धारं सुक्कसारं, रुक्कधारं सुक्कयं॥
ढेलंतझारीबारपारी, चष्षचारोमभ्भ्भयं। बलिराइ अग्गं भूमिमग्गं, बलसुजग्गंभज्जयं
॥२२६॥
पातालपग्गंदानमग्गं, सीसलग्गंसज्जयं। भरिपाउभारंधरनधारं, पगउभारंमग्गयं॥
असुरानभज्जं बलियगज्जं, पीठसज्जं श्रग्गयं। चंपंतपीठं दाझदीठं, दैतरूठं तापयं ॥२२७॥
*बंधंन बद्धं बरष अद्धं, देव किद्धं सारयं। धर पिट्ठनट्ठं मारि मुट्ठं लग्ग दिट्ठं पारयं॥
रहिअट्ठपष्षं साष्षिलष्षं, धाररष्षं धारयं। चप्पौपयानं नहींकालं, राजभालं भालयं॥२२८॥
तुट्ठं सुनाथं रष्षिनाथं, सब्बसाथंपालयं। असुरानभग्गं षेलषग्गं, इंद्र लग्गं वासयं॥
वामन्न रूपं कला अनुपं, बलिय क्रूपं चासयं ॥ छं० ॥२२९॥ रू० ॥४६॥

करे। भौग। दैव। सौग। दषए। रुंडत। भुडं। मुडि। सुंडि। सुडं। रूड। रषए। लगंत। बांन। भांन। छांनं। द्रढानं। वाहए। गुमान। भान। दाह। दाहये। बालिराय। आगै। अग्रे। भुमि। मृगैं। मग्रें। मुमि। षगैं। षग्गें। गारनं। दरवांन। रटै। वैद। पढै। काल कटे। वामना। रूप। नुपं। इलमझं। हुंकारणदं। शद्दं। कीयं। कीय। सदं। नदं। वैद। षद। वदं। ससमझं। धोमंत। लगं। त्रैवदगं। त्रेवदग। कीय। जगं। षगं। कारणं। दौर। कीयं। सोरं। सिष। भोरं। कथि। थैार। काल कौरं। आहुंठ। माहुठ। पिंड। भौम। षंड। छौरि। छंड। परवरी। बलिदौरि आयौ इद्र भयौ वछ्यं तिथ। पुरांन। माझि। लछ्यं। वयं। दिठयं। आहुंठ। आहुठ। पेंडं। मंग। भगं। सद्धयं। नाषंत तान। गंगबानं। भांनं। रुकयं। रूकयं। बलंत। सुकतारं। श्रक्कसारि। रुक। मुकयं। ठेलंन। षष। मझयं। वलिराय। अंग। भुमि। मंग। मगं। वालि। जिंग। जगं। भजयं। पगं। दांन। मगं। श्रग श्रृगं। सजयं। धरनं। मगयं। असुराण। भजं। बलीय। ंज्जं। गजं। पीर। सजं। श्रगयं। श्रृगयं। चपंतं। दाव। दाड। रूपठं। रुठं। पारयं। *यह तुकसं० १८९९ की लिखी पुस्तक में तो है अन्य किसी में नहीं है। आछे। रष। संषिन। सष्षं। रषं। चप्पौ। पयालं। नही। नहींय। तुसं। सनाथं। रषि। श्रव। भगं भंग। षंग। षगं। श्रग श्रृगं। वामनं। रूप। नुपं। नूपं। अनूपं। वलीय ॥

साटक ॥ नारद्द कहि जाय विष्णु पुरयं, स्यामं छले वायकं ।
जग्यं फल उतपन्न दीन वरयं, पाताल हरनं सदा ॥
बंभावलि बलि चीय पास लषमी, पारष्षिआने हरी ।
चौकी बंधि चौमास पास सरितं, पद्मारनं सत्तलं॥छं०॥२३०॥रू०॥४७॥*

परशुरामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ षिति षिची अति प्रबल हुअ । महामत्त असरार ॥
ताहि हतन षिति दुज दियन। परसराम अवतार ॥छं०॥२३१॥रू०॥४८॥
दुयं पुचिय राजन सुपति । व्याही षिचौ दान ॥
जमदग्निह रिषरेनिका परिनठिय अरि पान ॥छं०॥२३२॥रू०॥४९॥

कवित्त ॥ अनुकंपा श्रुत सुबर । दिह्न षिचीय अरज्जन ॥
रेनुक रिष जमदग्न । षिचि सहसार्जुन षप्पन ॥
सहस भुजा सिर इक्क । सरित मन हथ्थ सुबाहै ॥
नव षंडन उग्रहै । लोग सहसं तन दाहै ॥
जमदगनि सुतन दुज धर दियन । फरसराम अवतार धर ॥
षिचियन मारि इंदह वरिय । करी टूक अज सहस कर ॥
छं० ॥ २३३ ॥ रू० ॥ ५० ॥

भुजंगी ॥ पुची दोइ राजं सुराजं विचारी। इकं रूप सारं बियं चत्तु नारी ॥
दई सैस भुज्जं अनुक्कंप ताहं । बियं जम्मदग्नं सुरेनक्क व्याहं ॥ २३४ ॥

---

४७ पाठान्तरः—वरयं । लषिमी ॥

* यह रूप हमारे पास की सं० १८५९ की लिखी पुस्तक के सिवाय और किसी में नहीं है ॥

४८—४९ पाठान्तरः—छिति । प्रबलं । हुअं । हुय । हुवं । महामत । हनन । छिति । परसरांम । परांसराम ॥ ४८ ॥ दोय पुत्रि ।•पुत्री । पत्री । दांन । जमदग्नह । रेणका । परिनहिय । परनठय । अरिपांन ॥

५० पाठान्तरः—अनुंकपा । सबर । षित्रि । षित्री । अग्युन । अरजुन । रैनक । रेणुक । यमदग्न । षित्री । सहस्रार्जुन । सहसारजुन । षपन । इक । हथ । सुबाहै । लौग । नन । यमदगनि । जिमदगनि । दीयन । फरसरांम । अवतारि । धरि । करि । टुक । अजसकर ॥

५१ पाठान्तरः—दोई । दोइ । राज । सु राज । इक । सरसं । बीयं । चत्रुरनारी । चतुरनारी । दइ । सहस । भुजं । सु अनुकंप । सु अनंकंप । बीयं । जमदग्नं । सुरेनक । सुरैनक ।

ग्रहं बंधिरन् मभ्भ रेनक्क राषै। मनं मभ्झ बिध्धं मरिष्षं सु दाषै॥
तनं जानि चै लोक आरुन्न बढ्ढी। भरे अंव वस्त्रं रिषं षास ठढ्ढी॥२३५॥
ब्रषं अठ्ठदस्सं बनव्वास रह्यं। करुन्ना मुषं मझ्झ षचीन कह्यं॥
गई तट्ट सम्मुद्द सथ्थें सु भद्दं। सथं अंनु कंपं असूरान यद्दं॥२३६॥
धरंनीं चकड्डोल असमान चल्ली। मिले सथ्थ सुंर्थान धर्थान हल्ली॥
गहंरं दुरंदान भद्रान मद्दी। भिल्ली साइरं जानि निव्वान नद्दी॥२३७॥
पुरं तीन दर्दीन मग्गं अमग्गं। नहीनं चिह्नं लोग तिन् सम्म षग्गं॥
छं०॥ २३८॥ रू०॥ ५१॥

दूहा॥ सत षोहनि पानन सहस। रत हथ्थी सत लष्ष॥
धवल दुरद सत लष्ष भर। सत लष असित पष्ष॥छं०॥२३९॥रू०॥५२॥
मनहु कूर षिची मरद। पन अप्पन प्रति पार॥
मनहु न्हूर ससि डरन डर। भर षिची भर भार॥छं०॥२४०॥रू०॥५३॥
पुज्जि आव षिचीन रन। उप्पन्नो रिषि राज॥
फरसी दीनी विष्णु पुर। कलि ब्रह्म स्तुति काज॥छं०॥२४१॥रू०॥५४॥

भुजंगी॥ चली अंनुकंपं सथं सिष्न सिष्षं। धरीयं मनं मभ्भ पत्ती सुरुष्षं॥
भरी नेह अंबं तिनं वस्त्र भारी। डरी मन्न मभ्झा ग्रहं इष्ष नारी॥
२४२॥

ग्रिहं। बघि। रिन। मझ। रेनक। रैनक। मझ। मरिषं। जांनि। त्रयलोक। अरुनक। अरुनंत। बढी। भरै। अंवं। ठठढी। वरश्न। बरष। बरषं। अठदस। वनवास। रहि। गहियं। करुनं। सुषं। मझ। षित्रीन। कहींयं। कहियं। जाई। जाइ। तट। समुद्द। समुद्द। सैथ। सथें। सथ्थै। सथ। अनुकंप। अनुकप। असुरान। असुरांन। धरानें। धरनी। धरंनी। चकडोल। चक-डौल। असमान। बर्ली। मिलै। सथ। सुरथांन। धरथांन। हली। गहर। गहंर। दुर दांन। मदी। भिलै। सायरं। जांविनिनिवाननदी। जांनि। निवान। नदी। पुर। दरदीन। मग। मगं। अमगं। अमंग। नहिन। नहिन्। नहिंन। त्रहुं। लैाग्। तिन। समन। षंग। षगं॥

५२-५४ पाठान्तरः—सत्त। षौहुनि। षोहनी। पांनन। हथी। सित। लष। सित। लष। मित। हसल। हसित। परव। परद। परष॥ ५२॥ मनहुं। अपन। मनहुं। सुर। शशि। षित्री॥ ५३॥ पुजि। पूजि। उपंनौं। ब्रह्मास्तुति॥ ५४॥

५५ पाठान्तरः—भुजंगप्रयात। चलिय। अनुकंप। सथ सिषन। सिषं। धरीय। धरिय। मन। मझ। यत्री सरूपं। सरूपं। भरीय। नह। अंब। अबं। तिन। डरपी। भरिय। डरिय। डरपि। मन। मझ। मझूझ। ग्रह। इषि। इष। आइ। हथ। कर। जैार। जोरि। मुह। मैारि। कहियं। कहींयं। भरिय। भरीय। नह। नीर। मन। रहिय। रहियं। रहीयं। रिषि। रष्वि। मन।

अई हथ्थ हथ्थ जोरी मुहं मोरि कह्यं । भरीं नेह नीरं मनं पीर रह्यं ॥
रिषौ मन्न मैहल्ल भोजन्न कज्जी । किधे दस्स ब्रष्षं सु आगंम सज्जी ॥२४३॥
अए रिष्षि थानं सु डेरा दिवानं । जनौं चंद्रि नभ्भं प्रगट्टीय थानं ॥
दुसंकन्न झुंडं कियं झुंडझुंडं । जुं सोभीय षंभं इभं इष्षसुंडं ॥ २४४ ॥
दई बंब नीसान बौ बज्जि भेरीं । मनों इंद्र इंद्रासनं धुज्जि हेरी ॥
स्मरीयं रिषं धेन कैलास थानं । किधों बिट्टियं गज्ज गाहं सुनानं ॥ २४५ ॥
जु आतिथ्य आकर्षनं धेन आई । सुरं आसुरं नाग मझ्झै कि भाई ॥
तबै आनि तुट्टी मझ्झै थान थायं । जिहंनं जु जो भाव भोइन्न भायं ॥
२४६ ॥

तबै षोहनी अट्ठ भोयन्न भष्षी । कहां पाक सासंन आतंक दिष्षीं ॥
तुरत्तं भगंनीन चिंता चितान्नी । इतं पुज्जिबै कौंन अंनं रु पानी ॥२४७॥
दिषीयं अनूकंप धेनं सु दुझ्झी । कही राज अग्गै सु भोजंन गुझ्झी ॥
मुषं दैत बंकं सुरं संक साझ्झै । दिषं नैन ते चित्त गातन्न दाझ्झै ॥२४८॥
करौ कंक अन संक लै चल्ल बच्छी । किधों दौरि षिची सुरं धेन गच्छी ॥
परे रुंड मुंडं सुरं सब्बमारे । जितैं लात मारे तितै सर्व तारे ॥२४९॥
तिनं लोम लोमं प्रगट्टी दहानं । मुषं मुग्गलं पुच्छ पच्छार भानं ॥
षुरं षुप्परं रासि भं सिंग सिद्धं । लगे लेष आए तिनं मुत्ति लिद्धं ॥२५०॥
कियं पुच ता माय धेनं दहानं । सुने बान षिची धरे पिट्ट पानं ॥

महल । महल्ल । भोजन । भौंजंन । कजी । किाद्धि । किद्ध । किध । दस । बरष । आगम ।
आंगम । सजी । आई । आए । रिषि । रषि । थांनं । डैरा । जनूं । जनौ । चद्दरं । बद्दरं । नभ ।
नम्भ । प्रगटीय । दुल्य कनक । दुसंकन । दुत्य कनक । झुड । किता । जनु । सोभियं । सोभीयं ।
सोभिय । षंभ । इभ । इष । सुंड । दइ । तीसान । बहु । भेरी । मनौ । इन्द्रासणं । हैरी ।
समरीयं । समरियं । धैन । थांनं । किधूं । किधु । किधुं । बिटीयं । विटिय । गज । गाह । अतीत ।
अतिथ्य । आकरषन । आकर्षनं । धैने । सुर । असुर । मझैं । मझें । आंनि । कुट्टी । त्रुट्टी । त्रुठी ।
मझैं । ठायं । जौ जिहिन भाव भौइन भायं भोइन । जै । षोहनी । अठ । भौंजन । भषी ।
कहर । दिषी । त्रुरत । तुरतं । ग्नीन । मग्नान । भग्नीन । चिंता । चितानी । ईतं । पुज्जंत्र । पुजवै ।
पुजिवे । कोंन । कौन्न । अन । अनं । आन । चितांनी । पांनीं । पांनी । दिषि । दिषी । दिष्यि ।
दिष्षी । अनुकंप । धैन । सुदुझी । सुदझी । करी । अग्रें । भोजनं । गुझी । देत मुष । दिष नै
चित गातनं दाझै । दिष नें चित गानं न दाझै । दिष नैन चित्त गातं न दाझै । करों । करौं ।
अनसंक । चलै । वलौं चलौं । वछी । बछी । किधौ । दारि । गछी । परै । रुड । रुड । मुंड ।
मुडं । सुर । सब । मारे । जितें । षात मारे । लौम । संलौम । प्रगटी । दहनं । दहांनं । मुष ।
मुगलं । मुंगल । पुछ । परछाय । परठाथ । भांन । षर । षुपरं । सीग सींग । सिग । लगै लष ।
लष्ष । आरा मुक्ति । लद्धं । कीयं । तौ । तो । तै । धेन । दसहनं । दसनं । सुनै । बांन । कांन ।
कान । धरे । पिट । पांनं । मनों । मनौ । मनो तें तै । किधों । किधौ । चालियं । ब बहु ।

मनौं भंजि कैलासते आनि धेनं। किधौं चत्रिय राज वौ उड्डि रेनं ॥२५१॥
मनं रिष्य आपन्न तापन्न तापं। किधौं पुच पारथ्थ रेनंक कापं ॥
मनं पुचनं काज आसिष्य वष्षं। कियं पुच दृष्ष दियं आप रिष्षं॥२५२॥
तवै फर्सरामं फरस्सी उभारी। कियं रिष्य कामं सुमत्तं सुमारी ॥
भयौ पुच तंमंगि जौं दिड्ड मातं। किधैं पावनं पाइं दोई सम्रातं॥२५३॥
करी पैज सैसार्जुनं काम धेनं। चल्यौ रामफर्सौं धरै गज्जि गेनं* ॥
कहां जाइ सैसार्जुनं मुभ्भ अग्गं।* चल्यौ राम रिष्यं पयं लग्गि मग्गं॥२५४
दियौ रिष्य बरदान जा जुद्ध कज्जं। जबै दिष्षियं षिचियं फर्स भज्जं॥
मनौं अर्क वारं मधं अग्गि लग्गं। भयौ दिट्ठ सैसार्जुनं भीर भग्गं॥
छं० ॥ २५५ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ फरसराम फरसी ग्रही। लग्यौ षचियन काल ॥
हुकम रिष्य दाहन चल्यौ। जगि जोगिनि विकराल ॥
छं० ॥ २५६ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

त्रिभंगी ॥ जगि जोगिनि कालं, ईस सभालं किड़ा चालं, रुंडालं।
मिलि भैरव भूतं, देविय दूतं, चष्ष सरूतं, अंतालं ॥
मिलि फरसं रामं, करुना कामं, भामनि भामं, सुर इंदं।
धर धुज्जै गैनं, उड्डिय रैनं, जग्गिय नैनं, जोगिंदं ॥ २५७ ॥

उांड। रैनं मनों। मनां। मन। रिषि। आंपं। न तांष। किधौं। पारथ। रैनंक। कायं। मनो। मनौं। पुत्र नह। आसिष। आशिष। वाषं। विषै। वषं। कीयं। वृषं। वृषं। दीय। रिपं। रिषं। फरसरामं। फरसराम्। फरसी। रिषि। सुमतं। सुमातं। तमंगि। तंमांगि। जब। किधो। किधौं। पावन। दौइ। दोइ। सहस्रार्जुनं। सहसारजुन। कांमधेने। रांम। फरसी। धरे। गजि। गेंन। गैन। गैनं। जाय। सहसार्जुनं। सहसार्ज्जुनं। सहस्रार्जुनं। मुष। अग्रं। * यह दोनों बूंदीवाली पुस्तक में नहीं हैं। रिषं। लगि। मग्र। सगं। रिषि। वरदांन। काजं। जंत्रै। जत्रइ। दिषियं। षत्रियं। फरस। भज्ज। भजं। सनो। सनौं। अरक। अक्कं। अगि। लग्रं। लग्यं। दिढ। दिढ्ढ। सहसारज्जुन। सहसाज्जुनं। भगं ॥

९६ पाठान्तरः—दोहा। फरसरांम। गृहीं। षित्रियन। षित्रीयन। रिषि। जग। युगिनि जोगिन ॥

९७ पाठान्तर:—छंदत्रिभंगी। जुगिन। काल ईश। संभालं। किधा। रुडालं। रुंडाली। भिल। भेरव। भुतं। भुत। देवीय। द्दत। चंष। चरूतं। अंताल। फरसरामै। फरसरांम। करुनां। काम। भामिनि। इंद। धुजै गै। गैनं। उडीय। रेनं। जगीय। नेंनं। जोगींद। रांम। लगिय।

परि आयौ रामं, लग्गिय जामं, षच्चिय ठामं, नह लड्डं ।
परि मोटन छोटं, दानव दोटं, जुग्गनि जोटं, लगि जुड्डं ॥
थरथरि थिर थानं, रीठ सुवानं, छाइय भानं, गैनानं ।
करि षिची अंतं, मंडिय पंतं, पंगुर जंतं, हं हानं ॥ २५८ ॥
बरबान न लग्गै, भीर न भग्गै, फरसी बग्गै, कर भानं ।
अवतार अलष्षं, भामिन भष्षं, दैतन दष्षं, ब्रह्मानं ॥
करि रूप कुरूपं, जुद्ध सजूपं, पुत्र अनूपं, जमदग्नं । *
न्रत्तत अनलष्षै, आप अलष्षै, दानव दष्षै, जम मग्नं ॥ २५९ ॥
गहि षिद्धन गाला, किद्धा चाला, रिषि रंढाला, रिन कालं ।
परि क्रूक सु क्रूकं, डक्किन ढूकं, गिद्ध गहूकं अंतालं ॥
सुर छाइय भानं, अरजुन बानं, सहसभुजानं, गंजानं ।
मनु बद्दर चंदं, हथ्थ जुगिंदं, कीधा फंदं, दंतानं ॥ २६० ॥
परि लोथ अलोथं, सथ्थन सथ्थं, भरि भरि बथ्थं, भंजानं ।
षिसि षोहनि अट्ठं, मारक नट्ठं, ता रस तट्ठं, धुकि धानं ॥
भिरि भुज भंजानं, दैतलजानं, फरसिय पानं, रन मानं ।
परि अर्जुन पानं, षिसीय षांनं, नारद ग्यानं, विजयानं ॥ २६१ ॥
अवतार सु दिट्ठं, षिच्चिय नट्ठं जोगिनि सट्ठं, नाचिचं ।
परि फूल सुरानं, मारि षिचानं' चंद बषानं, गाविचं ॥
॥ छं० † ॥ २६२ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

जांम । षित्रिय । छौटं । दौटं । लंगि । थुद्दं । थर । थांनं । सुनं । गैनागं । षित्रि षित्रयी दंदं । मंडीयं । जंत । बांन । लगै । भगै । वगै। भांनं । अलषं । भषं दैत्यन । दषं । व्रह्मांनं । करूपं । * बूंदीवाली में पाठ—करि रूप करूपं पुत्र अनुप आपस सरूप जमदग्नं—सं० १६४७ और १७७० में—करि रूप कुरूपं पुत्र अनूपं जमदग्नं । नूतत । नृतत । अनुलषैं । अलषै । दषै । यमदग्नं । जमदग्नं । ग्रह । गिद्धन । गिद्धनि । किध्ध । वाला । रिषं । रिष्ष । रंढालं । रन कलं । परिक्रम । कसकुं । सकूकं । डकिन । ढुक । गहुक । भांन । अरयुन । अर्ज्जुन । बांन । भुजांनं । मनौ मानों । वर । रब । हय । युगिंद । किंधा । फदं । लौथि । लोथि । अलौथ । अलोथ । सथन सथ । सथं । अलोथन सथं । षिजि । षौहनि । अठं । नारक । नठं । तासर तठं । धुकि । धारं । नैजानं । जांवं । फरसी । जांनं । जानं । मांनं । अरजुनं । अज्जुन । षिसिय । ग्यांनं । दिष्टं । त्रीयनतं । षित्रीय । नठं । जग्गिन । सठं । षिनांनं । वषान ॥

† इस छंद की प्रत्येक तुक में ३२ मात्रा और यति १० + ८ + ८ + ६ = ३२ और ताल ८ होते हैं ॥

कवित्त ॥ सहस भुजा सिर इक्क। नाम अर्जुन घन सज्जिय ॥
मुर अठ षोहनि मरदि। करे सुर अप्पन कज्जिय ॥
भरि रुड्डि षप्र जुगनीय। ईस मुंडन भर बध्यिय ॥
पलचर रुधि चर पूरि। सक्क करि कारज सध्यिय ॥
दिय दान पानि पृथिवी दुजन। करें रुधिर कुंडन चपन ॥
सुर नरन नाग कित्तिय उचरि। फरसराम षिचिय षपन ॥
छं० ॥ २६३ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

रामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ फरसराम छिति पति हते। छिति अप्पी निज वंस ॥
रघुवंसी दसरथ्थ घर। श्रीरघुपति अवतंस॥ छं० ॥ २६४ ॥ रू० ॥ ५९ ॥
रघुवंसन राषिस रमन। भयौराम अवतार ॥
वेद भ्रात दसरथ सुतन। नयर अजुध्यासार॥ छं० ॥ २६५ ॥ रू० ॥ ६० ॥
भये राम लषिमन सुबर। भरथ सत्रु घनभ्रात ॥
अरि रावन रष्षस हरिय। तिन बन लिष्षिय तात॥ छं० ॥ २६६ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ तरुनि नाम तारिका। ग्यांन हरि परसीरामं ॥
वरि सत्ती धानुष्ष। किए सब सुभ्भह कामं ॥
केकइयै बर मंगि। राम बन भरत सुराजं ॥
तब दसरथ दुष कीन। भयौ धुर काज अकाजं ॥
दसरथ्थ पाइ परसे उभय। पंच बटी बंधी कुटिय ॥
कहि चंद छंद परबंध करि। लंक कंक जिहि बिधि जुटिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

---

५८ पाठान्तरः—इक। नांम। अरयुन। अर्ज्जुन। सजिय। षौहनि। मरद। करै। सुरै। कजिय। रुधिर। युगिनिय। जोगिनिय। इस मुंडम। बथिय। पलचर। रुधिवर। सक। कारिज। सथिय। दीय। दांन। पांनि। प्रिथवी। करि कुंडन रुधिर सु त्रपन। नग। कित्तीय। षित्रीय ॥

५९-६१ पाठान्तरः—फरसरांम। हतै। अपी। भिज। दसरथ ॥ ५९ ॥ राषि। रवन। रांम। श्रीरांम। वैद। दसरथं। सुतंन। अयौध्या ॥ ६० ॥ भयै। भयौ। राम। लछिमन। लछमन। भरत। शत्रुघन। रषसंहरिय। बन लषिय। लिषय ॥ ६१ ॥

६२-६४ पाठान्तरः—नांम। ग्यंनं। परसीरांम। बरी सती। धानुष। कीए। सुभह। केकइय। केकइयें। रांम। भत। दुषि। किन दसरथ। पाय। व। बंटी पटबंध। जिहिं।

सूपनषा राषसीं । रहै बन मक्कर ढाली ॥
रूप नषष चष धुंम । रंग श्रवनं तन काली ॥
नाक वक्र नष तिष्ष । जाइ षरदूषन दष्षिय ॥
दौरि दौरि धरि ढौरि । राम सब राषिस भष्षिय ॥
हरिं सीत नीत रावन गयौ । भयौ चित्त राषिस हरन ॥
कहि पवन पूत दूतह चलिय । सुर सुकाज साईं करन ॥
छं० ॥ २६८ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

गयौ लंक हनुएस । भ्रमत सुधि सीता पाइय ॥
घन उपवन संघरिय । धरे मन राम दुहाइय ॥
वाय चढ्यौ प्राकार । दसन जुद्धह दनु भष्षिय ॥
अषै कुमारन हनिय । दौरि इंद्राजित दष्षिय ॥
नषि पास रास द्रढ बंधयौ । कहि सुमरन अंबर धरौ ॥
लग्गाय पुच्छ लंका जरिय । कनक पंक किन्नौ घरौ
छं० ॥ २६९ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ जलन जलिय रष्षस छरिय । धरिय बग्ग विपरीत ॥
मनौं अर्क कमलनि दरस । सुनि रावन मन भीत ॥
छं० ॥ २७० ॥ रू० ॥ ६५ ॥

कवित्त ॥ बंधि पाज सागरह । हनुअ अंगद सुग्रीवह ॥
नील जंबु सु जटाल । बली राहुन अप जीवह ॥
धाम धरनि वाराह । दाह धारन कटि मारन ॥
स्वामि भ्रम्म धुर धवल । उड्डि असमान सुधारन ॥

---

६२ ॥ सूर्यनषा । तुर्ध्यनषा । सूपनपा । राक्षसी । राषिसी । मध्य । रढाली सूपनपत्रषं धूम । सूप । नष । श्रवन । तिष । जाय । षरदषण । दखिय । घर । धर । रांम । भाषिय । हरि । वित पुत । यूतह । तद । चवलिय । सांई ॥ ६३ ॥ गयौ हनू लंकेस । एसं । लंकेश । पाईय । संघरीय । संहरीय । घेर रांम । दुहाइयं । दुहाईयं । चाय वढीय . प्रकार । दरसनयुहदनुभाषिय ॥ वाय चढीय प्रकार । जुदह । जुध्रह । भषिय । कुमारनि । हतिय । जिक्ष । जीत । सु । दषिय । तषि । दृढ । बधयौ । मरन । अबर । लगाय । पुछ । पूंछ । जारिय । किनौं । कीनौं ॥ ६४ ॥

६५ पाठान्तर :—जलनि । जरिय । रषिस । छरीय । धरीय । बग बिपरीति । मनौ । अरक । कमिलनि । दरासि । सुनी ॥

६६–६९ पाठान्तर :—बंधि । सुज । बलि । रहुन । स्वामि । स्वांमि । ध्रम । धृंम । धुरव । धवलं । उडि । असमांन । प्रकार । पुत । अवधुत । सर । थपन । वर ॥ ६६ ॥ वंधि । बर बीर ।

प्राकार धरनि दसकंध हरि। पवन पूत अधधूत भर॥
सर * करन लंक ल्यावन सती। थप्पन लंक बभीष बर॥
छं०॥ २७१॥ रू०॥ ६६॥

बंधि पाज बर बीर। नंषि साइर सु अष्ट कुल॥
बय तरंग तपि तथ्य। भरे जनु अगस्ति (सु) ✝ अंजुल।
सिर मच्छी ऊछरी। मनौं रचि मनि धर सेसं॥
पिट्ठ राम भर हनुअ। किन्न मन कारन भेसं॥
चक चकित नाथ दस बेद पुर। छोरि देव सेवन ग्रहय॥
धर लंक सदा थप्पन सुथिर। अगह गहन हनुमंत भय॥
छं०॥ २७२॥ रू०॥ ६७॥

जब सु राम चढि लंक। तब सु मच्छी गिर तारिय॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु पत्थर जल धारिय॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु चक चक्की चाहिय॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु लंका पुर दाहिय॥
जब राम चढे दल बंनरन। भिरन राम रावन परिय॥
भिर कुंभ मेघ राषिस रसन। सीत काम कारन करिय॥
छं०॥ २७३॥ रू०॥ ६८॥॥

उतरि समुद्द अथाह। धाह लंका धुर धुज्जिय॥
चलिय सेन रघुवंस। जोर सामंत सु सज्जिय॥

सायर। कुलं। कुंलं। विप तुरंत तिप तथ। भरै। अंजल। शिर। मच्छी। उबरी। मनौं। मनौ। सैसं। शसं। पिठ। रांम। कीन। नैसं। चक्रित। वदनपुर। बदपुर। छौरि। देवन ग्रहय। गृहय। धर। थपन। अग्ग मग्ग। हनमंत॥ ६७॥ रामं। रांम। मछी। गिरि। ता।रिय। तारीय। रांम। लिंक। पथर। धारीय। रांम। चकी। रांम। दाहीय। रांम। चढै। बंदरन। रांम। परीय। सीन॥ ६८॥ उत्तरि। समुद। धुज्जि। सैन। रघुवंस। जो। ससज्जिय। ससाजिय।

* इस शब्द का किसी पुस्तक में सर और किसी में सरु पाठ है। मैं इसका फारसी ,سر शब्द से हिन्दी का बनना नहीं समझता हूं किन्तु संस्कृत सरः = गतौ। गमने॥ भेदके। भेदने॥ अथवा Sk. सरु = Thin, Small, minute. Hence conquest, victory, triumph. के अर्थ में कवि का प्रयोग करना मानता हूं। बहुत से संस्कृत और हिन्दी शब्द ऐसे २ हैं कि जो उच्चारण और अर्थ में फारसी और अरबी भाषाओं के शब्दों से मिलते झुलते हुवे हैं। क्या उनका अन्य देशीय भाषाओं से ही उत्पन्न होना स्वीकार करना परम प्रशंसनीय है?। ✝ अधिक पाठ॥

लुहि लंक गढ घेरि। फेरि बभ्भीषन थप्पिय ॥
इंद्र जीत असि सज्जि। चढे रभ अप्पंने जप्पिय ॥
परि सार धार परि बंनरन। मार मार उचरंत मुष ॥
चल चलिय सेन लषमन सधर। देव विभान सु मानि दुष ॥
छं० ॥ २७४ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ मेघ नाद नंदन क-यौ। ध-यौ लंक उर धाह ॥
छुहि लोग सब भोग तजि। जुहं जंग उछाह ॥ छं० ॥२७५॥ रू० ॥ ७० ॥

विराज ॥ छुटे बान इंदं। घटा आदि भद्दं ॥ भिरे बान मानं। करंतं बषानं॥२७६॥
धरे ईस सीसं। किरे बानरीसं ॥ बकी थान थानं। जकी जोग मानं ॥ २७७॥
वहै रत्त धारा। छुटै भद्द भारा ॥ फिकारंत पक्कं। डकारंत डक्कं ॥ २७८॥
भये राम रीसं। मनौं काल दीसं ॥ धरा अंग बज्जै। परे रथ्थ भज्जै ॥२७९॥
भिरे घात पारं। मनौं राम सारं ॥ हुई इंद्र जीतं। भए देव भीतं ॥२८०॥
करे रूप कोरं। सबै लोक सोरं ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ २८१ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ धरनि धार धुकि धरनि। भिरन इंद्राजित सरभर ॥
मुक्कि बान रुकि भान। परिय सागरन पलच्चर ॥
जग्गि बान मोहनिय। परिय लषि मनं पथारिय ॥
परि षट दस सामंत। सार मोहनिय सुधारिय ॥
गजि इंद्र भद्द करि इंद्र रव। गयौ लंक गाढौ ग्रह्यौ ॥
रघुवंस सेन बानन प-यौ। सार ब्रह्म मोहनि सह्यौ॥ छं०॥२८२॥ रू०॥७२॥

घेरि। बभीषंन। बभीषन। थपिय। सजि। बंदरन। श्रुष। चालि सैन। लषिमन। षमन। दैव। देवि। बिमांन। समांन ॥ ६९ ॥

७० पाठान्तरः—"ध-यौ लंक उर धाहु" के स्थान में सं० १७७० की पुस्तक में "लंक उरधाह" मात्र है। भौग। तिन। जुट्टे। उछह ॥

७१ पाठान्तरः—छंद विराज। छुट्टै। बांन। जांनि। भदं। भिरै। बांत। भिग। इस। ईश। शीशं। वकी। थांन। जोक। रत। छुट्टै। भद। फिकांरंत। फक्कं। डक्कं। भय। रांम। मनों। मनौ। वजै। परै। रथ। भजै। भिरैं। भिरै। मनौ। मनों। रांग। हूई। हुइ। इंद्र। दैव। कौरं। सबैं। सवै। लौक। सौर ॥

७२ पाठान्तरः—कवित। धरनिर। धरेनं। धरन। इंद्रजीत। सरम्भर। मुक्ति। यांन। भांन। भामं। भानि। सागरह। पलच्चर। लगि। बांन। मोहिनीय। लषिमनं। पथारीय। मौहनीय। सुधारीय। भद। वंश। सैन। बांनन। मौहानि ॥

वपु नंषत पुप्परिय। किनन किन नाट कुरंगिय ॥
गनन गनन गय नंग। छलन छकिय उछरंगिय ॥
सनन सोक भिल्लरिय। षनन धर धार षल्लकिय ॥
गिल्लन डक्क डिल्लरिय। भनन भूभार भलकिय ॥
धरनी धरीय बनरं रषिय। परिय पंति मोहन प्रबल ॥
असुरान गंजि लंका नयह। इंद्रजीत जीतित अतुल ॥
छं० ॥ २८३ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ फिरि सज्जिय रघुवंस। हनूगढ कोट उडायिय ॥
मरन छोरि मरजाद। इंद्र जीत न सुधि पाइय ॥
मंच होम रथ जग्य। सरन देबी सुध जापं ॥
लषिमन हनु सुग्रीव। लंकपति भीषन थापं ॥
आरूढि रथ्थ अप्पन अवर। धवर पत्ति हारह धरिय ॥
छर छरिय बान छकि छंछटिय। भरिय पच अभरन भरिय ॥
छं० ॥ २८४ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

धरनि तरनि आकास। वास रथ सासन रुक्किय ॥
दसन अंब लगि बान। धरनि बट साषन धुक्किय।
कुकिय कंत बिन कोर। सोर जोरह चौसट्ठिय ॥
मंच जप्प सब भूल। करुन कारुन अन दिट्ठिय ॥
रथ च्यारि चक्क फिरि चक्क चव। बान दृष्टि लषमन बलिय ॥
करि कंक मंक आसुरनि डर। कहर बत्त ता दिन कलिय ॥
छं० ॥ २८५ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

---

७३ पाठान्तरः—वत्रु। नंषन। कुरंगीय। छकिय। उछरगिय। सनत। सौंक। भलरिय। भिलरिय। षलकिय। डक। डलरीय। डिलरिय। भलकिय। धरानि। धरय। धरिय। बनरं। बनर। बनराषिय। परीय। मौहिन। असुरांन। गाजि। इद्रजीति। जितंयं। अतुलं ॥

७४ पाठान्तरः—सजीय। रघुवंस। हनु। कौट। उडाइय। मरण। मारन। छौरि। पाईय। हौम। जांगी। दैवी। लषमन। बभीषन। थांपं। आरूढ। रथ। अधन। अपन। धवर। पति। धारह। छरय। बांन। भरय। अभर ॥

७५ पाठान्तरः—आकाश। रुकिय। दरसन। अब। बांन। धुकिय। बिन। कौरं। सोर। सौर। चौसटिय। जप। अव। भुलि। भूलि। करन। आनादीतिय। अनदिठिय। चक। बांन। लषिमन। बत ॥

साइर सत सोषनह। बान दिन्नौ ता हथ्थं ॥
गुन औगुन संधियहि। कढ्यौ तिन जीवन सथ्थं ॥
कुसुम वृष्टि सुर कीन। भयौ रावन तन भारी ॥
सकल सोक रापिसन। हनूं जब लंक प्रजारी ॥
जैजया सह जोगिन जपिय। मंदोदरि कीनौ रुदन ॥
लछिमन्न राम सीता सुग्रहि। तदिन लंक लग्गौ कुदिन ॥
छं० ॥ २८६ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

बसि निद्रा अध बरष। धाम अंबर धर धुज्जिय ॥
गौंन गज्जि सुर सज्ज। षुधा बन चर बर पुज्जिय ॥
गौर मुष्य वपु स्याम। गिरन समनष्य अकारिय ॥
काल ग्राम नासाग्र। तार तारन तप धारिय ॥
मधि कुंड मुंड सर्गन बसै। सूर चंद संधन सषिय ॥
करि धूम नास नासत तपिय। अकल जोति कालन भषिय ॥
छं० ॥ २८७ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥ भरत काल चलि सथ्थ। धाम धामन अरु छद्दिय ॥
सहस जष्य भषनीय। मनह अचलं चल बद्दिय ॥
तिष्य नष्य अनुचार। झाल रसना झक झाइय ॥
करन काल बंदरन। धरे अग्या सिर नाइय ॥
उत्तरिय लंक असमान सिर। तरुन भार भारन तजिय ॥
करि कूह डक्क गिर बंदरन। भिरन राम लषमन भरिय ॥
छं० ॥ २८८ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

---

७६ पाठन्तरः—सायर। सौं। बांन। दिनौ। दीनौ। हथं। अवगुन। तिन। सथं। कुशम। सौक। हनु। सबद। शवद। जुगिर्नी। योगिनि। मंदोवरि। किनौं। लषमन। सम। स्त्र। गृह। दित। लंग्गौ। लंक गौक्रं। दिन ॥

७७ पाठान्तरः—धांम। धुजिय। धृजिय। गैन। भैंन। गेंन। गज। सज। वन। पुजिय। पुजय। मुष। स्यांम। गिरण। समनृष। ब्राकारिय। अकारिय। ग्रांम। तपि। धारीय। सरमन। वसै। सत्रन। सर्षाय। धुम। धूंम। नांस। तषिय। ज्योति। जौति। कलन। भर्षीय ॥

७८ पाठान्तरः—सथ। धांमन। छाद्दिय। जष। अचललंचल। बादिय। तिष। नष। रसनां। झाईय। झाईक। धरे। शिर। साईय। साइय। उतरीय। असमांन। कुह। डक। गिरभर वरन। रांम। लषमिन। भिरिय ॥

रिन रत्तौ कुम्भक्रन्न । पच्यौ भूषौ बैसन्नर ॥
धर बंदर धक धाह । दन्त कटि षड्डे बन्नर ॥
पंष भष्य पलचरिय । नहो लड्डे तिहि बारं ॥
सोषि सरित रत धार । पानि लै पिये अपारं * ॥
सा हंत सित्त बंदर सुघट * । गिरन धार उप्पर पच्यौ * ॥
रघुवंस नाम रावन कच्यौ * । करन फाहि दाहन धच्यौ * ॥
छं० ॥ २८९ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

परत भ्रात धर † धरनि पदम अट्ठह दमि पालन ॥
जनु कि सद्द साइरन । आनि प्रथ्थी जर तारन ॥
परिभष्यन रष्यिसन । कुइक चीसन मुष सासन ॥
कर सुपिट्ठ (मस लिग्ग ❀) कमंध । भरत मुष इष्यिय भासन ॥
करि लंक कंक पंकन पलन । पलन राम हथ्थी दुतिय ॥
धर धरत नारि कंतन क्रसन । कूटि कूटि दारुन छतिय ॥
छं० ॥ २९० ॥ रू० ॥ ८० ॥

त्रिभंगी ॥ गढ लंकावक्का, अग्गि जरंदा, धाह करंदा, मिलि जंदा ॥
कै जंघाइकंदा, सूपरकंदा, डेढकरंदा, मुष गंदा ॥
षल सव्वन षंदा, बघ्घ चवंदा, आप अनन्दा, +कुर जंदा+ ।
किलकी क्रूकंदा, माता मंदा, भारी भंदा, जारंदा ॥ २९१ ॥
परि कुंभ धरंदा, +बान चलंदा, राम कहंदा, मारंदा ।
धर रावन रुंदा, करै ति संदा, लष्षै जंदा, दीसंदा ॥

७९ पाठान्तरः—रतौ । कुंभक्रनः । भुषौ । वैसंनर । वंदर । षघे । षघे । भष । पलचरीय । नाहि । लधै । लधेति । सौषि । सरतर । पांनि । ले पिए । पीथ । * ये तुकें सं० १७७० की पुस्तक में नहीं हैं । सित । उपर । करनं ॥

८० पाठान्तरः—† धर शब्द सं० १७७० की पुस्तक में है ही नहीं । अठ । सह । सद । साईरनिः । आंनि । प्रिर्थी । प्रथी । परिभषन । रषिसन । कोइक । कोइक । चीसनि । शासन । सुपिठ । ❀ "मसलिग" अथवा "मत्यलिग" अधिक पाठ मालूम होता है । कमध । भिरत । ईषिय । इषीय । लकक । कक । रांम । हथी । दुतीय । क्रपनं । कुटि । कुट्टि । छतीय ॥

८१ पाठान्तरः—छंद तिभंगी । आगि । के । जंवइकंदा । सुपरकं । सुषरकंदा । डेढकरंदा । संबन । श्रवनं । वव । +यह तुक तथा तुक के टुकड़े बूंदीवाली पुस्तक में नहीं हैं । आपनइंदा । भद्दा । बांन । बलंदा । रांम । रुदा । रूंदा । करे । सद्दा । लषै । लष्षे । लष । गषस । रूषं ।

घन राषिस हंदा, रूप अनन्दा, पिठ्ठ द्रगंदा, दाहंदा।
घन बान चलंदा, भान छदंदा, राम रवंदा, पारंदा॥ २९२॥
भर रावन हंदा, रूप करंदा, तारन चंदा, जानंदा।
सुर वेद चवंदा, हूर फुलंदा, बाजत हंदा, ईसंदा॥
जनु कीर चलंदा, हाटे हंदा, तरबूजंदा, नाषंदा।
तट सागर हंदा, रावन हंदा, रूप करंदा, रथ्थंदा॥ २९३॥
तर कोर चवंदा, रावन हंदा, स्यार सुनंदा, उसरंदा।
कर लषिमन हंदा, बान चलंदा, रुंड परंदा, धारंदा॥
परि पथ्थर हंदा, बानर हंदा, द्रोन ग्रहंदा, नाषंदा।
पति लंक भगंदा, हनु आइंदा, नील निषंदा, फिरि जंदा॥२९४॥
चक चूर करंदा, अश्व परंदा, राषिस मंदा, पाइंदा।
रथ इंद अनंदा, बान नषंदा, रथ्थ रहंदा, झारंदा॥
नह ईस रहंदा, पूरा हंदा, विरदन बंदा, धायंदा।
रिषि देव हसंदा, राषिस रुंदा, बीस भुजंदा, ढाहंदा॥ २९५॥
परि रावन मंदा, भीषन संदा, काज करंदा, रामंदा।
रचि कोट सुरंदा,* हाटक हंदा,† फूल अवंदा, माल्हंदा॥
लै सीत चलंदा, लषिमन संदा, सागर बंदा, आनंदा॥
छं० ॥ २९६॥ रू० ॥ ८१॥

भुजंगी॥ कियं षंड षंडं बली मुष्य चारं। महाबाहु बाहं बलं बेद धारं।
हनूमान हथ्थं संदेसं सुकथ्थं। धरै पिठ्ठ तीनं लछी बीर सथ्थं॥
२९७॥

पिठ। दृगंधा। दृगंदा। हदा। हाहंदा। बांन। छवंदा। अवंदा। नाम खंदा। तारन वंदा। बैद। हुर। बनजवृदा। इमदा। कीर बलदा। हाटै। तरबुजंदा। राक्नं। रथंदा। कौर॥ दंदा। उसुरंदा। करि। लषमन। बान। रुड। पथर। बांनरहद। द्रौन। ग्रहंदा। चकचुर। पइंदा। वान नपेंदा। रथ। झारंदा। इस। पुराहंदा। विरदत। राषि। दैव। हसदा। राषिसं। वृंदा। वीस भुजिंदा। मदा। भीषन। सबा। रांमंदा। रषि। रिव। कौट्टि। सुरिंदा। हट्टक। फुलं। मालंदा। लैं। चलंदा। सदा। सद † इस तुक के ये टुकड़े सं० १७७० वाली पुस्तक में नहीं हैं॥

८२ पाठान्तरः—छंद भुजंगी। कीय। षंड। मुष। बाहु। वेद। हनुमांन। हथं। सदेसा। संसदे। सुकथं। धरे। पिठ। तोनं। सथं। धनुरबान। वृन। धरे। पांनि। बर। चंमु। सौं।

धनुर्बान सासं जरं हन्न कारी। धरं पानि ग्रावं वरं पारि तारी।
चमू लंक सौ गड्ड विंच्यौ बिहानं। धरं धार धुक्की करग्गे ग्रहानं॥२९२॥
कियं कोप कोपं धरं धार धोपं सिला बंधि सिंधं कुसं लूप लोपं।
रनं रावनं कज्ज आरज्ज काजं। बनी थप्पि थर थान दिन राज राजं॥
२९९॥
सुरं सूर मुष्पं वरं वाद वद्दं। महा मोह कोहं वरं जे अनन्दं॥
छं०॥३००॥ रू०॥८२॥

कवित्त॥ जनक सुता हरि दुष्ट। हरी लंका तन दावन॥
जीव जगत जगि छरन। हरन रिपु ग्रहन सु रावन॥
हरन रिद्ध नव निद्ध। सिद्धि हर सागर सिद्धिय॥
हरन पुत्र इंद्रजित। हरन भीषन ग्रह लिद्धिय॥
तिन हरिय सीत क्रत इह करिय। भरिय पत्र पलचर भषन॥
गढ जारि लंक दसकंध हनि। राम कित्ति चंदह चवन॥
छं०॥३०१॥ रू०॥८३॥

कृष्णावतार की कथा।

कवित्त॥ नमो देव देवाधि। नमो नाभाय कमल वर॥
नमो माल पंकज (प्रमां*) न। नमो वर कलल कमल कर॥
नमो नैंन वर कमल। नमो चित्तह अधिकारिय॥
नमो बिकट भंजनन (मित†)। नमो संसार सुधारिय॥
नम नमो (स्तु‡) चंद नंदन नवल। नंद ग्रेह ब्रह्मंड गुर॥
दिष्षहि जु देव देवाधि तुहिँ। मुगति समप्पन तिनह उर॥
छं०॥३०२॥ रू०॥८४॥

गढ। विच्यौ। विहायं। धुकी। करं गे। करं गं ग्रैहानं। कीयं। कौप कौपं। वधि। सिधं। कुशंलूप। लौपं। रणं। आरज। वनि। थपि। थांन। सुर। मुषं। वंदं। कौह वर। जै। अनंद॥

८३ पाठान्तरः—कवित। जीवन। छरन्। रिपुं। सू। हारिसा। ऋद्धि। सिद्धि। निद्धि। हस्सागर। सिधियं। इद्रजित। इंद्रजित। इंद्रजीति। हरञ्छ। गृह। लद्धिय। हरीय। शीत। कृत। भरीय। पलत्रर। दसकध। रांम। वंदह। तवन॥

८४ पाठान्तरः—नमौ। विर। नमौ। मल। पंकज प्रमानं। * अधिक पाठ मालूम होता है। नमौ। नैन। नमौ। चितह। अधिकारीय। नमो। विकटि। भंजन निमित। † अधिक पाठ मालूम होता है। नमौ। सुधारीय। नमौ नमो चंद नंद नंदनहि। ‡ अधिक पाठ ज्ञात होता है। गेह। बृह मंड। ब्रहमंड। दिषिहि। दिषहि। ज। गुरज। दैव। त्रुहि। तुहिं। मुग्गति। समपन॥

दूहा ॥ प्रति सुंदरि सुंदरतमह. सुंदरि सुभति सनेह ॥
सुंदरि त्रिभुवन पुरुष पहुँ, निज आवन तन ग्रेह ॥
छं० ॥ ३०३ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

पद्धरी ॥ जो कमलनाभि द्रिग कमल पानि। कोमल सु मधुर मधु मधुर बानि॥
दुति मेघ पीत अंमर सुनंद। धर धरनि धरत सिर मोर चंद ॥३०४॥
चौ वज्र पद्म धज अकुसीय। गद संष चक्र भ्रगु लत्त हीय ॥
सँग सरै दीह सिसु कर विवाल। आचिज्ज अछ्छ बियचरै बाल॥३०५॥
तुहि दिष्य ध्यान धरि बधु अकाम। व्रत करहि उमा पुज्जन सुभाम॥
छं० ॥ ३०६ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ ससिर बाल तप करहि। कमल दभ्भझय सु बदन अलि ॥
हेमवंत बन दहिग। दझ्झिझ जल्ल सुष सुष्य मिलि ॥
बर बसंत डुलि पच। चित्त डुल्लत अलि रष्यहि ॥
इक्क पाइ तप करहि। पवन चावद्दिसि भष्यहि ॥
बरषा रु सरद लग्गिय करद। मरद मैंन जग्गै सु तन ॥
सुग्गंधि दिव्य मिष्टह पवन। करहि सेव उमया सु मन ॥
छं० ॥ ३०७ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

सीत सु जल्ल उष्णह सु (अग्ग*)। पवन दृष्यह घन झुल्लहि ॥
उमया उर उच्चार। सु डर गुर जन बर भुल्लहि ॥

---

८५ पाठान्तरः—दीहा । सुदर । सुंदर । सुभत । सनेह । सुदर । सुंदर । त्रभुअन । पुरिष । पहु । पहुं । आवत । ग्रेह ॥

८६ पाठान्तरः—जौ । पांनि । कोमल । मिष्ट बांनि । दुती । मैघ । अंबरसु । अंब्रिर । मोर-च्चंद । चौ वज्जयचदमधज अजसीय । चौ वर्ज । ध्वज । भृगु लत पीय । संग । संष । सिसि । करि विलाल । आविज्ज अर्बा बयचैरे बाल । आचज । अब । त्रुहि । दिपि । ध्यांन । धुर । अकांम । पुजन । सु भांन ॥

८७ पाठान्तरः—कवित । सिसिर । कहि । करीह । कर्मल । दझय । दझझइ । वदन । हैमवंत । वन । दाझि जल सुष मिाले । दझिझ । सुष सुष । वर । वसंत । पत । चित । डुलत । रषहि । रषांहि । इक । पाय । चावासि । भषहि । वरषा । लगिय । मयन । मैन । जगै । सुगंधि । सुगंध । मिष्टांन । पवन । मिष्टान,पन । सैव ॥

८८ पाठान्तरः—सीतल । शीत । अगि । अग्नि । अग्ग । * अधिक पाठ है । बृषह । वन । झुलहि । हर । चांरं । वर । भुलहि । नंदुलं । घृत । मिष्टांन । पांन । हर । मगें । मग्रें । हरनछ ।

दधि तंदुल घ्रत षीर। बहुत मिष्टान पान कर॥
हरि मग्गहि हर नछ्छ। करहि तखपत्त पत्त धर॥
स्नानं च जम्म भगिनी करहि। सुरति सेव कात्यायनिय॥
इह कहि रु कांन कुंडल करहिं। गरथि माल पुहपै घनिय॥
छं०॥ ३०८॥ रू०॥ ८८॥

हनुफाल॥ मुहि अप्पि भगवति कंन्ह। देवाधि देव सुनंन्ह।
अति सीय पुहप सुरंग। विनि पीन अंबर चंग॥ ३०९॥
घन मद्धि तडिता तेज। चमकंत दुति सम केज॥
बिय ब्रन्न उप्पम देषि। कंचन कसौटिय रेषि॥ ३१०॥
हरि धरन तुरसिय माल। घंन पंति सुक्क विसाल॥
मंजरिय मुत्तिन माल। सुरं चाप सोभ रसाल॥ ३११॥
मधु मधुर मिष्ट सुबानि। कल अम्रत सुम्रति जानि॥
ढिंग स्याम कमला लछ्छि। उप्पंम गुन कवि अछ्छि॥ ३१२॥
तरु स्याम तेज तमाल। चढि हेम वेलि विसाल॥
सिर मोर मुकट जु स्याम। नचि मोर गिरवर ताम॥ ३१३॥
झलकंत कुंडल कान। कवि कहै उप्पम वान॥
बर अरक सोम प्रमान। सित पुन्निमा निस धान॥ ३१४॥
घन सघन सज्जल ताम। उठि इन्द्र चाप सु काम॥
बर बजति मुरलिय मुष्य। संसार हरति सु दुष्य॥ ३१५॥
इक पाइ तप कर न्याइ। हरि धरै अधर सु धाइ॥
हरि लियै अंकुस वज्ज। कविराज उप्पम सज्ज॥ ३१६॥

हरनछि। तलपत। पत। पन। त्रमु। जमु। सैव। कात्यायनीय। करहिं। गरूय गरूअ। गरुय-पहुपें। घनीय॥

८९ पाठान्तरः—छंद हनूफाल। मुह। कहु। देवाधिदेव। सुनन्ह। अति सीस। पहुंप। वनि। पीत। घन। माध। तेज। कैंज। उपम। देषि कसौटीय। रेषि। त्रुरसी। तुरसी। घन पंत। सुक। सौच। बांनि। अमृत। सुमृत। जानि। स्यांम। लछि। उपंम। आछि। अछ। श्यांम। स्यांम। तेज। माल।। हेम वेलि। मोरं। मुकठ। मुगट। यु। स्यांम। सु स्यांम। नवि। तांन। कांन। कहि कहै। बांन। वांन। सौम। प्रमांन। पुरनिमा। धाम। धांन। सजल। तांम। इद्र। कांम। चर। वजति। मुरली। मुष। सु दुषुं। स दुषु। पाय। करै। न्यांय। लियें। अंकुस। वज्ज। कविराय। औपम। सज। वर। भुक्त। मत। करीय। हद्दक पाट।

बर भंक्र मत्त करीव । तिन हटक पार नरीव ॥
यौं पाइ धरि इहि भंति । ससि बीय बनि परि कंति ॥ ३१७ ॥
हरि चरन कमल सु कोर । जनु मिलन कुमुदिन भोर ॥
नष न्रमल कमल सु कंति । जनु उग्गि तार कपंति ॥ ३१८ ॥
नटवत्त भेष भिभंग । दुति कोट करत अनंग ॥
मुष कमल दधिकन स्याम । नभ फुल्लि मालति काम ॥ २१९ ॥
सो इकंत अप्पहि मात । अधमान न्रिंमल गात ॥
छं० ॥ ३२० ॥ रू० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ च्यार घटी निसि सुन्दरी । प्रान पपत्ते थान ॥
जल अंदोलित सो भई । उदै होन बर भान ॥छं०॥३२१॥रू०॥९०॥
कंस मेर चढि सोम बहु । सकल हरत रवि पुब्ब ॥
हंस माल भंजन सकल । सज्यौ चंद मनु सब्ब ॥छं०॥३२२॥रू०॥९१॥

चौपाई ॥ गावति बिरति अचारे बालं । हेम मंत कष्टं तन सालं ॥
उरमा निसि रविनी रस जामं । हरि निरदोष निहारत कामं ॥
छं० ॥ ३२३ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

दूहा ॥ इंद उदंत सरद उद । मुद आनन्द अनंद ॥
नंदन नंद सु वृंद ब्रज । विहसिय चंद सु चंद ॥छं०॥३२४॥रू०॥९३॥
नव रवनी सस्वर सु नित । स्तुति श्रुति रचि रुचि भेद ॥
निरष निमेष विसेष विधि । असम सरन मन * षेद ॥
छं० ॥ ३२५ ॥ रू० ॥ ९४ ॥

मरीय । हटक पाट । यों । पाय । ससीं । कौर । जुनु । मिलित । कुंमदत । भौंर । भोंर । नप । निमल । नूंमल । उगिं । कंपंति । नट्टवत । भैष । दुति । कौर । कटित अनंग । स्यांम । फुलिं । फूलि । मालनि । कांम । सौ । अपहि । अधमांन । न्रिमल ॥

९० पाठान्तरः—दुहा । च्यारि । संदरी । प्रांन । पयंतै । पयते । थांन । अदोलित । सौ । भइ । हौत । वर । भांन ॥

९१ पाठान्तरः—मैर । सौम । पुबं । भजंन । वंद । मनौं । मनौं । सब । सबस ॥

९२ पाठान्तरः—छंद अरिलं । अरिल्ल । विरति । अवरि । वालं । हैमवंत । हेनवंत । उरमां । रिविनी । जांम । दैषि । नहारानि । निहारति । काम ॥

९३ पाठान्तरः—ईद । इदं । सरद । मुंद । अनद । वृद । व्रजं । वृज । वंलिय ॥

९४ पाठान्तरः—स्तुति सुति रुचि भैद । स्तुति स्तुति रचि रचि भेद । निरषिं । निंमैष । विसैष । विशेष । वुधि । ❋ बूंदीवाली में मन शब्द नहीं है । पैद ॥